नित्य पूजा

परिवर्धित संस्करण

[दैनिक एवं पर्व के दिनों में करने योग्य
सभी पूजाओं का संग्रह]

प्रकाशक—

वीर पुस्तक भण्डार

श्री वीर प्रेस, जयपुर

भाद्रपद
२४९०

द्वितीय संस्करण

मूल्य
एक सौ तीस
पैसा

विषय-सूची

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

卐 नित्य पूजा 卐

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नम सिद्धेभ्यः

पणविवि पञ्चपरमगुरु गुरु जिन शासनो
सकल सिद्धि दातार सु विघन विनाशनो।
शारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो,
मङ्गल कर चउ सङ्घहि पाप पणासनो।

पापहि पणासन गुणहि गरुआ, दोष अष्टादश-रहिउ।
धरि ध्यान कर्म विनाशि केवल-ज्ञान अविचल जिन लहिउ।
प्रभु पञ्चकल्याणक विराजित सकल सुर-नर ध्यावहीं।
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर जगत मङ्गल गावहीं।
उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिनगृहे पञ्चकल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवान के गर्भ जन्म तप ज्ञान निर्वाण पञ्च कल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमोलोये सव्वासाहूणं ॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना) चत्तारि मङ्गलं—अरिहंता मङ्गलं, सिद्धा मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवलि पण्णत्तो, धम्मो मङ्गलं। चत्तारि-लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि। साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥ ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।

(यहां पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा। (६)
ध्यायेत्पञ्च नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ १॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा। (७)
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥ २॥

अपराजित मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनं। (८)
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलं मतः॥ ३॥

एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो। (९)
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मङ्गलं॥ ४॥

अर्हमित्यक्षरं-ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः। (१०)
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ ५॥

कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी-निकेतनं। (११)
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं॥ ६॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

[यदि अवकाश हो, तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ाना चाहिये]

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमङ्गलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ स्वस्ति मङ्गल ॥

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद नायकमनंत-चतुष्टयार्हं। श्री मूलसङ्घसुदृशां सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्रयज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥९॥ स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय। स्वस्ति प्रकाशसहजो-र्ज्जितदृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुतवैभवाय ॥१०॥ स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोधसुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभाव-परभाव विभासकाय, स्वस्ति त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायतविस्तृताय ।११। द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः। आलंबनानि विविधान्य-वलंब्यवल्गन्, भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥१२॥ अर्ह-त्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेकएव।

अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ, पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥१३॥

ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

(१८) श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः ।
श्रीसंभव स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः ।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभ ।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः ।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः ।
श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः ।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्ति ।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः ।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रत ।
श्रीनमि स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः ।

(इति पुष्पाञ्जलि क्षेपण)

इतिजिनेन्द्र मङ्गल स्वस्ति विधानं ।

नित्याप्रकम्पाद्भुत केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥१॥

(यहां से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥२॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनघ्राणविलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥३॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥४॥
जंघावलिश्रेणिफलांबुतंतु – प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः ।
नभोंऽगणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥५॥
अणिम्नि दक्षाः कुशलामहिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि,
मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥६॥
सकामरूपित्ववशित्वमैश्य प्राकाम्यमंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥७॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥८॥
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषंविषा दृष्टिविषंविषाश्च ।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः ।
अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥१०॥

(इति पुष्पाञ्जलिं) [इति परम-ऋषि स्वस्ति मङ्गल विधानं]

देव शास्त्र गुरु की भाषा पूजा

॥ अडिल्ल छन्द ॥

प्रथम देव अरिहंत सुश्रुत सिद्धांतजू ।
गुरु निर्ग्रन्थ महंत मुकतिपुर पंथजू ॥
तीन रतन जगमांहि सो ये भवि ध्याइये ।
तिनकी भक्ति प्रसाद परम पद पाइये ॥१॥

दोहा—पूजौ पद अरिहंत के, पूजो गुरुपदसार।
पूजौं देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्रावतरावतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

॥ गीता छन्द ॥

सुरपति उरगनरनाथ तिनकर, वंदनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवर्ण उज्ज्वल, देखि छवि मोहित सभा॥
वर नीर क्षीरसमुद्र घट भरि अग्र तसु बहुविधि नचूं।
अरिहंत श्रुतसिद्धांत गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूं॥१॥

दोहा—मलिन वस्तु हर लेत सब, जल स्वभाव मलछीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥१॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं॰

जे त्रिजग उदर मँझार प्राणी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे॥
तसु भ्रमर लोभित घ्राण पावन, सरस चंदन घसि सचूं। अरि॰

दोहा—चन्दन शीतलता करे, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥२॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व॰

यह भवसमुद्र अपार तारण-के निमित्त सु विधि ठई।
अति दृढ परमपावन जथारथ भक्ति वर नौका सही॥
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल पुञ्ज धरि त्रयगुण जचूं। अरि॰

दोहा—तंदुल सालि सुगंध अति, परम अखण्डित बीन।
जासों पूजौ परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥३॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

जे विनयवंत सुभव्य उर अंबुज प्रकाशन भान हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषित त्रिजगमांहि प्रधान हैं॥
लहि कुंद कमलादिक पहुप भव भव कुवेदन सों बचूं ॥अरि०॥

दोहा—विविध भांति परिमलसुमन, भ्रमर जासु आधीन।
जासों पूजौ परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥४॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व०

अति सबल मदकंदर्प जाको क्षुधाउरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सु गरुड़ समान है।
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेद्यकरि घृत में पचूं ॥अरि०॥

दोहा—नानाविधि संयुक्तरस, व्यञ्जन सरस नवीन।
जासों पूजौ परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥५॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

जे त्रिजगउद्यम नाश कीने, मोहतिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप प्रकाश ज्योति प्रभावली॥
इह भांति दीप प्रजाल कञ्चनके सुभाजन में खचूं ॥ अरि०

दोहा—स्वपरप्रकाशक ज्योति अति दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजौ परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥६॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य. मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

जो कर्म-ईंधन दहन अग्नि समूह सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधताकरि, सकल परिमलता हँसै॥
इहि भांति धूप चढ़ाय नित भवज्वलन माहीं नहिं पचूं ॥अरि०॥
दोहा—अग्नि मांहि परिमलदहन, चंदनादि गुणलीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥७॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा
लोचन सु रसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं॥
सो फल चढावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूं ॥अरि०॥
दोहा—जे प्रधान फल फलविषै, पञ्चकरण रस लीन।
जासों पूजौं परमपद. देव शास्त्र गुरु तीन॥८॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य. मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं।
वर धूप निरमल फल विविध बहु, जन्म के पातक हरूं॥
इह भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिवपंकति मचूं।अरि०।
दोहा—वसुविधि अर्घ संजोयके, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजौं परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन॥९॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

॥ अथ जयमाला ॥

देव शास्त्र गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न भिन्न कहुं आरती, अल्प सुगुण विस्तार॥

॥ पद्धरि छन्द ॥

कर्मनकी त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुण गंभीर।२॥

शुभ समवसरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर शीस धार।
देवाधिदेव अरिहंत देव, वन्दौ मन-वच-तन करि सुसेव ॥३॥
जिनकी धुनि ह्वै ओंकार रूप, निर अक्षरमय महिमा अनूप।
दश अष्ट महाभाषा समेत, लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥४॥
सो स्याद्वादमय सप्त भङ्ग, गणधर गूथे बारह सु-अङ्ग।
रवि शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय ॥५॥
गुरु आचारज उवझाय साध, तन नगन रतनत्रयनिधि अगाध।
ससार देह वैराग्य धार, निरवांछि तपै शिवपद निहार ॥६॥
गुण छत्तिस पच्चिस आठ बीस, भवतारन तरन जहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरु नाम जपों मनवचन काय ॥७॥

सोरठा—कीजै शक्ति प्रमान, शक्ति बिना श्रद्धा धरै।
'द्यानत' श्रद्धावान, अजर अमरपद भोगवे ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्य जयमाला पूर्णार्घ्यं महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

[सूचना—आगे जिस भाई को निराकुलता हो, वह नीचे लिखे अनुसार बीस तीर्थङ्करों की भाषा पूजा करे। यदि स्थिरता न हो तो इस पूजा के आगे जो अर्घ लिखा है, उसको पढ़कर अर्घ चढा देवे।]

श्री बीस तीर्थङ्करपूजा भाषा

दीप अढ़ाई मेरु पन, अरु तीर्थङ्कर बीस।
तिन सबकी पूजा करूं, मनवचतन धरि शीस ॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करा। अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करा। अत्र तिष्ठत तिष्ठत। ठ ठ।
ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करा। अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट।

इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र वंद्य, पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी॥
क्षीरोदधि सम नीरसों (हो), पूजों तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।
श्री जिनराज हो भव, तारणतरण जिहाज॥१॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं०
(इस पूजा मे बीस पुञ्ज करना हो, तो इस प्रकार मंत्र बोलना)

ॐ ह्रीं सीमंधर—युगमंधर—बाहु—सुबाहु—संजातक—स्वयंप्रभ—ऋषभानन—अनंतवीर्य—सूरीप्रभ—विशालकीर्ति—वज्रधर—चंद्रानन—भद्रबाहु—भुजङ्गम—ईश्वर—नेमिप्रभ—वीरसेन—महाभद्र—देवयशोऽजित वीर्येति विंशतिविद्यमान तीर्थङ्करेभ्य. जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं०

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये।
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये॥
बावन चंदन सों जजूं (हो) भ्रमन-तपन निरवार। सीमंधर।२।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

यह संसार अपार, महासागर जिनस्वामी।
तातैं तारे बड़ी, भक्ति-नौका जगनामी॥
तंदुल अमल सुगंधसों (हो) पूजों तुम गुणसार॥ सीमंधर।३।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान०

भविक-सरोज-विकाश, निंद्य-तम-हर रवि से हो।
यति श्रावक आचार, कथन को तुम ही बड़े हो॥
फूलसुवास अनेकसों (हो) पूजों मदन प्रहार।सीमंधर।४।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि०

काम नाग विषधाम, नाश को गरुड़ कहे हो।
क्षुधा महादवज्वाल, तास को मेघ लहे हो॥
नेवज बहुघृत मिष्टसों (हो), पूजौं भूखविडार। सीमधर।५।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

उद्यम होन न देत, सर्व जगमाहिं भर्यो है।
मोह महातम घोर, नाश परकाश कर्यो है॥
पूजों दीप प्रकाशसों, (हो) ज्ञानज्योति करतार। सीमंधर।६।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य मोहांधकारविनाशनाय दीपं०।

कर्म आठ सब काठ—भार विस्तार निहारा।
ध्यान अगनि कर प्रकट, सर्व कीनो निरवारा॥
धूप अनूपम खेवतैं (हो), दुःखजलैं निरधार॥सीमंधर।७।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं०।

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं।
सबको छिनमें जीत, जैन के मेरु खरे हैं॥
फल अति उत्तमसों जजों (हो), वांछित फल दातार। सीमंधर।८।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्य मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०।

जल फल आठों द्रव्य, अर्घकर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रनिहू तैं, थुति पूरी न करी है॥
'द्यानत' सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार। सीमंधर।९।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि०।

॥ अथ जयमाला ॥

सोरठा—ज्ञान सुधाकर चन्द, भविकखेतहित मेघ हो।
भ्रमतमभान अमन्द, तीर्थङ्कर वीसों नमों॥

॥ चौपाई १६ मात्रा ॥

सीमन्धर सीमन्धर स्वामी, जुगमन्धर जुगमन्धर नामी।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे, करम सुबाहु बाहुबल दारे॥१॥
जात सुजातं केवल-ज्ञानं, स्वयंप्रभु प्रभु स्वयं प्रधानं।
ऋषभानन ऋषिभानन-दोषं, अनन्त वीरज वीरज कोष॥२॥
सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सगुण विशाल विशाल दयालं।
वज्रधार भव-गिरिवज्जर हैं, चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं॥३॥
भद्रबाहु भद्रनिके करता, श्रीभुजङ्ग भुजङ्गम हरता।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभ जस नेमि विराजैं॥४॥
वीरसेन वीरं जग जानैं, महाभद्र महाभद्र वखानैं।
नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजित वीरज वलधारी॥५॥
धनुष पांचसौ काय विराजै, आयु कोटिपूरव सब छाजैं।
समवसरण शोभित जिनराजा, भव-जलतारनतरन जिहाजा॥६॥
सम्यक रत्नत्रयनिधिदानी, लोकालोक-प्रकाशक ज्ञानी।
शतइन्द्रनिकरि वंदित सोहैं सुरनर पशु सबके मन मोहैं॥७॥

दोहा—तुमको पूजैं वन्दना, करे धन्य नर सोय।
'द्यानत' श्रद्धा मन धरै, सो भी धर्मी होय॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंङ्करेभ्योजयमाला पूर्णार्घ्यं नि०

तीस चोबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर मे नवीना है।
पूजता पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है॥

दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै।
सात शत बीस जिन राजै, पूजता पाप सब भाजै॥
ॐ ह्रीं पाच भरत पांच ऐरावत दश क्षेत्र विषै तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः
धवल-मङ्गल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनराजमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर-युग्मंधर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनन्तवीर्य-सूर्यप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-भद्रबाहु-भुजङ्गम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयशो अजितवीर्येति विंशतिविद्यमान-तीर्थङ्करेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृत्रिम व अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्घ

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान् नित्यं त्रिलोकीगतान्।
वन्दे भावनव्यंतरान् द्युतिवरान् स्वर्गामरावासगान्॥
सद्गन्धाक्षत-पुष्पदाम-चरुकैः, सद्दीप-धूपैः फलैः।
द्रव्यैर्नीरमुखैर्यजामि सततं दुष्कर्मणां शांतये॥१॥
ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसंबधिजिनबिंबेभ्योऽर्घ्यं निर्व०

वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नन्दीश्वरे यानि च मंदरेषु।
यावंति चैत्यायतनानि लोके, सर्वाणि वंदे जिनपुङ्गवानां॥२॥
अवनि-तल-गतानां कृत्रिमाकृत्रिमाणां,
वन-भवन-गतानां दिव्य-वैमानिकानाम्।
इह मनुज-कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवर-निलयानां भावतोऽहं स्मरामि॥३॥

जंबू-धातकि-पुष्करार्द्ध-वसुधा-क्षेत्र-त्रये ये भवाश्-
चंद्रांभोज-शिखंडि-कंठ-कनक-प्रावृड्-घनाभा-जिनाः।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-लक्षण-धरा दग्धाष्ट-कर्मेन्धना,
भूतानागत-वर्तमान-समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥४॥
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-रुचिके कुण्डले मानुषांके।
इष्वाकारेऽजनाद्रौ दधिमुख-शिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके,
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवन-महितले यानि चैत्यालयानि ॥५॥
द्वौ कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवलौ द्वाविंद्र-नीलप्रभौ।
द्वौ बंधूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ च प्रियंगुप्रभौ।
शेषाः षोडष-जन्ममृत्युरहिताः संतप्त-हेम-प्रभाः,
ते संज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः ॥६॥

ॐ ह्रीं त्रिलोक संबंधि-कृत्रिम-अकृत्रिमचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्व०

इच्छामि भंते चेइयभत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेओ। अहलोय—तिरियलोय—उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिण-चेइयाणि ताणि सव्वाणि, तीसु वि लोयेसु भवणवासिय-वाण-विंतर-जोयसिय-कप्पवासिय त्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धुव्वेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ह्राणेण णिच्चकालं अच्चंति पुज्जंति वंदंति णम-स्संति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वदामि णमस्सामि। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं॥

(इत्याशीर्वादः। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ पौर्वाह्निक[1]-देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं द्रव्यपूजावंदनास्तवसमेतं श्रीचैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।
तावकायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।

[इसके अनन्तर नो बार णमोकार मंत्र का जाप्य करना चाहिये]

॥ अथ सिद्धपूजा द्रव्याष्टक ॥

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदु सपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं ।
वर्गापूरित-दिग्गतांबुज-दलं तत्संधि-तत्त्वान्वितं ॥
अंतःपत्र-तटेष्वनाहतयुतं ह्रींकार-संवेष्टितं ।
देवं ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभ-कंठीरवः ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ २ ठ ठ । ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्रमम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

निरस्त-कर्म-संबंधं, सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वंदेऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥१॥ [पुष्पाञ्जलि]

जिन त्यागियों को बिना द्रव्य चढ़ाये भावों के द्रव्यों से ही पूजा करना हो, वे आगे के भावाष्टक को बोलकर करें । अष्टद्रव्य से पूजा करने वालों को भावपूजा का अष्टक कदापि नहीं बोलना चाहिये ।

[1]नोट—अगर दोपहर को पूजन करें तो पौर्वाह्निक के स्थान पर माध्याह्निक और सायङ्काल करें तो आपराह्निक बोलना चाहिये ।

द्रव्याष्टक।

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्म्यगम्यं, हीनादि-भाव-रहितं भव-वीत-कायं। रेवापगा-वर-सरो-यमुनोद्भवानां नीरैर्यजे कलशगैर्वर-सिद्धचक्रं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमे० जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

आनंद-कंद-जनकं घन-कर्म-मुक्तं, सम्यक्त्व-शर्म-गरिमं जननार्ति-वीतं। सौरभ्य-वासित-भुवं हरि-चंदनानां, गंधैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमे० संसारतापविनाशनाय चदनं०

सर्वावगाहन-गुणं सुसमाधि-निष्ठं, सिद्धं स्वरूप-निपुणं कमलं विशालं। सौगंध्य-शालि-वनशालि-वराक्षतानां, पुंजैर्यजे शशि-निभैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं०

नित्यं स्वदेह-परिमाणमनादि-संज्ञं, द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम्। मंदार-कुन्द-कमलादि-वनस्पतीनां, पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

ऊर्ध्व-स्वभाव-गमनं सुमनोव्यपेतं, ब्रह्मादि-बीज-सहितं गगानवभासम्। क्षीरान्न-साज्य-वटकै रस-पूर्ण-गर्भै-र्नित्यं यजे चरुवरैर्वर-सिद्धचक्रम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुद्रोगविध्वंशनाय नैवेद्यं०

आतंक-शोक-भय-रोग-मद-प्रशांतं,-निर्द्वंद्व-भाव-धरणं महिमा-निवेशं । कर्पूर-वर्ति-बहुभिः कनकावदातै-र्दीपैर्यजे रुचि-वरैर्वर- सिद्ध-चक्रम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं

पश्यन्समस्त-भुवनं युगपन्नितांतं, त्रैकाल्य-वस्तु-विषये निविड-प्रदीपम् । सद्द्रव्य-गंध-घनसार-विमिश्रितानां, धूपैर्यजे परिमलैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं०

सिद्धासुरादिपति-यक्ष-नरेंद्र-चक्रैर्ध्येयं शिवं सकल-भव्य-जनैः सुवंद्यं । नारिंग-पूग-कदलीफल-नारिकेलैः, सोऽहं यजे वर-फलैर्वर-सिद्ध-चक्रम् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्ताय फलं०

गंधाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः संगं वरं चंदनं ।
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं चरुं दीपकं ॥
धूपं गंधयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये ।
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वांछितं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

ज्ञानोपयोग-विमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्म-स्वभाव-परमं यदनं-तवीर्यं । कर्मौघ-कक्ष-दहनं सुख-शस्य-बीजं वंदे सदा निरुपमं वर-सिद्ध-चक्रम् ।

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

त्रैलोक्येश्वर-वंदनीय-चरणाः प्रापुः श्रियं शाश्वतीं ।
यानाराध्य निरुद्ध-चंड-मनसः संतोऽपि तीर्थंकराः ॥
सत्सम्यक्त्व-विबोध-वीर्य-विशदाऽव्याबाधताद्यैर्गुणैः—
युक्तांस्तानिह तोष्टवीमि सततं सिद्धान् विशुद्धोदयान् ॥

(पुष्पांजलिं)

अथ जयमाला ।

विराग सनातन शांत निरंश, निरामय निर्भय निर्मल हंस ।
सुधाम विबोध-निधान विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १ ॥
विदूरित-संसृतिभाव निरंग, समामृतपूरित देव विसंग ।
अबंधकषाय विहीनविमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ २ ॥
निवारितदुष्कृतकर्मविपाश, सदामल केवलकेलिनिवास ।
भवोदधिपारक शान्त विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ३ ॥
अनंतसुखामृतसागर धीर, कलंक रजोमल भूरि समीर ।
विखंडितकाम विराम विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ४ ॥
विकारविवर्जित तर्जितशोक, विबोध-सुनेत्र-विलोकित-लोक ।
विहार विराव विरंग विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ५ ॥
रजोमलखेदविमुक्त विगात्र, निरंतर नित्य सुखामृतपात्र ।
सुदर्शनराजित नाथ विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ६ ॥
नरामरवंदित निर्मल भाव, अनंत मुनीश्वरपूज्य विहाव ।
सदोदय विश्वमहेश विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ७ ॥
विदंभ वितृष्ण विदोष विनिद्र, परापरशंकरसार वितंद्र ।
विकोप विरूप विशंक विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ८ ॥
जरामरणोज्झित वीतविहार, विचिंतित निर्मल निरहंकार ।
अचिंत्यचरित्र विदर्प विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ ९ ॥

विवर्ण विगंध विमान विलोभ, विमाय विकाय विशब्द विशोभ ।
अनाकुल केवल सर्व विमोह, प्रसीद विशुद्ध सुसिद्धसमूह ॥ १० ॥

घत्ता—

असम-समयसारं चारुचैतन्यचिह्नं, पर-परणति-मुक्तं पद्मनंदींद्र-वंद्यं ।
निखिल-गुण-निकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धं, स्मरति नमति यो वा स्तौति सोऽभ्येति मुक्तिम् ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घ्यं ।

अथाशीर्वाद— —अडिल्लछन्द ।

अविनाशी अविकार परम-रस-धाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो ।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो,
जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो ॥ १ ॥
ध्यान अगनिकर कर्म कलंक सबै दहे,
नित्य निरंजनदेव सरूपी ह्वै रहे ।
ज्ञायक ज्ञेयाकार ममत्व निवारिकैं,
सो परमातम सिद्ध नमौं सिर नायकै ॥ २ ॥

दोहा—अविचल-ज्ञान-प्रकाशतैं, गुण अनंत की खान ।
ध्यान धरै सो पाइये, परम सिद्ध भगवान ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाजलिं ।

सिद्ध पूजा का भावाष्टक

निज-मनो-मणि-भाजन-भारया, सम-रसैक-सुधा-रस-धारया ।
सकल-बोध-कला-रमणीयकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥
सहज-कर्म-कलंक-विनाशनैरमल-भाव-सुवासित-चन्दनैः ।
अनुपमान-गुणावलि-नायकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥

सहज-भाव-सुनिर्मल-तंदुलैः, सकल-दोष-विशाल-विशोधनैः ।
अनुपरोध-सुबोध-निधानकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥
समयसार-सुपुष्प-सुमालया, सहज-कर्मकरेण विशोधया ।
परम-योग-बलेन-वशीकृतं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥
अकृत-बोध-सुदिव्य-निवेद्यकैर्विहित-जन्म-जरा-मरणांतकैः ।
निरवधि-प्रचुरात्म-गुणालयं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥
सहज-रत्न-रुचि-प्रतिदीपकैः, रुचि-विभूति-तमः-प्रविनाशनैः ।
निरवधि-स्वविकास-प्रकाशनः, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥
निज-गुणाक्षय-रूप-सुधूपनैः, स्वगुण-घाति-मल-प्रविनाशनैः ।
विशद-बोध-सुदीर्घ-सुखात्मकं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥
परम-भाव-फलावलि-सम्पदा, सहज-भाव-कुभाव-विशोधया ।
निज-गुणास्फुरणात्म-निरंजनं, सहज-सिद्धमहं परिपूजये ॥
नेत्रोन्मीलि-विकास-भाव-निवहैरत्यन्त-बोधाय वै ।
वार्गंधाक्षत-पुष्प-दाम-चरुकैः सद्दीप-धूपैः फलैः ॥
यश्चिंतामणि-शुद्ध-भाव-परमं ज्ञानात्मकैरर्चयेत् ।
सिद्धं स्वादुमगाध-बोधमचलं संचर्चयामो वयं ॥ ६ ॥

सिद्धचक्र पूजा

अडिल्ल छन्द

अष्टकरमकरि नष्ट अष्ट गुण पायकैं ।
अष्टमवसुधा माहिं विराजे जायकैं ।

ऐसे सिद्ध अनन्त महन्त मनायकैं ॥
संवौषट् आह्वान करूं हरषायकै ॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्र अवतर, अवतर, संवौषट् ।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ. ठः ।
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट

छन्द त्रिभंगी

हिमवनगतगंगा आदि अभंगा, तीर्थ उतंगा सरवंगा ।
आनिय सुरसंगा सलिल सुरंगा, करि मन चंगा भरि भृंगा ॥
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अन्तरजामी अभिरामी ।
शिवपुरविश्रामी निजनिधि पामी, सिद्धजजामी सिरनामी ॥

ॐ ह्रीं श्री अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

हरिचन्दन लायो कर्पूर मिलायो, बहु महकायो मनभायो ।
जलसंग घसायो रंगसुहायो, चरन चढायो हरषायो । त्रि.॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल उजियारे शशिदुतिहारे, कोमल प्यारे अनियारे ।
तुषखंडनिकारे जलसु पखारे, पुंज तुम्हारे ढिग धारे । त्रि.॥३॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुरतरु की बारी, प्रीतिविहारी, किरिया प्यारी गुलजारी ।
भरि कञ्चन थारी फूलसँवारी, तुम पद ढारी अतिसारी । त्रि.।४।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

पकवान निवाजे, स्वाद विराजे, अमृत लाजे, क्षुत भाजे।
बहु मोदक छाजे, घेवर खाजे, पूजन काजे करि ताजे। त्रि. ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

आपापरभासै ज्ञान प्रकाशै, चित्तविकासै तम नासै।
ऐसे विध खासे दीपउजासे, धरि तुम पासे उल्लासे। त्रि. ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

चुम्बक अलिमाला गन्धविशाला, चन्दनकाला गुरु वाला।
तस चूर्ण रसाला करि ततकाला अग्निज्वाला में डाला। त्रि.।७।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल अतिभारा, पिस्ता प्यारा, दाख छुहारा सहकारा।
ऋतु ऋतुका न्यारा सत्फलसारा, अपरम्पारा, ले धारा। त्रि.।८।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल वसुवृन्दा अरघ अमन्दा, जजत अनन्दा के कंदा।
मेटो भवफन्दा, सबदुखदन्दा, 'हीराचन्दा' तुव वन्दा। त्रि.।९।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला

दोहा—ध्यानदहनविधिदारुदहि, पायो पद निरवान।
पंचभावजुतथिर थये, नमों सिद्ध भगवान॥

—:त्रोटकछन्दः:—

सुख सम्यक्दर्शन ज्ञान लहा, अगुरु-लघु सूक्षमवीर्य महा।
अवगाह अबाध अघायक हो, सब सिद्ध नमों सुखदायक हो।।१।।

असुरेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रजजै, भुवनेन्द्र खगेन्द्र गणेन्द्र भजैं।
जर जामन मरण मिटायक हो, सब० ॥३॥
अमलं अचलं अकलं अकुलं, अछलं असलं अरलं अतुलं।
अरलं सरलं शिवनायक हो, सब० ॥४॥
अजरं अमरं अधर सुधरं, अडरं अहरं अमरं अधरं।
अपरं असरं सब लायक हो, सब० ॥५॥
वृषवृंद अमंद न निंद लहैं, निरदंद अफंद सुछंद रहैं।
नित आनँदवृंद विधायक हो, सब० ॥६॥
भगवंत सुसंत अनंत गुणी, जयवंत महंत नमंत मुनि।
जगजंतु तणो अघघायक हो, सब० ॥७॥
अकलंक अटंक शुभंकर हो, निरडन्क निशंक शिवंकर हो।
अभयंकर शंकर त्तायक हो, सब० ॥८॥
अतरंग अरंग असंग सदा, भवभंग अभंग उतंग सदा।
सरवंग अनंग नसायक हो, सब० ॥९॥
ब्रह्मण्ड जु मन्डलमन्डन हो, तिहुँदंडप्रचन्ड विहन्डन हो।
चिद पिंड अखण्ड अकायक हो, सब० ॥१०॥
निरभोग सुभोग वियोग हरे, निरजोग अरोग अशोग धरे।
भ्रमभंजन तीक्षण सायक हो, सब० ॥११॥
जय लक्ष्य अलक्ष्य सुलक्ष्यक हो, जय दक्षक पक्षक रक्षकहो।
पण अक्ष प्रत्यक्ष खपायक हो, सब० ॥१२॥
निरभेद अखेद अछेद सही, निरवेद अवेदन वेद नहीं।
सबलोक अलोकहि ज्ञायक हो, सब० ॥१३॥
अमलीन अदीन अरीन हने, निजलीन अधीन अछीन बने।
जमको घनघात बचायक हो, सब० ॥१४॥
न अहार निहार विहार करै, अविकार अपार उदार सरै।
जगजीवन के मन भायक हो, सब० ॥१५॥

अप्रमाद अमाद सुस्वादरता, उनमाद विवाद विषादहता।
समता रमता अकषायक हो, सब० ॥१६॥
असमंध अधंद अरन्ध भये, निरबन्ध अखन्ध अगन्ध ठये।
अमनं अतनं निरवायक हो, सब० ॥१७॥
निरवर्ण अकर्ण उधर्ण बली, दुखहर्ण अशर्ण सुकर्ण भली।
बलि मोहकी फौज भगायकहो, सब० ॥१८॥
अविरुद्ध अक्रुद्ध अजुद्ध प्रभू, अति शुद्ध प्रशुद्ध समृद्ध विभू।
परमातम पूरन पावक हो, सब० ॥१९॥
विरूप चिद्रूप स्वरूप द्युती, जसकूप अनूपम भूप सुती।
कृतकृत्य जगत्त्रयनायकहो, सब० ॥२०॥
सब इष्ट अभीष्ट विशिष्ट हितू, उतकिष्ट वरिष्ट गरिष्ट मितू।
शिवतिष्ठत सर्व सहायक हो, सब० ॥२१॥
जय श्रीश्वर श्रीधर श्रीवर हो, जय श्रीकर श्रीभर श्रीझर हो।
जय रिद्धि सुसिद्धि-बढायक हो, सब० ॥२२॥

दोहा:—सिद्धसुगुण को कहि सकै, ज्यों विलस्त नभ मान।
'हिराचन्द' तातैं जजैं, करहु सकल कल्यान ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्रीअनाहतपराक्रमाय सकलकर्मविनिर्मुक्ताय सिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
(यहां पर विसर्जन भी करना चाहिये)

अडिल्ल—सिद्ध जजैं तिनको नहिं आवै आपदा।
पुत्र पौत्र धन धान्य लहैं सुख सम्पदा॥
इन्द्र चन्द्र धर्णेन्द्र नरेन्द्र जु होयकैं।
जावैं मुक्तिमझार करम सब खोयकैं॥२४॥
(इत्याशीर्वादाय पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

समुच्चय चौबीसी पूजा

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय।
चन्द पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजितसुरराय ॥
विमल अनन्त धर्मजस उज्ज्वल, शान्ति-कुंथुअर मल्लिमनाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वद्धमान पद पुष्प चढाय ॥१॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादि-महावीरांत-चतुर्विंशति-जिन-समूह । अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं।

ओं ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांत-चतुर्विंशति-जिन-समूह । अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठ ठ, स्थापनं।

ओं ह्रीं श्री वृषभादि-महावीरांत-चतुर्विंशति-जिन-समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट्, सन्निधिकरणम्।

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा।
भरि कनक कटोरी धीर दीनी धार धरा ॥
चौबीसों श्रीजिनचन्द, आनंदकंद सही।
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादि-वीरांतेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंगभरी।
जिनचरनन देत चढाय, भवआताप हरी ॥चौबीसों ।चंदनं॥
तंदुल सित सोमसमान, सुन्दर अनियारे।
मुक्ताफलकी उनमान, पुंज धरों प्यारे ॥ चौ० ।अक्षतं ॥
वरकंज कदंव कुरंड, सुमन सुगंध भरे।
जिन अग्रधरों गुनमंड, कामकलंक हरे ॥ चौ० ।पुष्पं० ॥

मनमोहनमोदक आदि, सुन्दर सद्य बने ।
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥ चौ० । नैवेद्यं ॥
तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे ।
सब तिमिर मोह क्षयजाय, ज्ञानकला जागे ॥ चौ० । दीपं० ॥
दशगंध हुताशनमांहि, हे प्रभु खेवत हों ।
मिस धूम करम जरि जाहिं, तुमपद सेवत हों ॥ चौ० धूपं० ॥
शुचि पक्व सुरस फल सार, सब ऋतु के ल्यायो ।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायो ॥ चौ० । फलं० ॥
जलफल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥ चौ० अर्घ्यं ॥

जयमाला ।

दोहा—श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हित हेत ।
गाऊं गुणमाला अबै, अजर अमरपद देत ॥ १ ॥

घत्ता—

जय भवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा ।
शिवमगपरकाशक अरिगन नाशक, चौबीसों जिनराज वरा ॥२॥

पद्धरि छन्द

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीत वसु-अरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर ॥ ३ ॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल, जय पद्म पद्म द्युतितन रसाल ।
जय जय सुपास भवपासनाश, जय चंद चंद तनद्युतिप्रकाश ॥ ४ ॥
जय पुष्पदंत द्युतिदंत सेत, जय शीतल शीतलगुण निकेत ।
जय श्रेयनाथ नुतसहसभुक्ख, जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥ ५ ॥

जय विमल विमलपद देनहार, जय जय अनंत गुनगन्न अपार ॥
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत, जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥ ६ ॥
जय कुंथ कुंथवादिक रखेय, जय अर जिन वसु अरि क्षय करेय ॥
जय मल्लि मल्ल हत मोहमल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रतशल्ल दल्ल ॥ ७ ॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम, जय नेमनाथ वृषचक्र नेम ॥
जय पारसनाथ अनाथनाथ, जय वर्द्धमान शिवनगर साथ ॥ ८ ॥

चौबीस जिनंदा आनंदकंदा पापनिकंदा, सुखकारी ।
तिनपदजुगचंदा, उदय अमंदा वासव वंदा, हित धारी ॥९॥

ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा—**भुक्ति मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराज वर ।**
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥

(इत्याशीर्वाद । पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

सिद्ध पूजा

(द्यानतराय विरचित)

परम ब्रह्म परमात्मा, परम ज्योति परमीश ।
परम निरंजन परम शिव, नमों सिद्ध जगदीश ॥१॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् । अत्रावतरावतर संवौषट , आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ, स्थापनं । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् , सन्निधिकरणं ॥

निरस्त-कर्म-सम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्त्तिमनुपद्रवम् ॥ यंत्र-स्थापनं ॥

अथाष्टकं

सोरठा—मोहि तृषा दुःख देहि, सो तुमने जीती प्रभू ।
जलसों पूजों नेह, मेरो रोग मिटाइयो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्टिभ्यो सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुमत्त-अवगाहण-अगुरुलघु-अव्याबाधाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम भव आतप माहिं, तुम न्यारे संसार तैं ।
कीजै शीतल छांहि, चन्दन सों पूजा करों ॥ चंदनं ॥२॥
हम औगुण समुदाय, तुम अक्षत सब गुण भरे ।
पूजों अक्षत लाय, दोष नाश गुण कीजिये ॥ अक्षतं ॥३॥
काम अगनि है मोय, निश्चय शील स्वभाव तुम ।
फूल चढ़ाऊं तोय, सेवक की पावक हरो ॥ पुष्पं ॥४॥
हमें क्षुधा दुख भूरि, ज्ञान खड्गसों तुम हती ।
मेरी बाधा चूरि, नेवज सों पूजा करों ॥ नैवेद्यं ॥५॥
मोहतिमिर हम पास, तुम पर चेतन ज्योति है ।
पूजूं दीप प्रकाश, मेरो तम निर्वारिये ॥ दीपं ॥६॥
रुल्यो करम बन जाल, मुक्ति मांहि तुम सुख करौं ।
खेऊं धूप रसाल, मम निकाल बन जालिये ॥धूपं ॥७॥
अन्तराय दुखकार, तुम अनन्त थिरता लिये ।
पूजूं फल घरसार, विघन टार शिव फल करो ॥फलं ॥८॥
हम में आठों दोष, भजों अरघ सों सिद्धजी ।
दीजै वसु गुण मोक्ष, कर जोड़े "द्यानत" कहै ॥अर्घ्यं॥९॥

आरती लिख्यते

दोहा—आठ करम दृढ़ बन्ध सों, नख शिख बंध्यो जहान।
बन्ध रहित वसु गुण सहित, नमो सिद्ध भगवान ॥ १ ॥

त्रोटक छन्द

सुख सम्यक् दर्शन ज्ञान धरं, बलना गुरु ना लघु बाध हरं।
अवगाह अमूरति नायक हैं, सब सिद्ध नमों सुख दायक हैं ॥२॥
अमलं अचलं अतुलं अटलं, अतनं अमनं अवचं अकुलं।
अजरं अमरं जग ज्ञायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥ ३ ॥
निरभोग स्वभोग अरोग परं, निरयोग असोग वियोग हरं।
अरस स्वरसं दुख दायक हैं, सब सिद्धनमों सुखदायक हैं ॥ ४ ॥
सब कर्म कलंक अटंकअजं, नरनाथ सुरेश समूह जजं।
मुनि ध्यावत सज्जन दायक है, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥ ५ ॥
अविरुद्ध विशुद्ध प्रवुद्ध मयं, सब जानत लोक अलोक चयं।
परम धरमं शिव लायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥ ६ ॥
निरबन्ध अबन्ध अगन्ध परं, निरभय निरखय निरनय अधरं।
निररूप निरूप अकायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥ ७ ॥
निरभेद अखेद अछेद लहा, निरद्वन्द सुछन्द अछन्द महा।
अक्षुधा अतृषा अकषायक है, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥ ८ ॥
असमं अजमं अतमं लहियं, अगमं सुगमं सुखमं गहियं।
जमराज की चोट बचायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥९॥
निरधाम सुधाम अकाम युतं, अविहार अहार निहार च्युतं।
भव नाशन तीक्षण सायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥१०॥
निरवर्ण अकर्ण अशर्ण नुत, अगत अमतं अक्षतं अरतं।
अति उत्तम भाव सुपायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥११॥
निररंग असंग अभंगसदा, अतयं अजयं अचयं सुखदा।
अमदं अगदं गुण ज्ञायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥१२॥

अविषाद अनाद अवाद परं, भगवन्त अनन्त महन्त तरं ।
तुम ध्येय महा मुनि ध्यायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥१३॥
निरनेह अदेह अगेह सुखी, निरमोह अकोह अलोह तुपी ।
तिहुँ लोकके नायक पायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥१४॥
पन्द्रह से भाग महान बसै, नवलाखके भाग जघन्य लसै ।
तन वातके अन्त सहायक हैं, सब सिद्ध नमों सुखदायक हैं ॥१५॥
सोरठा—बहु विधि नाम बखान, परमेश्वर सबही भजें ।
ज्यों का त्यों सरधान, "द्यानत" सेवें ते बडे ॥१६॥

ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिभ्यो महार्घ्यं ।

अविनाशी अविकार परम रस धाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो ।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो,
जगत शिरोमणि सिद्ध सदा जयवन्त हो ॥१॥
ध्यान अगनिकर कर्म कलंक सबै दहे,
छिन मे सिद्ध स्वरूप निरंजन ह्वै रहे ।
ज्ञायक ज्ञेयाकार ममत्व निवारकैं,
सो परमातम सिद्ध नमो उर धारिकैं ॥२॥
दोहा—अविचल ज्ञान प्रकाशतै, गुण अनन्त की खान ।
ध्यान धरै सो पाइये, परम सिद्ध भगवान ॥ ३ ॥

इत्याशीर्वाद

निर्वाणक्षेत्र पूजा

सोरठा—

परम पूज्य चौबीस, जिहं जिहं थानक शिव गये ।
सिद्धभूमि निशदीस, मनवचतन पूजा करौं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण-क्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट् , आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्राणि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठ ठ , स्थापनं ।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्राणि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत, वषट् , सन्निधिकरणं ।

गीता छन्द

शुचि क्षीरदधि सम नीर निरमल, कनकझारी में भरौं ।
संसार पार उतार स्वामी, जोरकर विनती करौं ॥
सम्मेदगिर गिरनार चंपा, पावापुरि कैलासकौं ।
पूजों सदा चौवीसजिन निर्वाण भूमि निवासकों ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यः जलं निर्व० स्वाहा

केशर कपूर सुगंध चंदन, सलिल शीतल विस्तरौं ।
भवताप को संताप मेटो, जोरकर विनती करौं । सम्मेद.॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यः चंदनं नि० ॥२॥

मोती समान अखंड तंदुल, अमल आनन्दधरि तरौं । औगुन हरौ गुन करौ हमको, जोरकर विनती करौं ॥सम्मेद. ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्य अक्षतान् नि० ॥३॥

शुभ फूलरास सुवासवासित, खेद सब मन की हरौं ।
दुखधामकामविनाश मेरो जोरकर विनती करौं ॥सम्मेद.॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण क्षेत्रेभ्यः पुष्पं नि० ॥४॥

नेवज अनेक प्रकार जोग, मनोग धरि भय परिहरौं ।
यह भूखदूखन टार प्रभुजी, जोरकर विनती करौं॥सम्मेद.॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्य नैवेद्यं नि० ॥५॥
दीपक प्रकाश उजास उज्ज्वल, तिमिरसेती नहिं डरौं ।
संशयविमोहविभ्रम तमहर, जोरकर विनती करौं॥सम्मेद.॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यः दीपं नि० ॥६॥
शुभधूप परम अनूप पावन, भावपावन आचरौं । सब
करमपुंज जलाय दीज्यौ, जोरकर विनती करौं ॥सम्मेद.॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यः धूपं नि० ॥७॥
बहुफल मँगाय चढाय उत्तम, चारगतिसौं निरवरौं ।
निहचै मुकति फल देहु मोकौं, जोरकर विनती करौं॥सम्मेद।८।
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यः फलं नि० ॥८॥
जल गंध अक्षत पुष्प चरुफल, दीप धूपायन धरौं । 'द्यानत'
करो निरभय जगतसौं, जोरकर विनती करौं ॥सम्मेद. ॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर-निर्वाण-क्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं नि० ॥९॥

अथ जयमाला ।

श्री चौबीसजिनेश, गिरिकैलाशादिक नमौं ।
तीरथ महाप्रदेश, महापुरुष निरवाणतैं ॥

चौपाई १६ मात्रा

नमौं ऋषभ कैलाशपहारं, नेमिनाथ गिरनार निहारं ।
वासुपूज्य चंपापुर वंदौं, सन्मति पावापुर अभिनंदौं ॥ २ ॥

वंदौं अजित अजित पददाता, वंदौं संभव भवदुखघाता।
वंदौं अभिनंदन गणनायक, वंदौं सुमति सुमति के दायक ॥ ३ ॥
वंदौं पद्ममुकति पद्माधर, वंदौं सुपास आशपासाहर।
वंदौं चंदप्रभु प्रभुचंदा, वंदौं सुविधि सुविधिनिधि कंदा ॥ ४ ॥
वंदौं शीतल अघतपशीतल, वंदौं श्रेयांस श्रेयांस महीतल।
वंदौं विमल विमल उपयोगी, वंदौं अनंत अनंत सुखभोगी ॥ ५ ॥
वंदौं धर्म धर्म-विस्तारा, वंदौं शांति शांतिमनधारा।
वंदौं कुंथ कुंथ-रखवालं, वंदौं अर अरिहर गुणमालं ॥ ६ ॥
वंदौं मल्लि काममलचूरन, वंदौं मुनिसुव्रत व्रतपूरन।
वंदौं नमि जिन नमितसुरासुर, वंदौं पास पास भ्रमजगहर ॥ ७ ॥
बीसों सिद्धभूमि जा ऊपर, शिखर सम्मेद महागिरि भूपर।
एक बार वंदै जो कोई, ताहि नरकपशुगति नहिं होई ॥ ८ ॥
नरगति नृप सुरशक्र कहावै, तिहुँजग भोग भोगि शिव जावै।
विघनविनाशक मंगलकारी, गुणविशाल वंदै नरनारी ॥ ९ ॥
घत्ता—जो तीरथ जावै, पापमिटावै, ध्यावै गावै भक्ति करै।
ताको जस कहिये, संपति लहिये, गिरि के गुण को बुध उचरै ॥१०॥
ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थङ्करनिर्वाणक्षेत्रेभ्य. पूर्णार्घ्यं नि० ॥१०॥

इत्याशीर्वादः।

अथ सप्त ऋषि पूजा

छप्पय

प्रथम नाम श्रीमन्व दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर।
तीसर मुनि श्रीनिचय सर्वसुन्दर चौथो वर ॥
पंचम श्रीजयवान विनयलालस षष्ठम भनि।
सप्तम जयमित्राख्य सर्व चारित्रधाम गनि ॥

ये सातों चारणऋद्धिधर, करूं तास पद थापना।
मैं पूजूं मनवचकायकरि, जो सुख चाहूँ आपना॥

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधर श्रीसप्तऋषीश्वर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ२ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधिकरणम्।

अष्टक—गीता छन्द।

शुभतीर्थउद्भव जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायकैं।
भवतृषा कंदनिकंदकारण, शुद्ध घट भरवायकैं॥
मन्वादिचारणऋद्धिधारक, मुनिन की पूजा करूं।
ता करें पातिक हरें सारे सकल आनन्द विस्तरूं॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्व, स्वरमन्व, निचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनय, लालस, जयमित्र ऋषिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

श्रीखंड कदलीनंद केशर, मंद मंद घिसायकैं। तसुगंध प्रसरित दिगदिगंतर, भरकटोरी लायकैं। मन्वादि.॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धि-धारी सप्त-ऋषिभ्यः चंदनं नि०

अति धवल अक्षत खंड—वर्जित, मिष्ट राजन भोगके।
कलधौत थारा भरत सुन्दर चुनित शुभ उपयोग के॥म.॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धि-धारी सप्त-ऋषिभ्यो अक्षतान् नि.।३।

बहु वर्ण सुवरण सुमन आछे, अमल कमल गुलाब के।
केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निज कर चाव के॥मन्वादि.॥४॥

ॐ ह्रीं मन्वादि-चारण-ऋद्धि-धारी सप्त-ऋषिभ्यः पुष्पं नि०॥४॥

पक्वान नानाभांति चातुर, चरित शुद्ध नये नये ।
सद्मिष्ट लाडूआदिभर बहु, पुरटके थारा लये । म०दि० ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्तऋषिभ्य· नैवेद्यं नि०

कलधौत दीपक जडित नाना, भरित गोघृतसारसों ।
अति ज्वलितजगमग ज्योतिजाकी, तिमिरनाशनहारसों ।म०दि.
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्तऋषिभ्यः दीपं नि०

दिक्चक्र गंधित होत जाकर, धूप दश अंगी कही ।
सो लाय मनवचकाय-शुद्ध, लगायकर खेऊं सही ॥ मन्वादि.
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्तऋषिभ्यः धूपं नि०

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं ।
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर भर लायकैं ॥ मन्वादि.
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्तऋषिभ्य· फलं नि०

जलगंधअक्षतपुष्पचरुवर, दीप धूप सु लावना ।
फल ललित आठों द्रव्यमिश्रित, अर्घ कीजे पावना । मन्वादि
ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्तऋषिभ्यो अर्घ्यं नि०

अथ जयमाला । छन्द त्रिभंगी ।

वंदूं ऋषिराजा, धर्मजहाजा, निजपरकाजा, करत भले ।
करुणाके धारी, गगन विहारी, दुख अपहारी, भरम दले ॥
काटत जमफंदा, भविजन वृन्दा, करत अनंदा चरणनमें ।
जो पूजैं ध्यावैं मंगल गावैं, फेर न आवै भववन में ॥१॥

छन्द पद्धरी ।

जय श्रीमनु मुनिराजा महंत, त्रस थावरकी रक्षा करंत ।
जय मिथ्यातम नाशक पतंग, करुणारसपूरित अंग अंग ॥ २ ॥

जय श्रीस्वरमनु अकलंकरूप, पद सेव करत नित अमर भूप ।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचनसमान ॥ ३ ॥
जय निचय सप्त तत्त्वार्थ भास, तप-रमातनों तन मे प्रकाश ।
जय विषयरोध संबोध भान, परणतिके नाशक अचल ध्यान ॥ ४ ॥
जय जयहि सर्वसुन्दर दयाल, लखि इन्द्रजालवत जगत जाल ।
जय तृष्णाहारी रमण राम, जिन परणतिमें पाम्यो विराम ॥ ५ ॥
जय आनंदघन कल्याणरूप, कल्याण करत सबको अनूप ।
जय मद नाशन जयवान देव, निरमद विरचित सब करत सेव ॥६॥
जय जयहि विनयलालस अमान, सब शत्रु मित्र जानत समान ।
जय कृशितकाय तपके प्रभाव, छवि छटा उडति आनंद दाय ॥७॥
जय मित्र सकल जग के सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र ।
जय चंद्रवदन राजीव—नैन, कबहूं विकथा बोलत न बैन ॥ ८ ॥
जय सातों मुनिवर एकसंग, नित गगन गमन करते अभंग ।
जय आये मथुरापुर मँझार, तहं मरी रोग को अति प्रचार ॥ ९ ॥
जय जय तिन चरणनिके प्रशाद, सब मरी देवकृत भई वाद ।
जय लोक करै निर्भय समस्त, हम नमत सदा नित जोड़ हस्त ॥१०॥
जय ग्रीषमऋतु परवत मंझार; नित करत अतापन योगसार ।
जय तृषापरीषह करत जेर, कहुँ रंच चलत नहीं मनसुमेर ॥११॥
जय मूल अठाइस गुणनधार, तप उग्र तपत आनंदकार ।
जय वर्षाऋतु मे वृक्षतीर, तहं अति शीतल झेलत समीर ॥ १२ ॥
जय शीतकाल चौपट मँझार, कै नदी सरोवर तट विचार ।
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय ॥१३॥
जय मृतकासन वज्रासनीय, गोदूहन इत्यादिक गनीय ।
जय आसन नाना भांति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार ॥१४॥
जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुल वृद्धि होय ।
जय भरे लक्ष अतिशय भंडार, दारिद्र तनों दुख होय क्षार ॥१५॥

जय चोर अग्नि डाकिन पिशाच, अरु ईति भीति सब नसत साँच।
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक, सुर असुर नमत पद देत धौक॥१६॥

छन्द रोला—ये सातों मुनिराज, महातप लछमी धारी।
परम पूज्य पद धरे, सकल जग के हितकारी॥
जो मन वचतन शुद्ध होय सेवै औ ध्यावै।
सो जन मनरंगलाल अष्टऋद्धिनकौं पावै॥१७॥

दोहा—नमन करत चरनन परत, अहो गरीबनिवाज।
पंच परावर्तननितैं, निरवारो ऋषिराज॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादि-चारण-ऋद्धिधारी-सप्तऋषिभ्यः पूर्णार्घ्यं नि०

सोलहकारण पूजा

अडिल्ल:—सोलहकारण भाय तीर्थंकर जे भये,
हरषे इन्द्र अपार मेरुपर ले गये।
पूजा करि निज धन्य लखो बहु चावसों,
हम हूँ षोडश कारण भावैं भावसों।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणानि अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठत २ ठः ठ स्थापनं। अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्, सन्निधीकरणं।

अथाष्टक

कंचन झारी निर्मल नीर, पूजूं जिनवर गुण गंभीर।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दर्श विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि १, विनयसम्पन्नता २, शीलव्रतेष्वनतिचार ३, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग ४, संवेग ५, शक्तितस्त्याग ६, शक्तितस्तप ७, साधुसमाधि ८, वैयावृत्यकरण ६, अर्हद्भक्ति १०, आचार्यभक्ति ११, बहुश्रुतभक्ति १२, प्रवचनभक्ति १३, आवश्यकापरिहाणि १४, मार्गभावना १५, प्रवचनवात्सल्य १६, इति षोडशकारणेभ्यः नमः जलं ॥ १७ ॥

चंदन घसों कपूर मिलाय, पूजूं श्रीजिनवर के पांय ।
परमगुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दर्शवि० ॥२॥

ॐ ह्री दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्य चंदनं ।

तंदुल धवल अखंड अनूप, पूजूं जिनवर तिहुँ जग भूप ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दरशवि० ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो अक्षतं नि० ।

फूल सुगन्ध मधुप गुंजार, पूजूं जिनवर जग आधार ।
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरशवि० ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यः पुष्पं० ।

सद नेवज बहु विधि पकवान, पूजूं श्रीजिनवर गुणखान ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥५॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्य नैवेद्यं ।

दीपक ज्योति तिमिर क्षयकार, पूजूं श्रीजिनकेवलधार ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥६॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यः दीपं० ।

अगर कपूर गन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥७॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्य धूप निर्व० ।

श्रीफल आदि बहुत फल सार, पूजूं जिन बांछितदातार ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥८॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्य फल निर्व० ।

जल फल आठों द्रव्य चढाय, 'द्यानत' वरत करो मनलाय ।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परमगुरु हो ॥ दरशवि० ॥९॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं ।

जयमाला

दोहा—षोड़श कारण गुण करै, हरै चतुरगति वास ।
पाप पुण्य सब नास कै, ज्ञान भानु परकास ॥

चौपाई

दर्श विशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महा धारे जो प्राणी, शिव वनिताकी सखी बखानी ॥ २ ॥
शील सदा दृढ जो नर पाले, सो औरनकी आपद टाले ।
ज्ञानाभ्यास करे मन माहीं, ताके मोह महातम नाहीं ॥ ३ ॥
जो संवेग भाव विस्तारै, स्वर्ग मुक्ति पद आप निहारै ।
दान देय मन हर्ष विशेषै, इह भव यश परभव सुख देखै ॥ ४ ॥
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे कर्मशिखर गुरु भाषा ।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुं जग भोग भोगि शिव जावै ॥५॥
निश दिन वैयावृत्य करैया, सो निश्चय भवनीर तिरैया ।
जो अरहन्त भक्ति मन आनै, सो जन विषय कषाय न जानै ॥ ६ ॥

जो आचारज भक्ति करै हैं, सो निरमल आचार धरै हैं ।
बहुश्रुतवन्त भक्ति जो करई, सो नर संपूरण श्रुत धरई ॥ ७ ॥
प्रवचन भक्ति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द दाता ।
षटआवश्य काल जो साधै, सोही रत्नत्रय आराधै ॥ ८ ॥
धर्म प्रभाव करे जो ज्ञानी, तिन शिव मारग रीति पिछानी ।
वात्सलअंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थंकर पदवी पावै ॥ ९ ॥

दोहा—ये ही षोड़श भावना, सहित धरै व्रत जोय ।
देव इन्द्र नागेंद्र पद, 'द्यानत' शिव पद होय ॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति०

सवैया तेईसा

सुन्दर षोडशकारण भावना निर्मल चित्त सुधारक धारै,
कर्म अनेक हने अति, दुर्धर जन्म जरा भय मृत्यु निवारै ।
दुःख दरिद्र विपत्ति हरै भव सागरको तर पार उतारै ।
'ज्ञान' कहे यहि षोडशकारण, कर्म निवारण सिद्धि सुधारै ॥

इत्याशीर्वाद: ।

जाप—ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यै नम: । ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नतायै नम:, ॐ ह्रीं शीलव्रताय नम:, ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय नम:, ॐ ह्रीं संवेगाय नम:, ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागाय नम:, ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे नम:, ॐ ह्रीं साधुसमाध्यै नम:, ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणाय नम:, ॐ ह्रीं अर्हद्भक्त्यै नम:, ॐ ह्रीं आचार्यभक्त्यै नम:, ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्त्यै नम:, ॐ ह्रीं प्रवचनभक्त्यै नम:, ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाण्यै नम:, ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनायै नम:, ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नम: ॥ १६ ॥

पंचमेरु पूजा

गीता छन्द

तीर्थंकरों के न्हवन जलतैं, भये तीरथ सर्वदा।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरनकी सदा॥
दो जलधि ढाईद्वीपमें सब, गनत मूल विराजहीं।
पूजौं असी जिनधाम प्रतिमा, होंहि सुख दुख भाजहीं॥१॥

ॐ ह्रीं पचमेरु सम्बंधी-जिन-चैत्यालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह अत्रावतरावतर, संवौषट्। ॐ ह्रीं पंचमेरु-सम्बन्धि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ। ॐ ह्रीं पंचमेरु-सम्बन्धि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिन-प्रतिमा-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट्।

अथाष्टक। चौपाई आंचलीवद्ध (१५ मात्रा)

शीतल मिष्ट सुवास मिलाय, जलसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पांचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाको करों प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु, विजयमेरु, अचलमेरु, मंदिरमेरु, विद्युन्मालीमेरु, पंचमेरु सम्बन्धी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्य. जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

जल केसर कर्पूर मिलाय, गंधसों पूजों श्री जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय॥ पांचों० ॥ २॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधि जिन-चैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्य. चंदन नि०

अमल अखण्ड सुगंध सुहाय, अच्छतसों पूजों जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु-संबंधि-जिन-चैत्यालयस्थ जिनविम्बेभ्यो अक्षतान्०
वरन अनेक रहे महकाय, फूलनसों पूजों जिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु-संबंधि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिन-विम्बेभ्य. पुष्पं नि०
मनवांछित वहु तुरत बनाय, चरुसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु-संबंधि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिन-विम्बेभ्यः नैवेद्य नि.
तमहर उज्ज्वल जोति जगाय, दीपसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय. देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु-संबंधि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिन-विम्बेभ्यः दीपं नि.
खेउं अगर परिमल अधिकाय, धूपसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु-संबंधि-जिन चैत्यालयस्थ-जिन-विम्बेभ्य धूप नि०
सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसों पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु-संबंधि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिन-विम्बेभ्य. फलं नि०
आठ दरबमय अरघ बनाय. 'द्यानत' पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परमसुख होय ॥ पांचों० ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरु-संबंधि-जिन-चैत्यालयस्थ-जिन-विम्बेभ्यो अर्घ्यं नि०

जयमाल—सोरठा।

प्रथम सुदर्शन स्वामि, विजय अचल मंदिर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जगमे प्रकट ॥ १० ॥

वेसरी छन्द

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै। भद्रशाल बन भूपर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी। मनवचतन कर बंदना हमारी ॥ २ ॥
ऊपर पांच शतक पर सोहै। नदनवन देखत मन मोहै ॥ चैत्या०३॥
साढे बासठ सहस उंचाई। बन सुमनस शोभै अधिकाई ॥चै०॥४॥
ऊंचा योजन सहस छतीसं। पाडुकवन सोहै गिरिसीसं ॥ चै०॥५॥
चारों मेरु समान वखानो। भूपर भद्रसाल चहुं जानो ॥
चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतनकर बंदना हमारी ॥ ६ ॥
ऊंचे पांच शतक पर भाखे। चारों नन्दनवन अभिलाखे ॥
चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतन कर बंदना हमारी ॥ ७ ॥
साढे पचपन सहस उतंगा। वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतनकर बंदना हमारी ॥ ८ ॥
उच्च अठाइस सहस बताये। पाडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी। मनवचतनकर बंदना हमारी ॥ ९ ॥
सुर नर चारन बंदन आवै। सो शोभा हम किह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी। मनवचतनकर बंदना हमारी ॥१०॥

दोहा—पंचमेरु की आरती, पढै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानै प्रभू, तुरत महा सुखहोय ॥११॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु-संबंधि-जिन चैत्यालयस्थ-जिन-विम्बेभ्यो अर्घ्यं नि०

नंदीश्वर द्वीप (अष्टाह्निका) पूजा

अडिल्ल छन्द

सर्व पर्व में बड़ो अठाई पर्व है ।
नन्दीश्वर सुर जांहि लिये वसु दर्व हैं ॥
हमें शक्ति सो नांहि इहां करि थापना ।
पूजौं जिनगृह प्रतिमा है हित आपना ॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत्-जिनालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

कंचन मणिमय भृंगार, तीरथ नीर भरा ।
तिहुं धार दई निरवार, जामन मरन जरा ॥
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करौं ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरौं ॥१॥

ॐ ह्रीं मासोत्तमे मासे .... मासे शुभे शुक्लपक्षे अष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नंदीश्वरद्वीपे पूर्व-दक्षिण-पश्चिमोत्तरे एक अंजनगिरि चार दधिमुख आठ रतिकर प्रतिदिशि तेरह तेरह बावन जिन चैत्यालयेभ्य: जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० स्वाहा ॥१॥

भवतपहर शीतल वास, सो चन्दन नाहीं ।
प्रभु यह गुन कीजै सांच, आयो तुम ठाहीं ॥ नंदी० ॥२॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्य: चन्दनं निर्व०

उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहैं ।
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अरु को हैं । नं० ॥३॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो अक्षतान् निर्व०

तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फूलनसौं ।
लहि शील लक्ष्मी एव, छूटूं शूलनसौं ॥ नंदी० ॥४॥

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः पुष्पं निर्व०

नेवज इन्द्रियबलकार, सो तुमने चूरा ।
चरु तुम ढिग सोहै सार, अचरज है पूरा ॥ नं० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः नैवेद्यं निर्व०

दीपक की ज्योति प्रकाश, तुम तन माहिं लसै ।
टूटै करमन की राश, ज्ञानकणी दरसै ॥ नं० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्य दीपं निर्व०

कृष्णागरुधूप सुवास, दशदिशि नारि वरैं ।
अति हरषभाव परकाश, मानों नृत्य करैं ॥ नं० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्य धूपं निर्व०

बहुविधफल ले तिहुँकाल, आनन्द राचत हैं ।
तुम शिवफल देहु दयाल, सो हम जाचत हैं ॥ नं० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः फलं निर्व०

यह अर्घ कियो निज हेतु, तुमको अरपत हौं ।
'द्यानत' कीनो शिवखेत, भूमि समरपतहौं ॥ नं० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्व०

जयमाला—दोहा ।

कार्तिक फागुन साढ़के, अंत आठ दिनमाहि ।
नंदीश्वर सुर जात हैं, हम पूजैं इह ठाहि ॥ १ ॥

छन्द ।

एकसौ त्रेसठ कोड़ि जोजन महा। लाखचौरासिया एकदिशि में लहा॥
आठमों द्वीप नंदीश्वरं भास्वरं। भौन बावन्न प्रतिमा नमों सुखकरं॥२॥
चारदिशि चार अंजनगिरी राजहीं। सहस चोरासिया एकदिशिछाजहीं॥
ढोलसम गोल ऊपर तले सुन्दरं ॥ भौन० ॥ ३ ॥
एक इक चार दिशि चार शुभ बावरी। एक इक लाख जोजन अमल जलभरी॥ चहुँदिशा चार बन लाख जोजन वरं ॥ भौन० ॥ ४ ॥
सोल वापीन मधि सोल गिरि दधिमुखं। सहस दस महा जोजन लखत ही सुखकरं॥ बावरी कौण दोमांहि दो रतिकरं ॥भौन०॥५॥
शैल बत्तीस इक सहस जोजन कहे, चार सौले मिले सर्व बावन लहे॥ एक इक सीसपर एक जिनमंदिरं ॥ भौन० ॥६॥
बिंब आठ एकसौ रतनमय सोहही। देव देवी सरव नयन मन मोहही॥
पांचसै धनुष तन पद्मआसन परं ॥ भौन० ॥ ७ ॥
लाल नख मुख नयन श्याम अरु स्वेत हैं। श्याम रंग भौंह सिर केश छवि देत हैं। वचन बोलत मनों लसत कालुषहरं। भौन० ॥८
कोटिशशि भानु दुति तेज छिप जात है। महा वैराग्य परिणाम ठहरात है॥ वयन नहिं कहैं लखि होत सम्यकधरं। भौन० ॥ ९ ॥

सोरठा ।

नन्दीश्वर जिनधाम, प्रतिमा महिमा को कहै।
'द्यानत' लीनों नाम, यहै भगति सब सुख करै ॥

ॐ ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपे जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यः पूर्णाऽर्घ्यं नि.

दशलक्षणधर्म पूजा

उत्तम छिमा मार्दव आर्जव भाव हैं।
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं ॥

आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार है।
चहुं गति दुखतैं काढि मुकति करतार हैं॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म! अत्रावतरावतर। संवौषट्
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि-दश-लक्षणधर्म! अत्र मम सन्निहितो भव वषट

सोरठा

हेमाचल की धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्यादि-दश-लक्षणधर्माय जलं नि० ॥ १ ॥

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि-दश-लक्षणधर्माय चंदनं नि० ॥ २ ॥

अमल अखंडित सार, तंदुल चन्द्र समान शुभ।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौ सदा॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि-दश-लक्षणधर्माय अक्षतान् नि० ॥ ३ ॥

फूल अनेक प्रकार, महकै ऊरधलोक लों।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि-दश-लक्षणधर्माय पुष्पं नि० ॥ ४ ॥

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरस संजुगत।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि-दश-लक्षणधर्माय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

बाति कपूर सुधार, दीपक जोति सुहावनी।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि-दश-लक्षणधर्माय दीपं नि० ॥ ६ ॥
अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि-दश-लक्षणधर्माय धूपं नि० ॥ ७ ॥
फलकी जाति अपार, घ्राण नयन मनमोहने।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि-दश-लक्षणधर्माय फलं नि० ॥ ८ ॥
आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भव आताप निवार, दशलक्षण पूजौं सदा ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि-दश-लक्षणधर्माय अर्घ्यं नि० ॥ ९ ॥

अंग पूजा सोरठा

पीड़ै दुष्ट अनेक, बाँधि मार बहु विधि करै।
धरिये छिमा विवेक; कोप न कीजै पीतमा ॥ १ ॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इहभव जस परभव सुखदाई।
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो ॥
कहिहै अयानो वस्तु छीने, बांध मार बहुविधि करैं।
घरतै निकारै तन बिदारै, वैर जो न तहां धरैं ॥
तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा।
अतिक्रोध अगनि बुझाय प्रानी, साम्य जल ले सीयरा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मान महाविषरूप, करहिं नीचगति जगतमें ।
कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्राणी सदा ॥ २ ॥

उत्तम मार्दवगुन मन माना, मान करनको कौन ठिकाना ।
बस्यो निगोदमाहिंतैं आया, दमरी रूकन भाग विकाया ॥

रूकन विकाया भाग वशतैं, देव इकइन्द्री भया ।
उत्तम मुआ चांडाल हुआ, भूप कीड़ों में गया ॥
जीतव्य-यौवन-धन गुमान, कहा करे जल बुदबुदा ।
करि विनय बहुगुन बड़े जनकी, ज्ञान का पावै उदा ॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना वसे ॥
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा ॥ ३ ॥

उत्तम आर्जवरीति बखानी, रञ्चक दगा बहुत दुखदानी ।
मनमें होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौ करिये ॥

करिये सरल तिहुं जोग अपने देख निरमल आरसी ।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट प्रीति अंगारसी ॥
नहिं लहै लक्ष्मी अधिक छलकर, करमबंध विशेषता ।
भय त्यागि दूध विलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कठिन वचन मति बोल, पर निंदा अरु झूंठ तज ॥
सांचे जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी ॥ ४ ॥

उत्तम सत्यवरत पालीजै, पर विश्वासघात नहिं कीजै ।
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥

पेखो तिहायत पुरुष सांचेको, दरब सब दीजिये ।
मुनिराज श्रावककी प्रतिष्ठा, सांचगुन लख लीजिये ॥
ऊँचे सिंहासन बैठि वसुनृप, धरमका भूपति भया ।
वच झूँठसेती नरक पहुँचा, सुरगमे नारद गया ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसौं ।
शौच सदा निरदोष, धरम बड़ो संसार में ॥ ५ ॥
उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पापको बाप बखाना ।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावे सन्तोषी प्रानी ॥
प्रानी सदा शुचिशील जप तप, ज्ञानध्यानप्रभावतैं ।
नित गंगजमुन समुद्रन्हाये, अशुचिदोष सुभावतैं ॥
ऊपर अमल, मल भर्यो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहैं ।
बहु देह मैली सुगुनथैली, शौचगुन साधू लहैं ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्री मन वश करो ।
संजमरतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं ॥ ६ ॥
उत्तम संजम गहु मन मेरे, भवभवके भाजैं अघ तेरे ।
सुरग नरकपशुगति मे नाहीं, आलस हरन करन सुख ठाहीं ॥
ठाहीं पृथ्वी जल अग्नि मारुति, रूंख त्रस करुना धरो ।
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो ॥
जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रुलो जग कीचमे ।
इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जममुख बीचमे ।६॥
ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप चाहैं सुर राय, करमशिखरको वज्र है।
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करे निज शक्तिसम ॥ ७ ॥
उत्तम तप सब माहिं बखाना, करमशिखरको वज्र समाना।
बस्यो अनादि निगोद मंझारा, भूविकलत्रय पशुतन धारा ॥
धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता।
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषयपयोगिता ॥
अति महादुलभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै।
नरभव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरैं ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दान चार परकार, चार संघको दीजिये।
धन बिजली उनहार, नरभव लाहो लीजिये ॥ ८ ॥
उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा।
निहचै रागद्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै ॥
दान संभारै कूप जलसम, दरब घरमे परिनया।
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाया खोया बह गया ॥
धनि साध शास्त्र अभयदिवैया, त्याग राग विरोध कों।
बिन दान श्रावक साध दोनों, लहै नाहीं बोधकों ॥
ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी।
तृष्णाभाव उछेद, घटती जान घटाइये ॥ ८ ॥
उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिन्ता दुखही मानो।
फांस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटी की दुख भालै ॥
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि मुद्रा धरैं।
धनि नगनपर तन नगन ठाडे, सुर असुर पायनि परैं ॥

घरमांहि तृष्णा जो घटावै, रुचिनहीं संसारसौं ।
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपकारसौं ॥९॥
ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
शील बाडि नौ राख, ब्रह्मभाव अन्तर लखो ।
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर भव सदा ॥ १० ॥
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ ।
सहैं बानवर्षा बहु सूरे, टिकैं न नयन-बान लखि कूरे ॥
कूरे तियाके अशुचितन में, कामरोगी रति करै ।
बहु मृतक सड़हिं मसानमाहीं, काक ज्यों चोंचैं भरैं ॥
संसार में विषबेलि नारी, तजि गये जोगीश्वरा ।
'द्यानत' धरम दशपैंडि चढ़िके, शिवमहलमे पग धरा ॥११॥
ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा.—दशलच्छन बन्दौ सदा, मनवाञ्छित फलदाय ।
कहों आरती भारती, हम पर होय सहाय ॥ १ ॥

बेसरी छन्द ।

उत्तम छिमा जहां मन होई, अन्तर बाहर शत्रु न कोई ।
उत्तम मार्दव विनय प्रकासैं नानाभेद ज्ञान सब भासैं ॥ २ ॥
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्यागि सुगति उपजावै ।
उत्तम सत्य वचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै ॥ ३ ॥
उत्तम शोचलोभ परिहारी, संतोषी गुण रतन भंडारी ।
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै ले साता ॥ ४ ॥

उत्तम तप निरवांछित पाले,-सो नर करम शत्रु को टाले।

उत्तम त्याग करै जो कोई,-भोगभूमि सुर शिवसुखहोई ।। ५ ।।

उत्तम आकिंचन व्रतधारै, परमसमाधिदशा विस्तारै ।

उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुर सहित मुकतिफल पावै ।।६।।

दोहा:—करै करम की निरजरा, भवपींजरा विनाशि ।

अजर अमरपदको लहै, 'द्यानत' सुखकी राशि ।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्यदशलक्षणधर्मागाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय पूजा

दोहा.—चहुंगतिफणिविषहरनमणि, दुख पावक जलधार ।

शिवसुख सुधासरोवरी, सम्यक्त्रयी निवार ।। १ ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्रावतरावतर ! संवौषट् । ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः । ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो ।

जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ।। १ ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं नि० ।

चंदनकेशरगारि, परिमल महा सुगन्धमय ।

जनम रोग निरवार, सम्यक्रत्नत्रय भजों ।। २ ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय भवतापविनाशनाय चन्दनं नि० ।

तंदुल अमल चितार, वासमति सुखदाय के ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजों ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

महकैं फूल अपार, अलि गुंजै ज्यों थुति करैं ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजों ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० ।

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजों ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

दीप रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजों ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं ॥नि०॥

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूरकी ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजों ॥ ७ ॥
ॐ ह्री सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं नि० ।

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजों ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

आठ दरब निरधार, उत्तमसों उत्तम लियो ।
जनम रोग निरवार, सम्यक्‌रत्नत्रय भजों ॥ ९ ॥
ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अन र्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि० ।

सम्यक्दर्शनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी ।
पार उतारन जान, 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं नि० ।

समुच्चय जयमाला ।

सम्यक् दरशन ज्ञानव्रत, इन बिन मुकति न होय ।
अन्ध पगु अति आलसी, जुदे जलैं दवलोय ॥ १ ॥

चौपाई ।

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबंध कट जावैं ।
तासौं शिवतिय प्रीति बढावैं, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥ २ ॥
ताकौं चहुँ गति के दु:ख नाहीं, सो न परै भवसागर माहीं ।
जनम जरामृतु दोष मिटावैं, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावे ॥ ३ ॥
सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलह कारण आराधै ।
सो परमातम पद उपजावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥ ४ ॥
सोई शक्रचक्रिपद लेई, तीन लोक के सुख बिलसेई ।
सो रागादिक भाव वहावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥ ५ ॥
सोई लोकालोक निहारै, परमानन्द दशा विसतारै ।
आप तिरै औरन तिरवावै, जो सम्यक् रतनत्रय ध्यावै ॥ ६ ॥

दोहा ।

एकस्वरूप प्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीनभेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शन पूजा

दोहा

सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्तजीव सोपान।
ज्ञानचरित्र जिहं विन अफल, सम्यग्दर्श प्रधान ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र अवतर अवतर ! संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्

सोरठा।

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यक्‌दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जलं नि०।

जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यक्‌दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय चन्दनं नि०।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख करै।
सम्यक्‌दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥३॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् नि०।

पहुप सुपास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यक्‌दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥४॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय पुष्पं नि०।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥५॥
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं नि०।
दीप ज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥६॥
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय दीपं नि०।
धूप घ्रानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥७॥
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय धूपं नि०।
श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिवफल करै।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय फलं नि०।
जल गन्धाच्छत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यक्दर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं नि०।

जयमाला-दोहा।

आप आप निहचै लखै, तत्त्वप्रीति व्योहार।
रहित दोष पच्चीस है, सहित अष्टगुण सार ॥१०॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यक्दरसन रतन गहीजै, जिनवच में संदेह न कीजै।
इहभव विभव-चाह दुखदानी, पर भव भोग चहै मत प्रानी॥

प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरम गुरु प्रभु परखिये।
परदोष ढकिये धरम डिगते को, सुथिर कर हरखिये॥
चउसंघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना।
गुण आठसों गुन आठ लहि कै, इहां फेर न आवना॥ २॥

ॐ ह्रीं अष्टांगसहित-पंचविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान पूजा

पञ्चभेद जाके प्रकट, ज्ञेय प्रकाशन भान।
मोह-तपन-हर-चंद्रमा, सोई सम्यक्ज्ञान॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सोरठा।

नीर सुगंध अपार, तृषा हरै मल छय करै।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकेशर घनसार, ताप हरे शीतल करे।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा॥२॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥३॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा ॥४॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥५॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥६॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप घ्रान सुखकार, रोगविघन जड़ता हरै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥७॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफलआदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥८॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यक्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥९॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला । दोहा ।

आप आप-जानै नियत, ग्रन्थपठन व्योहार ।
संशय विभ्रम मोह बिन, अष्टअङ्ग गुनकार ॥१॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

सम्यक्ज्ञानरतन मन भाया । आगम तीजा नैन बताया ।
अच्छर अरथ शुद्ध पहिचानौ । अच्छर अरथ उभय संग जानौ ॥
जानौ सुकाल पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये ।
तपरीति गहि बहु मान देकैं, विनय गुन चित लाइये ॥
ए आठ भेद करम उछेदक, ज्ञानदर्पण देखना ।
इस ज्ञानहीसौं भरत सीझा, और सब पटपेखना ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चारित्र पूजा

दोहा

विषयरोग औषधि महा, दवकषाय जलधार ।
तीर्थंकर जाकों धरैं, सम्यक्चारितसार ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सोरठा ।

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरे मल छय करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्व० ।

जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चंदनं निर्व०।

अक्षत अनूप निहार, दारिद नासै सुख भरै।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥३॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षतान् निर्व०।

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥४॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं नि०।

नेवज विविधप्रकार, क्षुधा हरै थिरता करै।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥५॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं नि०।

दीपजोति तमहार, घटपट परकाशै महा।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥६॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं नि०।

धूप घ्राण सुखकार, रोग विघन जडता हरै।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥७॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं नि०।

श्रीफलआदि विथार, निश्चय सुरशिवफल करै।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥८॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं नि०।

जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥९॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं नि० ।

जयमाला—दोहा ।

आप आप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार ।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार ॥१०॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द ।

सम्यक्चारित रतन संभालो । पांच पाप तजिकै व्रत पालो ।
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजै । नर भव सफल करहु तन छीजै ॥१

छीजै सदा तनको जतन यह, एक संयम पालिये ।
बहु रुल्यो नरक निगोद मांही, विषय कषायनि टालिये ॥
शुभ करम जोग सुघाट आया, पार हो दिनजात है ।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ॥२॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घ्यं निर्व० ।

देव पूजा

दोहा —प्रभु तुम राजा जगतके, हमें देय दुख मोह ।
तुम पद पूजा करत हूं, हमपै करुणा होहि ॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टादश-दोष-रहित-षट्चत्वारिंशद्-गुण-सहित-श्री जिनेन्द्र भगवन् अत्रावतरावतर संवौषट् । ॐ ह्रीं अष्टादश-दोष-रहित-षट्चत्वारिंशन्-गुण-सहित-श्रीजिनेन्द्रभगवन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ,

ठ. ठ.। ॐ ह्रीं अष्टादश-दोष-रहित-षट्चत्वारिंशद्-गुण-सहित-श्री जिनेंद्रभगवन् अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

छन्द त्रिभङ्गी।

बहु तृषा सतायो, अति दुख पायो, तुमपै आयो जल लायो।
उत्तम गंगाजल शुचि अति शीतल, प्रासुक निर्मल गुन गायो।।
प्रभु अन्तरजामी, त्रिभुवननामी, सबके स्वामी दोष हरो।
यह अरज सुनीजै, ढील न कीजै, न्याय करीजै, दया धरो।।१

ॐ ह्रीं अष्टादश-दोष-रहित-षट्चत्वारिंशद्-गुण-सहित-श्री जिनेन्द्रभगवद्भ्यो जन्ममृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अघतपत निरन्तर अगनिपटन्तर, मो उर अन्तर, खेद करयौ।
लै बावन चन्दन, दाहनिकंदन, तुमपदवंदन, हरष धरयौ।।प्र.

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो भवतापनाशाय चंदनं नि०।

औगुन दुखदाता, कह्यो न जाता, मोहि असाता बहुत करै।
तंदुल गुनमण्डित, अमल अखण्डित, पूजत पंडित, प्रीति धरै।। प्रभु०।।

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०।

सुरनर पशुको दल काम महाबल बात कहत छल मोहलिया।
ताके शर लाऊँ फूल चढ़ाऊं, भगति बढ़ाऊं खोल हिया।प्र.

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्प नि०।

सब दोषनमाहीं, जासम नहीं, भूख सदा ही मौ लागै। सद घेवर बावर, लाडू बहु धर, थार कनक भर, तुम आगै। प्र.

ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो क्षुधारोगनाशाय नैवेद्यं नि०।

अज्ञान महातम, छाय रह्यो मम, ज्ञान ढक्यौ हम, दुखपावैं।
तम मेटनहारा, तेज अपारा, दीप संवारा, जस गावैं ॥ प्रभु०
ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो मोहान्धकार विनाशाय दीप०

इह कर्म महावन, भूल रह्यौ जन, शिवमारग नहीं पावत है।
कृष्णागरुधूपं, अमल अनूपं, सिद्धस्वरूपं ध्यावत हैं ॥ प्र०
ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं०।

सबतैं जोरावर, अन्तराय अरि, सुफल विघ्न करि डारत हैं।
फलपुञ्जविविध भर, नयनमनोहर, श्रीजिनवर पद धारत हैं॥प्र.
ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं।

आठों दुखदानी, आठ निशानी, तुम ढिग आनि निवारन हो।
दीनन निस्तारन, अधम उधारन, 'द्यानत'तारन कारन हो ।प्र.
ॐ ह्रीं अष्टा० श्रीजिनेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं।

जयमाला

दोहा—गुण अनंत को कहि सकै, छियालीस जिनराय।
प्रगट सुगुन गिनती कहूँ, तुम ही होहु सहाय ॥१॥

चौपाई (१६ मात्रा)

एक ज्ञान केवल जिनस्वामी, दो आगम अध्यातम नामी।
तीन काल विधि परगट जानी, चार अनन्तचतुष्टय ज्ञानी ॥२॥
पञ्च परावर्तन परकासी, छहों दरव गुण परजय भासी।
सातभङ्गवानी परकाशक, आठों कर्म महारिपु नाशक ॥३॥
नव तत्त्वन के भाखनहारे, दश लच्छनसों भविजन तारे।
ग्यारह प्रतिमा के उपदेशी, बारह सभा सुखी अकलेशी ॥४॥

तेरह विधि चारितके दाता, चौदह मारगना के ज्ञाता।
पन्द्रह भेद प्रमाद निवारी, सोलह भावन फल अविकारी ॥५॥
तारे सत्रह अङ्क भरत भुव, ठारै थान दान दाता तुव।
भाव उनीस जु कहे प्रथम गुन, बीस अङ्कगणधरजी की धुन॥६॥
इकइस सर्व घातविधि जानै, बाइस बंध नवम गुणथानै।
तेइस निधि अरु रतन नरेश्वर, सो पूजै चौबीस जिनेश्वर ॥७॥
नाश पचीस कषाय करी हैं, देशघाति छब्बीस हरी हैं।
तत्त्व दरब सत्ताइस देखे, मति विज्ञान अठाइस पेखे ॥८॥
उनतीस अङ्क मनुष सब जाने, तीस कुलाचल सर्व बखाने।
इकतिस पटल सुधर्म निहारे, बत्तिस दोष समाइक टारे ॥९॥
तेतिस सागर सुखकर आये, चौतिस भेद अलब्धि बताये।
पैतिस अक्षर जपं सुखदाई, छत्तिस कारन रीति मिटाई ॥१०॥
सैंतिस मर्ग कहि ग्यारह गुनमें, अडतिस पद लहिं नरक अपुनमें।
उनतालीस उदीरन तेरम, चालिस भवन इन्द्र पूजैं नम ॥११॥
इकतालीस भेद आराधन, उदै बियालिस तीर्थंकर मन।
तेतालीस बन्ध ज्ञाता नहिं, द्वार चवालिस नर चौथे महिं ॥१२॥
पैंतालीस पल्यके अक्षर, छियालिस बिन दोष मुनीश्वर।
नरक उदै न छियालिस मुनिधुन, प्रकृत छियालिस नाश दशम गुन
छियालीस घन राजु सात भुव, अंक छियालिस सरसों कहि कुव।
भेद छियालिस अन्तर तपवर, छियालीस पूरन गुन जिनवर ॥१४॥

अडिल्ल-मिथ्यातपन निवारण चंद्र समान हो। मोहतिमिर वारनको कारन भान हो। काम कषाय मिटावन मेघ मुनीश हो। 'द्यानत' सम्यकरतनत्रयगुन ईश हो॥ १५॥

ॐ ह्रीं अष्टादश-दोष-रहित-षट्चत्वारिंषद्-गुण-सहित-श्रीजिनेन्द्रभगवद्भ्यो पूर्णाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पूर्णार्घ्य के बाद विसर्जन करिए)

सरस्वती पूजा ।

दोहा—जनम जरा मृतु छय करै, हरै कुनय जडरीति ।
भवसागरसों ले तिरै, पूजै जिनवचप्रीति ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनि ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहिता भव भव । वषट् ।

क्षीरोदधि गंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखसंगा ।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा ॥
तीर्थङ्कर की धुनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञान मई ।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी, पूज्य भई ॥१

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

करपूर मंगाया, चंदन आया, केशर लाया, रंग भरी ।
शारदपद वन्दौं, मन अभिनन्दौं, पापनिकंदौं, दाहहरी ॥तीर्थ.

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अतिअनुमोदं चंदसमं । बहु-
भक्ति बढाई, कीरति गाई, होहु सहाई, मात ममं ॥तीर्थ०॥३

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

बहुफूलसुवासं, विमलप्रकाशं, आनंदरासं लाय धरे। मम काम मिटायौ, शील वढायौ, सुख उपजायौ दोष हरे। तीर्थं०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै पुष्पं निर्व० ॥ ४ ॥

पकवान वनाया, वहुकृत लाया, सब विध भाया, मिष्ट महा। पूजूं थुति गाऊँ प्रीति वढाऊँ, क्षुधा नसाऊँ हर्ष लहा ॥तीर्थं०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै नैवेद्यं निर्व० ॥ ५ ॥

करि दीपकज्योतं, तमछयहोतं, ज्योति उदोतं तुमहि चढै। तुमहो परकाशक, भरमविनाशक, हमघट भासक ज्ञानबढै ।ती.

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै दीपं निर्व० ॥ ६ ॥

शुभगंध दशोंकर, पावकमें धर, धूप मनोहर खेवत हैं। सब पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं, सेवत हैं ॥तीर्थं०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै धूपं निर्वपा० ॥ ७ ॥

बादाम छुहारी, लौंग सुपारी, श्रीफल भारी, ल्यावत हैं। मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता ध्यावत हैं ।ती.

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै फलं निर्वपा ॥ ८ ॥

नयननिसुखकारी, मृदुगुनधारी, उज्ज्वल भारी, मोल धरै। शुभगंधसम्हारा, वसन निहारा, तुमतर धारा ज्ञान करै ॥ती०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै वस्त्रं निर्वपा० ॥ ९ ॥

जल चंदन अच्छत, फूल चरू चत, दीप धूप, अति, फल लावै

पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै ॥ती०

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यैऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोरठा—ओंकार धुनिसार, द्वादशांग वाणी विमल ।

नमों भक्ति उरधार, ज्ञान करै जड़ता हरै ॥

पहला आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो ।

दूजा सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरुभाषं ॥१॥

तीजा ठाना अंग सुजानं, सहस छियालीस पद सरधानं ।

चौथा समवायांग निहारं, चौसठ सहस लाख इकधारं ॥२॥

पञ्चम व्याख्याप्रगपति दरशं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं ।

छट्ठा ज्ञातृकथा विस्तारं, पांच लाख छप्पन हज्जारं ॥३॥

सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यारह लख भंगं ।

अष्टम अन्तकृतं दस ईसं, सहस अठाईस लाख तेईसं ॥४॥

नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं ।

दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाखतिरानव सोल हजारं ॥५॥

ग्यारम सूत्रविपाक सुभाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं ।

चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरुशाखं ॥६॥

द्वादश दृष्टिवाद पन भेदं, इकसौ आठ कोड़िपन वेदं ।

अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पञ्चपद मिथ्याहन हैं ॥७

इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो ।

ठावन सहस पञ्च अधिकाने, द्वादस अंग सर्व पद माने ॥८॥

कोड़ि इकावन आठहि लाखं, सहस चुरासी छहसो भाखं ।

साढ़े इक्कीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये ॥९॥

घत्ता—जा बानीके ज्ञानमें, सूझै लोक अलोक।
'द्यानत' जगजयवन्त हो, सदा देत हौं धोक ॥१०॥

ॐ ह्री श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपा० ।

इति-सरस्वती पूजा ।

गुरु पूजा ।

दोहा—चहुँ गति दुखसागरविषैं, तारनतरन जिहाज ।
रतनत्रयनिधि नगन तन, धन्य महा मुनिराज ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्याय-सर्वसाधुगुरुसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् । ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्याय-सर्वसाधुगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः । ॐ ह्रीं श्रीआचार्योपाध्याय-सर्वसाधुगुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव, वषट् ।

शुचि नीर निरमल छीरदधिसम, सुगुरु चरन चढ़ाइया ।
तिहुं धार तिहुं गदटार स्वामी, अति उछाह बढ़ाइया ॥
भवभोगतनवैराग धार, निहार शिव तप तपत हैं ।
तिहुं जगतनाथ अराध साधु सु, पूज नित गुन जपत हैं ॥१॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः जलं नि० ॥२॥

करपूर चन्दन सलिलसौं घसि, सुगुरुपद पूजा करौं ।
सब पाप ताप मिटाय स्वामी, धरम शीतल विस्तरौं ॥भव०॥२

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्य चन्दनं नि० ॥३॥

तन्दुल कमोद सुवास उज्ज्वल, सुगुरु पगतर धरत हैं।
गुनकार औगुनहार स्वामी, वन्दना हम करत हैं ॥भव०॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योः अक्षतान् नि० ॥४॥

शुभफूलरासप्रकाश परिमल, सुगुरुपांयनि परत हौं।
निरवार मार उपाधि स्वामी, शीलदृढ़ उर धरत हैं ॥भव०॥४

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः पुष्पं नि० ॥५॥

पकवान मिष्ट सलौन सुन्दर, सुगुरु पांयन प्रीतिसौं।
कर क्षुधारोग विनाश स्वामी, सुथिर कीजे रीतिसौं ॥भव०॥५

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः नैवेद्यं नि० ॥६॥

दीपक उदोत सजोत जगमग, सुगुरु पद पूजों सदा।
तमनाश ज्ञानउजास स्वामी, मोहि मोह न हो कदा ॥भव.॥६

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यः दीपं नि० ॥७॥

बहु अगर आदि सुगंध खेऊँ, सुगुण पद पद्महि खरे।
दुख पुंजकाठ जलाय स्वामी, गुण अखय चितमें धरे ॥भव.॥७

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

भर थार पूंग बदाम बहुविधि, सुगुरुक्रम आगें धरौं।
मंगल महाफल करो स्वामी, जोर कर विनती करौं ॥भव.॥८

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल गंध अक्षत फूल नेवज, दीप धूप फलावली।
'द्यानत' सुगुरुपद देहु स्वामी, हमहिं तार उतावली ॥भव.॥९

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि०

जयमाला

दोहा—कनककामिनी विषयवश, दीसै सब संसार।
त्यागी वैरागी महा, साधु सुगुरु भंडार ॥ १ ॥
तीन घाटि नवकोड सब, वंदौं शीश नवाय।
गुन तिन अट्ठाईस लौं, कहूँ आरती गाय ॥ २ ॥

एक दया पालैं मुनिराजा, रागद्वेष द्वै हरन परं।
तीनों लोक प्रगट सब देखैं, चारौं आराधननिकरं ॥
पंच महाव्रत दुद्धर धारैं, छहों दरब जानैं सुहितं।
सातभंग वानी मन लावै, पावैं आठ रिद्धि उचितं ॥
नवों पदारथ विधिसौं भाखैं, बंध दशौं चूरन करनं।
ग्यारह शंकर जानै मानै, उत्तम बारह व्रत धरनं ॥
तेरह भेद काठिया चूरे, चौदह गुणथानक लखियं।
महाप्रमाद पंचदश नाशे, शील कषाय सवै नखियं ॥
बंधादिक सत्रह सब चूरे, ठारह जन्म न मरन मुनं।
एक समय उनईस परीषह, बीस प्ररूपनिमें निपुनं ॥
भाव उदीक इकीसौ जानै, वाइस अभखन त्याग करं।
अहिमिंद्र तेईसौं वंदै, इन्द्र सुरग चौबीस वरं ॥४॥
पच्चीसौं भावन नित भावै, छब्बिस अङ्गउपंग पढैं।
सत्ताइससौं विषय विनाशैं अट्ठाईसौं गुण सु बढैं ॥
शीतसमय सर चौपटवासी ग्रीषमगिरिसिर जोग धरैं।
वर्षा वृच्छतरैं थिर ठाडे आठ करम हनि सिद्धि वरैं ॥

दोहा—कहों कहां लों भेद मैं, बुध थोड़ी गुण पूर ।
'हेमराज' सेवक हृदय, भक्ति भरी भरपूर ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुगुरुभ्यो अर्घ्यं निर्व० ॥

अकृत्रिमचैत्यालय पूजा ।

चौपाई ।

आठ करोड़ रु छप्पन लाख । सहस सत्याणव चतुशत भाख ॥
जोड़ इक्यासी जिनवर थान । तीनलोक आह्वान करान ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र अवतरत२ संवौषट्

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटिषट्पञ्चाशल्लक्षसप्तनवति-सहस्र-चतुःशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र तिष्ठत २ । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसंबंध्यष्टकोटि-षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति—अकृत्रिमजिनचैत्यालयानि अत्र मम सन्निहितानि भवत २ वषट् ।

छंद त्रिभंगी ।

क्षीरोदधिनीरं, उज्ज्वल क्षीरं, छान सुचीरं, भरि झारी ।
अति मधुरलखावन, परम सुपावन, तृषा बुझावन, गुण भारी ॥
वसुकोटि सु छप्पन लाख सताणव, सहस चारशत इक्यासी ॥
जिनगेह अकीर्तिम तिहुं जगभीतर, पूजत पद ले अविनाशी ॥१॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि षट्पञ्चाशल्लक्ष सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्य जलं निर्वपामि० ॥१॥

मलयागर पावन, चंदन बावन, तापबुझावन, घसि लीनो ।
धरि कनककटोरी, द्वै कर जोरी, तुमपद ओरी, चित दीनो ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो चंदनं निर्व० ॥२॥

बहुभांति अनोखे, तंदुल चोखे, लखि निरदोखे, हम लीने ।
धरि कंचनथाली, तुमगुणमाली, पुंजविशाली कर दीने ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षटपञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीतिअकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षतान् निर्व० ॥३॥

शुभ पुष्प सुजाती, है बहु भांति, अलि लिपटाती लेय वरं ।
धरि कनक-रकेबी करगह लेवी, तुमपद जुगकी, भेट धरं ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्य. पुष्पं निर्व० ॥३॥

खुरमा गिंदौड़ा, बरफी पेडा, घेवर मोदक, भरि थारी ।
विधिपूर्वक कीने, घृतपयभीने, खंड में लीने सुखकारी ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षटपञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः नैवेद्यं निर्व० ॥५॥

मिथ्यात महातम, छाय रह्यो हम, निजभव परणति, नहिं सूजे ।
इह कारण पाकैं दीप सजाकैं, थाल धराकैं, हमपूजे ॥वसु०॥६॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्य दीपं निर्व० ॥६॥

दशगंध कुटाके, धूप बनाके, निजकर लेके, धरि ज्वाला ।
वसु धूम उड़ाई दशदिश छाई, वहु महकाई, अति आला ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः धूपं निर्व० ॥७॥

वादाम छुहारे, श्रीफल धारे, पिस्ता प्यारे; द्राखवरं ।
इनआदि अनोखे; लखिनिरदोखे, थालपजोखे, भेट धरं ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः फलं निर्व० ॥८॥

जल चंदन तंदुल, कुसुम रु नेवज, दीप धूप फल, थाल रचौं ।
जयघोष कराऊँ, बीन वजाऊँ, अर्घ चढाऊँ, खूब नचौं ॥वसु०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि-षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र-चतु शतैकाशीति अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योः अर्घ्यं निर्व० ॥९॥

अथ प्रत्येक अर्घ (चौपाई)

अधोलोक जिन आगमसाख । सात कोड़ि अरु वहतर लाख ॥
श्रीजिनभवनमहा छवि देई । ते सब पूजौं वसुविधि लेई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अधोलोकसम्बन्धि सप्तकोटि-द्विसप्तति-लक्षाकृत्रिम श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व० ॥१॥

मध्यलोक जिन मंदरठाठ । साढेचारशतक अरु आठ ॥
ते सब पूजों अर्घ चढाय । मनवचतन त्रयजोग मिलाय ॥२॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धि चतुःशताष्टपञ्चाशत श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामी० ।२॥

अडिल्ल—उर्द्ध लोक के मांहि भवनजिन जानिये,
लाख चौरासी सहस सत्यानव मानिये।
तापै धरि तेईस जजों शिरनायकैं,
कंचनथालमझार जलादिक लायकैं ॥३॥

ॐ ह्रीं उर्द्धलोकसम्बन्धि चतुरशीतिलक्ष-सप्तनवतिसहस्र-त्रयोविंशति श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं ॥३॥

गीताछन्द—वसुकोटि छप्पनलाख ऊपर, सहससत्याणव मानिये।
शतच्यारपैं गिनले इक्यासी, भवनजिनवर जानिये ॥
तिहुं लोकभीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करैं।
तिन भवनको हम अर्घ लेकैं, पूजि हैं जगदुख हरैं ॥४॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि षट्पञ्चाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र चतुशतैकाशीति-अकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व० ॥४॥

अथ जयमाला।

दोहा—अब वरणूं जयमालिका, सुनो भव्य चित लाय।
जिनमंदिर तिहुं लोकके, देहुं सकल दरशाय ॥

पद्धडि छन्द।

जय अमल अनादि अनंत जान। अनिमितजु अकीर्तम अचल मान।
जय अजय अखंड अरूपधार। षट् द्रव्य नहीं दीसै लगार ॥२॥
जय निराकार अविकार होय। राजत अनंत परदेश सोय।
जय शुद्ध सुगुण अवगाह पाय। दशदिशामांहि इहविध लखाय ॥३॥
यह भेद अलोकाकाश जान। तामध्य लोक नभ तीन मान ॥

स्वयमेव बन्यौ अविचल अनंत। अविनाशि अनादि जु कहत संत ।४
पुरुषाअकार ठाडो निहार। कटि हाथ धारि द्वै पग पसार ॥
दच्छिन उत्तरदिशि सर्व ठौर। राजू जु सात भाख्यो निचोर ॥५॥
जय पूर्व अपर दश घाटवाधि। सुन कथन कहूँ ताको जु साधि ॥
लखि श्वभ्रतलें राजू जु सात। मधिलोक एक राजू रहात ॥ ६ ॥
फिर ब्रह्मसुरग राजू जु पांच। भू सिद्ध एक राजू जु सांच ॥
दश चार ऊँच राजू गिनाय। षट्द्रव्य लये चतु कोण पाय ॥ ७ ॥
तसु वातवलय लपटाय तीन। इह निराधार लखिवो प्रवीन ॥
त्रसनाडी तामधि जान खास। चतुकोन एक राजू जु व्यास ॥८॥
राजू उतंग चौदह प्रमान। लखि स्वयंसिद्ध रचना महान ॥
तामध्य जीव त्रस आदि देव। निज थान पाय तिष्ठे भलेय ॥६॥
लखि अधोभागमे श्वभ्रथांन। गिन सात कहे आगम प्रमान ॥
षटथानमांहि नारकि वसेय। इक श्वभ्रभाग फिर तीन भेय ॥१०॥
तसु अधो भाग नारकि रहाय। फुनि उर्ध्वभाग द्वय थान पाय ॥
वस रहे भवन व्यंतर जु देव। पुर हर्म्य छजै रचना स्वयमेव ॥११॥
तिह थान गेह जिनराज भाख। गिन सातकोटि बहत्तर जु लाख ॥
ते भवन नमों मनवचन काय। गतिश्वभ्रहरन हारे लखाय ॥१२॥
पुनि मध्यलोक गोलाअकार। लखि दीप उदधि रचना विचार ॥
गिन असंख्यात भाखे जुमंत। लखि संभुरमन सबके जुअंत ॥१३॥
इक राजुव्यासमें सर्व जान। मधिलोकतनों इह कथन मान ॥
सबमध्य द्वीप जंबू गिनेय। त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय ॥१४॥
इन तेरह में जिनधाम जान सतचार अठावन हैं प्रमान ॥
खग देव असुर नर आय आय। पद पूज जाय शिर नाय नाय॥ ५॥

जय उर्द्ध लोकसुर कल्पवास । तिह थानं छजे जिन भवन खास ॥
जय लाखचुरासीपै लखेय । जय सहस सत्याणव और ठेय ॥१६॥
जय बीसतीन पुनि जोड़ देय । जिन भवन अकीर्तम जान लेय ॥
प्रतिभवन एक रचना कहाय । जिनबिंब एक शत आठ पाय ॥१७॥
शतपंच धनुष उन्नत लसाय । पद्मासन युत वर ध्यान लाय ॥
शिर तीन छत्र शोभित विशाल । त्रय प्रादपीठ मणिजटित लाल ॥
भामंडलकी छवि कौन गाय । पुनि चंवरढुरत चौसठि लखाय ॥
जय दुंदुभिरव अद्भुत सुनाय । जयपुष्पवृष्टि गंधोदकाय ॥१६॥
जय तरुअशोक शोभा भलेय । मंगल विभूति राजत अमेय ।
घटतूप छजे मणिमाल पाय । घटधूमधूम्र दिग सर्व छाय ॥२०॥
जयकेतुपंक्ति सोहै महान । गंधर्वदेव गुन करत गान ॥
सुर जनम लेत लखि अवधि पाय । तिस थान प्रथम पूजन कराय ॥
जिन गेहतनो वरनन अपार । हम तुच्छबुद्धि किम लहत तार ॥
जयदेव जिनेसुर जगत भूप । नमि 'नेम' मंगैं निज देहु रूप ॥२२॥

दोहा—तीनलोकमें सासते, श्रीजिनभवन विचार ।
मनवचतन करि शुद्धता, पूजों अरघ उतार ॥२३॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटि षटपंचाशल्लक्षे सप्तनवतिसहस्र-चतुःशतैकाशीति अकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्व० ॥२३॥

तिहुं जगभीतर श्रीजिनमंदिर, बने अकीर्तम अति सुखदाय ।
नर सुर खग करि वंदनीक जे, तिनको भविजन पाठ कराय ॥

धनधान्यादिक संपति तिनके, पुत्रपौत्र सुख होत भलाय ।
चक्री सुर खग इन्द्र होयके, करम नाश शिवपुर सुख थाय ।२४।
(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्व० त्यागी दौलतरामजी वर्णी कृत

श्री ऋषि-मण्डल पूजा

स्थापना ॥ दोहा ॥

चौबीस जिन पद प्रथम नमि, दुतिय सुगणधर पाय ।
तृतिय पञ्च परमेष्ठि को, चौथे शारद माय ॥
मन वच तन ये चरन युग, करहुँ सदा परनाम ।
ऋषि मण्डल पूजा रचों, बुधि बल द्यो अभिराम ॥

अडिल्ल छन्द—चौबीस जिन वसु वर्ग पञ्च गुरु जे कहे ।
रत्नत्रय चव देव चार अवधी लहे ॥
अष्ट ऋद्धि चव दोय सूर ह्रीं तीन जू ।
अरहंत दश दिग्पाल यन्त्र मे लीन जू ॥

दोहा—यह सब ऋषि मण्डल विषै, देवी देव अपार ।
तिष्ठ तिष्ठ रक्षा करो, पूजूं वसु विधि सार ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि चौवीसतीर्थङ्कर, अष्टवर्ग अर्हदादि पञ्चपद, दर्शनज्ञानचारित्रसहितचतुर्निकायदेव, चारप्रकार अवधिधारक श्रमण, अष्टऋद्धिसंयुक्त चतुर्विंशति सूरि, तीन ह्रीं, अर्हद् विम्ब, दशदिग्पाल यन्त्रसम्बन्धिपरमदेवः अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक

क्षीर उदधि समान निर्मल तथा मुनि-चित सारसो।
भरभृङ्ग मणिमय नीर सुन्दर तृषा तुरित निवारसों॥
जहँ सुभग ऋषि मण्डल विराजै पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्नमें दुख नहिं कदा॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय यन्त्रसम्बन्धिपरमदेवाय जलं॥१॥

मलय चन्दन लाय सुन्दर गंध सों अलि झंकरै।
सो लेहु भविजन कुंभ भरिके तप्त दाह सबै हरै॥
जहं सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ चन्दनं॥

इन्दु किरण समान सुन्दर ज्योति मुक्ता की हरै।
हाटक रकेवी धारि भविजन अखय पद प्राप्ती करै॥
जहँ सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ अक्षतं॥

पाटल गुलाब जुही चमेली मालती वेला घने।
जिस सुरभिते कलहंस नाचत फूल गुंथि माला बने॥
जहं सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ पुष्पं॥

अर्द्ध चन्द्र समान फेनी मोदकादिक ले घने।
घृतपक्व मिश्रित रस सु पूरे लख क्षुधा डायनि हने॥
जहं सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥नैवेद्य॥

मणि दीप ज्योति जगाय सुन्दर वा कपूर अनूपकं।
हाटक सुथाली मांहि धरिकें वारि जिनपद भूपकं॥
जहं सुभग ऋषि० ॥ तिस मनो० ॥ दीप॥

चन्दन सु कृष्णागरु कपूर मंगाय अग्नि जराइये।
सो 'धूप-धूम्र' आकाश लागी मनहुं कर्म उड़ाइये॥

जहं सुभग ऋषि० ॥ तिसमनो० ॥ धूपं ॥

दाडिम सु श्रीफल आम्र कमरख और केला लाइये।
मोक्ष फल के पायवे को आश धरि करि आइये॥
जहं सुभग ऋषि० ॥ तिसमनो० ॥ फलं ॥

जल फलादिक द्रव्य लेकर अर्घ सुन्दर कर लिया।
संसार रोग निवार भगवन वारि तुम पद में दिया॥
जहं सुभग ऋषि मण्डल विराजैं पूजि मन वच तन सदा।
तिस मनोवांछित मिलत सब सुख स्वप्न में दुख नहिं कदा॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय यन्त्रसम्बन्धिपरमदेवाय अर्घ्यं ॥६॥

अर्घावली

अडिल्ल छंद—वृषभ जिनेश्वर आदि अन्त महावीरजी,
ये चउवीस जिनराज हरैं भवपीरजी।
ऋषि मण्डल बिच ह्रीं विषैं राजैं सदा।
पूजूं अर्घ बनाय होय नहिं दुख कदा॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशनसमर्थाय वृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकर-परमदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि कवर्ग सु अन्तजानि शाषासहा,
ये वसुवर्ग महान यन्त्र मे शुभ कहा।
जल शुभ गन्धादिक वर द्रव्य मंगायके,
पूजहु दोउ करजोर शीश निज नायके॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय कवर्गादिअष्टवर्ग सहिताय ह्म्ल्व्र्यूं परम यन्त्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कामिनी मोहिनी छन्द

परम उत्कृष्ट परमेष्ठी पद पांच को,
नमत शत इन्द्र खगवृन्द पद सांच को।
तिमिर अवनाश करण को तुम अर्क हो,
अर्घ लेय पूज्य पद देत बुद्धि तर्क हो॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय पंचपरमेष्ठिपरमदेवाय अर्घ्यं॥

सुन्दरी छन्द

सुभग सम्यग दर्शन ज्ञान जू, कह चारित्र सुधारक मान जू।
अर्घ सुन्दर द्रव्य सु आठ ले, चरण पूजहुँ साज सु ठाठ ले॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगीता छन्द

भवनवासी देव व्यंतर जोतिषी कल्पेन्द्र जू,
जिनगृह जिनेश्वर देव राजै रत्न के प्रतिबिम्ब जू।
तोरण ध्वजा घण्टा विराजै चँवर ढरत नवीन जू,
वर अर्घ ले तिन चरण पूजों हर्ष हिय अति लीन जू॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय भवनेन्द्र व्यंतरेन्द्र-ज्योतिषेन्द्र-कल्पेन्द्रचतु प्रकारदेवगृहेभ्य श्रीजिनचैत्यालयसंयुक्तेभ्यो अर्घं०।

दोहा—अवधि चार प्रकार मुनि, धारत जे ऋषिराय।
अर्घ लेय तिन चरण जजि, विघन सघन मिट जाय॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यः चतुःप्रकारअवधिधारक-मुनिभ्यो अर्घ्यं॥

भुजंगप्रयात छन्द

कही आठ ऋद्धि धरे जे मुनीशं,
महा कार्यकारी बखानी गनीशं॥

जल गंध आदि दे जजों चर्न नेरे,
लहीं सुख सबेरे हरो दुःख फेरे॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यो अष्टऋद्धिसहितमुनिभ्यो अर्घ्यं०।

श्री देवी प्रथम बखानी, इन आदिक चौबीसों मानी।
तत्पर जिन भक्ति विषै हैं, पूजत सब रोग नशै हैं॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यः श्रीआदिचतुर्विंशतिदेवीभ्यो अर्घ्यं समर्चयामि।

हंसा छंद

यन्त्र विषै वरन्यो तिरकोन, ह्रीं तहँ तीन युक्त सुखभोन।
जल फलादि वसु द्रव्य मिलाय, अर्घ सहित पूजूं शिरनाय॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशसमर्थाय त्रिकोणमध्ये तीन ह्रीं संयुक्ताय अर्घ्यं०

तोमर छन्द

दस आठ दोष निरवारि, छियालीस महागुण धारि।
वसु द्रव्य अनूप मिलाय, तिन चर्न जजों सुखदाय॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय अठारहदोषरहिताय छीयालीस महागुणयुक्ताय अर्हद्परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं।

सोरठा

दश दिश दश दिग्पाल, दिशानाम सो नामवर।
तिनगृह श्रीजिन आल, पूजों मैं वन्दों सदा॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्यः दशदिग्पालेभ्यः जिनभक्तियुक्तेभ्यो अर्घ्यं समर्पयामि।

दोहा—अपि मण्डल शुभयन्त्र के, देवी देव चितारि।
अर्घ सहित पूजहुं चरन, दुख दारिद्र निवारि॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थेभ्य ऋषिमण्डल सम्बन्धिदेवी-देवेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा—चौबीसों जिन चरन नमि, गणधर नाऊं भाल।
शारद पद पंकज नमूं, गाऊं शुभ जयमाल॥

जय आदीश्वर जिन आदिदेव, शत इन्द्र जजैं मैं करहुं सेव।
जय अजित जिनेश्वर जै अजीत, जे जीत भये भव तें अतीत॥
जय संभव जिन भवकूप माहि, डूबत राखहु तुम शर्ण आहि।
जय अभिनन्दन आनन्द देत, ज्यों कमलों पर रवि करत हेत॥
जय सुमति सुमति दाता जिनन्द, जै कुमति तिमिर नाशन दिनंद।
जय पद्मालंकृत पद्मदेव, दिनरैन करहुं तव चरन सेव॥
जय श्री सुपार्श्व भवपाश नाश, भवि जीवन कूं दियो मुक्तिवास
जय चंद जिनेश दया निधान, गुणसागर नागर सुख प्रमान॥
जय पुष्पदन्त जिनवर जगीश, शत इन्द्र नमत नित आत्मशीश।
जय शीतल बच शीतल जिनन्द, भवताप नशावत जगत चन्द॥
जय जय श्रेयांस जिन अति उदार, भवि कंठ मांहि मुक्ता सुहार।
जय वासुपूज्य वासव खगेश, तुम स्तुति करि पुनि नमि हैं हमेश॥
जय विमल जिनेश्वर विमलदेव, मल रहित विराजत करहुं सेव।
जय जिन अनंतके गुण अनंत, कथनी कथ गणधर लहे न अंत॥
जय धर्म धुरंधर धर्मधीर, जय धर्म चक्र शुचि ल्याय वीर।
जय शांति जिनेश्वर शान्तभाव, भव वन भटकत शुभ मग लखाव॥
जय कुन्थु कुन्थवा जीव पाल, सेवक पर रक्षा करि कृपाल।
अरहनाथ अरि कर्म शैल, तपवज्र खण्ड लहि मुक्ति गैल॥
जय मल्लि जिनेश्वर कर्म आठ, मल डारे पायो मुक्ति ठाठ।
जय सुव्रत मुनिसुव्रत धरन्त, जय सुव्रत व्रत पालत महन्त॥

जय नम्मि नमत सुर बृन्द पाय, पद पंकज निरखत शीश नाय।
जय नेमि जिनन्द दयानिधान, फैलायो जग में तत्त्वज्ञान॥
जय पारस जिन आलस निवारि, उपसर्ग रुद्र कृत जीत धारि।
जय महावीर महाधीरधार, भवकूप थकी जग तैं निकार॥
जय वर्ग आठ सुन्दर अपार तिन भेद लखत वुध करत सार।
जय परमपूज्य परमेष्ठि सार, जिन सुमरत वरसे आनन्द धार॥
जय दर्शन ज्ञान चरित्र तीन, ये रत्न महा उज्ज्वल भवीन।
जय चार प्रकार सुदेव सार, तिनके गृह जिन मन्दिर अपार॥
जो पूजै वसुविधि द्रव्य लाय, मैं इत जजि तुम पद शीश नाय।
जो मुनिवर धारत अवधि चारि, तिन पूजैं भवि भवसिन्धु पार॥
जो आठ ऋद्धि मुनिवर धरन्त, ते मोपै करुणा करि महन्त।
चौवीस देवी जिन भक्ति लीन, वन्दन ताको सु परोक्ष कीन॥
जे ह्रीं तीन त्रैकोण मांहि, तिन नमत सदा आनन्द पाहिं।
जय जय जय श्री अरहंत बिंब, तिन पद पूजूं मैं खोइ डिंब॥
जो दस दिग्पाल कहें महान, जे दिशा नाम सो नाम जान।
जे तिनके गृह जिनराज धाम, जे रत्नमई प्रतिमाभिराम॥
ध्वज तोरन घण्टा युक्तसार, मोतिन माला लटके अपार।
जे ता मधि वेदी हैं अनूप, तहँ राजत हैं जिनराज भूप॥
जय मुद्रा शान्ति विराजमान, जा लखि वैराग्य वढे महान।
जे देवी देव सु आय आय, पूजें तिन पद मन वचन काय॥
जल मिष्ट सु उज्ज्वल पय समान, चंदन मलयागिरि को महान।
जै अक्षत अनियारे सुलाय, जे पुष्पन की माला वनाय॥
चरु मधुर विविध ताजी अपार, दीपक मणिमय उद्योतकार।

जे धूप सु कृष्णागरु सुखेय, फल विविध भांति के मिष्ट लेय ॥
वर अर्घ अनूपम करत देव, जिनराज चरण आगे चढ़ेव ।
फिर मुखतैं स्तुनि करते उचार, हो करुणानिधि संसार तार ॥
मैं दुख सहे संसार ईश, तुमतैं छानी नांहीं जगीश ।
जे इह विधि मौखिक स्तुति उचार, तिन नशत शीघ्र संसार भार ॥
इह विधि जो जन पूजन कराय, ऋषि मंडल यंत्र सु चित्त लाय ।
जे ऋषि मण्डल पूजा करन्त, ते रोग शोक संकट हरन्त ॥
जे राजा रन कुल वृद्धि जान, जल दुर्ग सुगज केहरि बखान ।
जे विपत घोर अरु कहि मसान, भय दूर करैं यह सकल जान ॥
जे राजभ्रष्ट ते राज पाय, पद भ्रष्ट थकी पद शुद्ध थाय ।
धन अर्थी धन पावै महान, यामें संशय कछु नांहि जान ॥
भार्या अर्थी भार्या लहन्त, सुत अर्थी सुत पावे तुरन्त ।
जे रूपा सोना ताम्रपत्र, लिख तापर यन्त्र महा पवित्र ॥
ता पूजैं भागे सकल रोग, जे वात पित्त ज्वर नाशि शोग ।
तिन गृह तैं भूत पिशाच जान, ते भाग जांहि संशय न आन ॥
जे ऋषि मण्डल पूजा करन्त, ते सुख पावत कहि लहै न अन्त ।
जब ऐसो मैं मन मांहि जान, तब भाव सहित पूजा सुठान ॥
वसुविधि से सुन्दर द्रव्य ल्याय, जिनराज चरण आगे चढ़ाय ।
फिर करत आरती शुद्ध भाव, जिनराज सभी लख हर्ष आव ।
तुम देवन के हो देव देव, इक अरज चित्त में धारि लेव ॥
जे दीन दयाल दया कराय, जो मैं दुखिया इह जग भ्रमाय ।
जे इस भव वन में वास लीन, जे काल अनादि गमाय दीन ॥
मैं भ्रमत चतुर्गति विपिन मांहि, दुख सहे सुख को लेश नांहि ।

ये कर्म महारिपु जोर कीन, जे मनमाने ते दु:ख दीन॥
ये काहू को नहिं डर धराय, इनतैं भयभीत भयो अघाय।
यह एक जन्म की बात जान, मैं कह न सकत हूं देवमान॥
जब तुम अनन्त परजाय जान, दरशायो संसृति पथ विधान।
उपकारी तुम बिन और नांहि, दीखत नाहीं इस जगत मांहि।
तुम सब लायक ज्ञायक जिनन्द, रत्नत्रय सम्पति द्यो अमन्द॥
यह अरज करूं मैं श्री जिनेश, भव भव सेवा तुम पद हमेश।
भव भव में श्रावक कुल महान, भव भव में प्रकटित तत्त्वज्ञान॥
भव भव में वृत हो अनागार, तिस पालन तैं हों भवाब्धि पार॥
ये योग सदा मुझको लहान, हे दीनबन्धु करुणा-निधान।
"दौलत ओसेरी" मित्र दोय, तुम शरण गही हरषित सुहोय॥

छन्द घत्ता

जो पूजे ध्यावे भक्ति बढ़ावे,
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र तनी॥
या भव सुख पावे, सुजस लहावे,
पर भव स्वर्ग सुलच्छ धनी॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवविनाशनसमर्थाय रोगशोक-सर्व-सङ्कट-हराय सर्वशान्तिपुष्टिकराय, श्रीवृषभादि चौबीस तीर्थङ्कर अष्ट वर्ग अरहंतादि पंचपद दर्शन ज्ञान चारित्र सहित चतुर्णिकाय देव चव प्रकार अवधिधारक श्रमन अष्ट ऋद्धि संयुक्त बीस चार सूरितीन ह्रीं अर्हद्बिम्ब दशादिग्पाल यंत्र सम्बन्धि परमदेवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

आशीर्वाद

ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र को, जो पूजे मन लाय ॥
ऋद्धि सिद्धि ता घर वसै, विघन सघन मिट जाय ।
विघन सघन मिट जाय, सदा सुख वो नर पावै ।
ऋषि मण्डल शुभ यन्त्र तनी, जो पूज रचावै ॥
भाव भक्ति युत होय, सदा जो प्राणी ध्यावै ।
या भव में सुख भोग, स्वर्ग की सम्पति पावै ॥
या पूजा परभाव मिटे, भव भ्रमण निरन्तर ।
यातैं निश्चय मान करो, नित भाव भक्तिधर ॥

इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

— इति श्री ऋषि मण्डल पूजा सम्पूर्णम् —

श्रीतीसचौबीसीजी की पूजा ।

पांच भरत शुभ क्षेत्र पांच ऐरावते,
आगत-नागत वर्त्तमान जिन सास्वते ।
सो चौबीसी तीस जजूं मन लायके,
आह्वानन विधि करूं बार त्रय गायके ॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धी- पंचभरत–पचऐरावत–क्षेत्रस्था भूतानागतवर्त्तमान-सम्बन्धिसप्तविंशतितीर्थंकरा अत्र अवतरत २ संवौषट् इति आह्वाननं । अत्र तिष्ठत २ ठ. ठः स्थापनं । अत्र मम सन्निहिता भवत २ वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक ।

नीर दधि क्षीर सम ल्यायो, कनक को भृङ्ग भरवायो ।
अबै तुम चरण ढिंग आयो, जन्म-मृत्यु रोग नशवायो ॥

द्वीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दस ता विषैं छाजै।
सात शत वीस जिनराजै, पूजतां पाप सब भाजैं ॥१॥

ॐ ह्रीं पंचभरत-पंचैरावत-क्षेत्रस्थ-भूतानागत-वर्त्तमानकाल संबंधिसप्तशतविंशतितीर्थंकरेभ्य: जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभिजुत चंदनं ल्यायो, संग करपूर घसवायो।
धार तुम चरण ढरवायो, भव-आताप नशवायो ॥द्वीप०॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ वीस जिनेंद्रेभ्य: नमः चन्दनं नि०।

चन्द्रसम तन्दुलं सारं, किरण मुक्ता जु उनहारं।
पुञ्ज तुम चरण ढिग धारं, अक्षयपद प्राप्तिके कारं ॥द्वीप०॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ वीस जिनेन्द्रेभ्यः नमः अक्षतं नि०।

पुष्प शुभ गन्धजुत सोहे, सुगन्धित तासु मन मोहे।
जजत तुम मदन क्षय होवे, मुक्तिपुर पलकमें जोवे ॥द्वीप०॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ वीस जिनेन्द्रेभ्यः नमः पुष्पं नि०।

सरस व्यञ्जन लिया ताजा, तुरत बनवाइया खाजा।
चरन तुम जजत महाराजा, क्षुधा-दुख पलकमें भाजा ॥द्वीप०॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ वीस जिनेंद्रेभ्य: नमः नैवेद्यं नि०।

दीप तम नाशकारी है, सुरभि शुभ जोतिधारी है।
दशों दिश कर उजारी है, धूम्र मिस पाप छारी है ॥द्वीप०॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यः नमः दीपं नि० ।

सुगन्धित धूप दस अंगी, जलाऊँ अग्निके संगी ।
करमकी सैन्य चतुरंगी, पूजतैं पाप सब भङ्गी ।। द्वीप० ।।

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यः नमः धूपं नि० ।

मिष्ट उत्कृष्ट फल ल्यायो, अष्ट अरि दुष्ट नशवायो ।
श्रीजिन भेंट धरवायो, कार्य मनवांछित पायो ।। द्वीप० ।।

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यः नमः फलं नि० ।

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ करमें जु कीना है ।
पूजतैं पाप छीना है, 'भानमल' जोड़ कीना है ।। द्वीप० ।।

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं नि० ।

प्रत्येक अर्घ ।

जम्बूद्वीपकी प्रथममेरुकी, दक्षिणदिशा भरत शुभ जान ।
तहाँ चौबीसी तीन विराजें, आगत नागत औ वर्तमान ।।
तिनके चरणकमलको निशिदिन, अर्घ चढ़ाय करूँ उर ध्यान ।
इस संसार भ्रमणतें तारो, अहो जिनेश्वर ! करुणावान !

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुकी दक्षिण दिशा भरत क्षेत्र संबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्य नमः अर्घ्यं ।

सुदर्शन मेरुकी उत्तर दिशमें, ऐरावत क्षेत्र शुभ जान।
आगत नागत वर्तमान जिन, बहतर सदा सास्वते जान॥
तिनके चरणकमलको निशिदिन अर्घ चढ़ाय करूं उरध्यान।
इस संसार भ्रमणतैं तारो अहो जिनेश्वर! करुणावान॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु की उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः नमः अर्घ्यं।

खण्ड धातकी विजय मेरुके, दक्षिण दिशा भरत शुभ जान।
तहां चौबीसी तीन विराजे, आगत नागत अरु वर्तमान॥तिन०

ॐ ह्रीं धातकीखण्ड द्वीपकी पूर्व दिशि विजय मेरुकी दक्षिण दिशि भरतक्षेत्र सम्बन्धी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्योऽर्घ्यं।

इसी द्वीपकी प्रथम शिखरकी, उत्तर ऐरावत जु महान।
आगत नागत वर्तमान जिन, बहत्तरि सदा सासते जान॥
तिनके चरण कमलको निशदिन, अर्घ चढ़ाय करूं उरध्यान।
इस संसार भ्रमणतैं तारो, अहो जिनेश्वर! करुणावान॥

ॐ ह्रीं धातकी खन्ड द्वीपकी पूर्व दिशि विजय मेरुकी उत्तर दिशि ऐरावतक्षेत्र संबन्धी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेंद्रेभ्योऽर्घ्यं।

❀ चौपाई ❀

खंड धातकी अचल सुमेर, दक्षिण तास भरत चहुँ घेर।
तामें चौबीसी त्रय जान आगत नागत अरु वर्तमान॥

ॐ ह्रीं धातकी खण्ड द्वीपकी पश्चिमदिशा अचलमेरु की दक्षिणदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धी तीनचौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः नमः अर्घ्यम्।

अचल मेरु उत्तर दिश जान, ऐरावत शुभ क्षेत्र बखान।
तामें चौबीसीत्रय जान, आगत नागत अरु वर्तमान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डकी पश्चिमदिशा अचलमेरु की उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्रसंबंधी तीनचौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्य नम' अर्घ्यं

सुन्दरी छंद

द्वीप पुष्कर की पूरव दिशा, मंदिर मेरुकी दक्षिण भरतसा।
ताविषै चौबीसी तीन जू, अर्घ लेय जजूं परवीन जू ॥

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीपकी पूर्वदिशा अचलमेरुकी दक्षिणदिशा भरतक्षेत्रसम्बन्धी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनालयेभ्यः नमः अर्घ्यम्।

गिरि सु मन्दिर उत्तर जानिये, ताके पूर्व दिशा बखानिये।
ताविषे चौबीसी तीन जू, अर्घ लेय जजूं परवीन जू ॥

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीपकी पूर्वदिशा मन्दरमेरुकी उत्तरदिशा ऐरावतक्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः नम. अर्घ्यं।

पद्धरि छन्द

पश्चिम पुष्करगिरि विद्युतमाल, ताके दक्षिण भरतसुविशाल।
तामें चौबीसी हैं जु तीन, वसु द्रव्य लेय पूजों प्रवीन ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप की पश्चिम दक्षिण दिशा भरतक्षेत्रसंबंधी तीन चौबीसी के बहत्तर जिनेन्द्रेभ्यः नम' अर्घ्यम्।

याही गिरिके उत्तर जु ओर, ऐरावत क्षेत्र बनो निहोर।
तामें चौबीसी है जु तीन, वसु द्रव्य लेय पूजों प्रवीन ॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्करार्द्ध द्वीपकी पश्चिम दिशा विद्युत माली मेरुकी उत्तर दिशा ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी तीन चौबीसीके बहत्तर जिनेन्द्रेभ्य' नमः अर्घ्यम्।

द्वीप अढ़ाईके विषै, पंचमेरु हित दाय।
दक्षिण उत्तर तासकै, भरत ऐरावत भाय।
भरत ऐरावत भये, एक क्षेतरके मांही।
चौवीसी हैं तीस, दसों दिशि ही के ठांही॥
दसों क्षेत्रके तीस सातसौ बीस जिनेश्वर।
अर्घ लेय करजोडि जजों मन मुदित कर॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी भरतैरावत क्षेत्रके विषै तीन चौवीसी के सातसैं बीस जिनेन्द्रेभ्यः नम अर्घ्यं नि०।

जयमाला।

दोहा—चौवीसी तीसों नमों, पूजा परम रसाल।
मन-वच-तन को शुद्धकरि, अब वरणो जयमाल॥

जय द्वीप अढ़ाई मध्य सार, गिरि पांच मेरु उन्नत अपार।
तागिरि पूरव-पश्चिम जु ओर, शुभ क्षेत्र विदेह बसै जु ठौर॥
ता दक्षिण क्षेत्र भरत सु जानि, है उत्तर ऐरावत महान।
गिरि पांचतनें दश क्षेत्र जोय, ताको वरनन सब सुनो लोय॥
है भरतक्षेत्र दक्षिण जुव्यास, ऐरावत ताहि प्रमाण भास।
इक क्षेत्र बीच विजयार्द्ध एक, ता ऊपर विद्याधर अनेक॥
इस क्षेत्र विषें षट खंड जानि, तहां छहोंकाल बरतै महान।
जो तीन कालमे भोग भूमि, दसजाति कल्पतरु रहे भूमि॥
जब चोथो काल लगै जु आय, तब कर्म भूमि वर्तै सुभाय।
तब तीर्थङ्कर को जन्म होय, सुरलेय जजें गिरि पर सुजोय॥
बहु भक्ति करें सब देव आय, ताथेई थेई थेई की तान लाय।
हरि तांडव नृत्य करे अपार, सब जीवन मन आनन्दकार॥

इत्यादि भक्ति करिके सुरेन्द्र, निजथान जाय जुत देव वृन्द।
याहीविधि और कल्यान जान हरिभक्ति करै अति हर्ष ठान॥
या कालविषै पुण्यवंत जीव, नरजन्मधार शिव लहै अतीव।
जे त्रेसठ पुरुष प्रधान होय, सब याही काल विषै जु होय॥
जब पञ्चमकाल करे प्रवेश, मुनि धर्म रहे कहु २ प्रदेश।
विरले कोइ दक्षिन देश मांहि, जिनधर्मी नर बहुते जु नाहिं॥
जब षष्ठम काल करे प्रवेश, दुख ही दुख व्यापै सर्व देश।
तब मांस भक्षी नर सर्व होय, जहँ धर्म नाम सुनिये न कोय॥
या विधि दश क्षेत्र मझार सार, इह काल फिरन सब एक सार।
हृद पर्वत नदि रचना प्रमान, आगम अनुकूल लखो सुजान।
इक क्षेत्र चौबीसी तीन जान, आगत नागत अरू वर्तमान॥
दश क्षेत्र सात शत जोड़ बीस, नित बन्दन करुं कर जोड़ शीश॥
सबही जिनराज नमौं त्रिकाल, मोहि भवसागर से लेहु निकाल।
ममहृदयमध्य तिष्ठो जिनेश, काटौ भव-फंद जजौं जगेश॥
रविमलकी विनती सुनहु नाथ, तुम शरण लई कर जोडि हाथ।
मनवांछित कारज सार-सार, यह अरज हियमें धार-धार॥
घत्ता-शत सात जु बीसं श्री जगदीशं, आगतनागत वर्त्त जु है।
मन वच तन पूजै, सुध मन हूजै, सुरग मुक्ति पद धरत जु है

ॐ ह्रीं पञ्चमेरु सम्बन्धी दश क्षेत्रनिके विषै तीस चौबीसी के सातसौबीस जिनेन्द्रेभ्यः नम अर्घ्यं नि० ।

दोहा—सम्वत् सत उन्नीस के, ता ऊपर पुनि आठ।
पोष कृष्ण तृतीया गुरू, पूरन भयो जु पाठ॥
अक्षर मात्रा की कसर, बुध जन शुद्ध करेय।

अल्प बुद्धि मोहिजानके, दोष कबहुं नहिं देय ॥
पढ्यो नहीं व्याकरण मैं, पिङ्गल देख्यो नाहिं ।
जिनवाणी परसादतें, उमंग भई घट मांहि ॥
मान बड़ाई ना चहूँ, चहूँ धर्म को अङ्ग ।
नित प्रति पूजा कीजियो, मनमें धरि उमंग ॥
इत्याशीर्वादः ।

रविव्रत पूजा

यह भविजन हितकार, सु रविव्रत जिन कही ।
करहु भव्यजन लोक, सुमत देके सही ॥
पूजों पार्श्व जिनेन्द्र त्रियोग लगाय के ।
मिटै सकल संताप मिले निध आयके ॥
मति सागर इक सेठ कथा ग्रन्थन कही ।
उनही ने यह पूजा कर आनन्द लही ॥
तातें रविव्रत सार, सो भविजन कीजिये ।
सुख सम्पति सन्तान, अतुल निधि लीजिये ॥

दोहा—प्रणमों पार्श्व जिनेश को, हाथ जोड़ शिर नाय ।
परभव सुख के कारने, पूजा करूं बनाय ॥
एतवार व्रत के दिना, एहीं पूजन ठान ।
ता फल स्वर्ग सम्पति लहै, निश्चय लीजे मान ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । अत्र तिष्ठ २ ठ ठः प्रतिष्ठापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्, सन्निधीकरणम् ।

अष्टक।

उज्ज्वल जल भर कर अति लायो रतन कटोरन माहीं।
धार देत अति हर्ष वढावत जन्म जरा मिट जाही॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत के दिन भाई।
सुख सम्पति वहु होय तुरत ही आनन्द मंगल दाई॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०।१
मलयागिरि केशर है अति सुन्दर, कुंकुम रङ्ग वनाई।
धार देत जिन चरनन आगे भवआताप नशाई॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत०। चन्दनम्॥२॥
मोती सम अति उज्ज्वल तन्दुल ल्यायो नीर पखारो।
अक्षयपद के हेतु भावसों श्रीजिनवर ढिंग धारो॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत०। अक्षतं॥ ३॥
बेला अर मचकुन्द चमेली, पारिजात के ल्यावो।
चुन चुन श्रीजिन अग्र चढाऊं मनवांछित फल पावो॥
पारसनाथ जिनेश्वर पूजों रविव्रत०। पुष्पं॥ ४॥
बावर फेनी गुञ्जा आदिक, घृत में लेत पकाई।
कंचन थार मनोहर भरके, चरनन देत चढाई॥पारस.नैवेद्यं॥
मणिमय दीप रतनमय लेकर जगमग जोति जगाई।
जिनके आगे आरति करके मोह तिमिर नश जाई॥पा.दीपं॥
चूरनकर मलयागिरि चन्दन, धूप दशांग वनाई।
तट पावक में खेय भावसों, कर्मनाश हो जाई॥पारस.धूपं॥

श्रीफल आदि वदाम सुपारी, भांति भांति के लावो ।
श्रीजिनचरन चढाय हरष कर तातें शिवफल पावो ॥पा.फलं॥
जल गन्धादिक अष्ट दरव ले अरघ बनाओ भाई ।
नाचत गावत हर्ष भाव सों कञ्चन थार भराई ॥पा. अर्घ्यं.॥

गीतिका छन्द ।

मन वचन काय विशुद्ध करके, पार्श्वनाथ सु पूजिये ।
जल आदि अर्घ बनाय भविजन, भक्तिवन्त सु हूजिये ॥
पूज्य पारसनाथ जिनवर सकल सुख दातारजी ।
जे करत हैं नरनार पूजा, लहत सौख्य अपारजी ॥अर्घ्यं॥

❀ जयमाला ❀

दोहा—यह जग मे विख्यात है, पारसनाथ महान ।
जिनगुन की जयमालिका, भाषा करौं बखान ॥

पद्धरी छन्द

जय जय प्रणमों श्री पार्श्वदेव, इन्द्रादिक तिनकी करत सेव ।
जय जय सु बनारस जन्म लीन, तिहुं लोक विषै उद्योत कीन ॥१॥
जय जिनके पितु श्री विश्वसेन, तिनके घर भए सुख चैन एन ।
जय वामा देवी मात जान, तिनके उपजे पारस महान ॥ २ ॥
जय तीन लोक आनन्द देन, भविजन के दाता भए एन ।
जय जिनने प्रभु का शरण लीन, तिनकी सहाय प्रभुजी सो कीन ॥३॥
जय नाग नागनी भये अधीन, प्रभु चरनन लाग रहे प्रवीन ।
तजिके सो देह स्वर्ग सुजाय; धरणेन्द्र पद्मावती भये आय ॥ ४ ॥
जय चोर अञ्जना अधम जान, चोरी तज प्रभुको धरो ध्यान ।

जय मृत्यु भये स्वर्ग सुजाय, ऋद्धी अनेक उनने सो पाय ॥५॥
जय मतिसागर इक सेठ जान, जिन रविव्रत पूजा करी ठान।
तिनके सुत थे परदेश माहिं, जिन अशुभ कर्म काटे सु ताहि ॥६॥
जे रविव्रत पूजन करी सेठ, ता फलकर सबसे भई भेट।
जिन २ ने प्रभु का शरण लीन, तिन रिद्धि सिद्धि पाई नवीन ॥७॥
जे रविव्रत पूजा करहि जेय, ते सौख्य अनन्तानन्त लेय।
धरणेन्द्र पद्मावती हुए सहाय, प्रभु भक्त जान ततकाल आय ॥८॥
पूजा विधान इहिं विध रचाय, मन वचन काय तीनों लगाय।
जे भक्तिभाव जयमाल गाय, सो ही सुख सम्पति अतुल पाय ॥९॥
बाजत मृदंग वीनादि सार, गावत नाचत नाना प्रकार।
तन नन नन नन नन ताल देत, सन नन नन नन सुर भर सुलेत।१०
ता थेई थेई थेई पग धरत जाय, छम छम छम छम घु घरू बजाय।
जे करहि निरत इहि भांत भांत, ते लहहिं सौख्य शिवपुर सुजात।११।

❀ दोहा ❀

रविव्रत पूजा पार्श्व की, करे भविक जन जोय।
सुख सम्पति इह भव लहै, तुरत सुरग पद होय॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि०।

अडिल्ल—रविव्रत पार्श्व जिनेन्द्र पूज भवि मन धरैं।
भव भव के आताप, सकल छिन में टरैं॥
होय सुरेन्द्र नरेन्द्र आदि पदवी लहैं।
सुख सम्पति सन्तान अटल लक्ष्मी रहैं॥
फेर सर्व विध पाय भक्ति प्रभु अनुसरैं।
नाना विध सुख भोग, बहुरि शिवतियवरैं॥

इत्याशीर्वादः।

श्री आदिनाथ जिन पूजा

नाभिराय मरुदेविके नन्दन, आदिनाथ स्वामी महाराज।
सर्वारथसिद्धितै आप पधारे, मध्यम लोक मांहि जिनराज॥
इन्द्रदेव सब मिलकर आये, जन्म-महोत्सव करने काज।
आह्वानन सब विधि मिल करके, अपने कर पूजें प्रभु पांय॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। स्थापन
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट

अथ अष्टक

क्षीरोदधि को उज्ज्वल जल ले, श्रीजिनवर पद पूजन जाय।
जन्म-जरा दुख मेटन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभु के पांय॥
श्रीआदिनाथके चरण-कमलपर, बलि-बलि जाऊँ मन-वच-काय।
हो करुणानिधि भव-दुख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पांय॥
ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०।
मलयागिरि चन्दन दाह निकन्दन, कञ्चनझारीमें भर ल्याय।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, भव-आताप तुरत मिटि जाय॥
श्री आदि०॥ चन्दनं॥
शुभशालि अखंडित सौरभ-मंडित, प्रासुकजलसों धोकरल्याय।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, अक्षय पदकों तुरत उपाय।
श्री आदि०॥ अक्षतं॥

कमल केतुकी बेल चमेली, श्रीगुलाबके पुष्प मँगाय ।
श्रीजीके चरण चढ़ावो भविजन, काम बाण तुरत नशि जाय ॥
श्रीआदि० । पुष्पं ॥

नेवज लीना तुरत रस भीना, श्रीजिनवर आगे धरवाय ।
थाल भराऊँ क्षुधा नशाऊँ, ल्याऊं प्रभुके मंगल गाय ॥
श्रीआदि० ॥नैवेद्यं॥

जगमग जगमग होत दशों दिस, ज्योति रही मन्दिर में छाय । श्रीजीके सन्मुख करत आरती, मोह-तिमिर नासै दुखदाय ॥ श्रीआदि० ॥ दीपं ॥

अगर कपूर सुगन्ध मनोहर चन्दन कूट सुगन्ध मिलाय ।
श्रीजीके सन्मुख खेय धुपायन, कर्म जरे चहुं गति मिट जाय ॥
श्रीआदि० ॥ धूपं ॥

श्रीफल और बदाम सुपारी, केला आदि छुहारा ल्याय ।
महामोक्ष-फल पावन कारन, ल्याय चढ़ाऊँ प्रभुके पांय ॥
श्रीआदि० ॥ फलं ॥

शुचि निरमल नीरं गन्ध सुअक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ॥
श्रीआदि० ॥ अर्घ्यं ॥

पंचकल्याणक

सर्वारथसिद्धितैं चये, मरुदेवी उर आय ।
दोज असित-आषाढ़की, जजूँ तिहारे पाय ।

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत वदी नौमी दिना, जनम्या श्रीभगवान ।
सुरपति उत्सव अति करया, मैं पूजों धर ध्यान ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तृणवत् ऋधि सब छांड़िके, तप धारयो वन जाय ।
नौमी चैत्र असेतकी, जजूं तिहारे पांय ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्या तपकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन वदि एकादशी, उपज्यो केवलज्ञान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों यह थान ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्णाएकादश्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिनाथजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ चतुर्दशि कृष्णकी, मोक्ष गये भगवान ।
भवि जीवोंको बोधिके, पहुंचे शिवपुर थान ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीआदिजिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

आदीश्वर महाराज मैं विनती तुमसे करूं । चारों गति के माहि मैं दुख पायो मो सुनो । अष्ट कर्म मैं हूं एकलो,

यह दुष्ट महादुख देत हो। कबहूँ इतर निगोद में मोकूँ पटकत करत अचेत हो॥ म्हारी दीनतणी सुन वीनती॥१॥ प्रभु कबहुंक पटक्यो नरकमें, जठै जीव महादुःख पाय हो। नित उठि निरदइ नारकी, जठै करत परस्पर घात हो॥ म्हारी०॥२॥ प्रभु-नरकतणा दुख अब कहूँ, जठै करै परस्पर घात हो। कोइ यक बांधै खम्भसों, पापी दे मुद्गरकी मार हो। कोइ यक काटैं करोतसों पापी अंगतणी दोय फाड़ हो। म्हारी०॥३॥ प्रभु यह विधि दुख भुगत्या घणा, फिर गति पाई तिरयंच हो। हिरणा बकरा बाछला पशु दीन गरीब अनाथ हो। म्हारी० ॥४॥ प्रभु मैं ऊँट बलद भैंसा भयो, ज्यांपै लदियो भार अपार हो। नहिं चाल्यो जठै गिर पर्यो, पापी दे सोटनकी मार हो। म्हारी० ॥५॥ प्रभु कोइ यक पुण्य-संजोगसूं, मैं तो पायो स्वर्ग निवास हो। देवांगना सँग रमि रह्यो, जठै भोगनिको परिताप हो॥ म्हारी० ॥६॥ प्रभु संग अप्सरा रमि रह्यो कर कर अति अनुराग हो। कबहुंक नन्दनवन-विषैं, प्रभु कबहुंक वन-गृह मांहि हो। म्हारी०॥७॥ प्रभु यह विधि काल गमायकै, फिर माला गई मुरझाय हो। देव थिति सब घट गई, फिर उपज्यो सोच अपार हो। सोच करंता तन खिर पड्यो, फिर उपज्यो गरभ में जाय हो। म्हारी०॥८॥ प्रभु गर्भतणा दुख अब कहूँ जठै सकडाईकी ठौर हो। हलन-चलन

नहिं कर सक्यो जठै सघन कीच घनघोर हो। म्हारी० ॥६॥ माता खावै चरपरो फिर लागै तन सन्ताप हो। प्रभु जो जननी तातो भखै, फेर उपजे तन संताप हो ॥म्हारी॥१०॥ औंधे मुख भूल्यो रह्यो, फेर निकसन कौन उपाय हो॥ कठिन कठिन कर नीसर्यो, जैसे निसरै जंतीमैं तार हो। म्हारी०॥११॥ प्रभु फिर निकसत ही धरत्यां पड़्यो फिर लागी भूख अपार हो। रोय-रोय बिलख्यो घणो दुख वेदनको नहिं पार हो।म्हारी०॥१२॥ प्रभु दुख मेटन समरथ धनी, यातैं लागूँ तिहारे पांय हो। सेवक अरज करै प्रभू! मोकूँ भवोदधि पार उतार हो॥ म्हारी० ॥१३॥

दोहा—श्रीजीकी महिमा अगम है, कोई न पावै पार।
मैं मति अल्प अज्ञान हौं, कौन करै विस्तार॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—विनती ऋषभ जिनेशकी, जो पढ़सी मन लाय।
सुरगोंमें संशय नहीं, निश्चय शिवपुर जाय॥

इत्याशीर्वाद:।

श्रीपद्मप्रभजिन पूजा ।

छंद रोड़क (मदावलिप्तकपोल)

पदमरागमनिवरनधरन, तनतुङ्ग अढ़ाई,
शतक दंड अखंड, सकल सुर सेवत आई ।
धरनि तात विख्यात सुसीमाजू के नंदन ।
पदमचरन धरि राग सु थापों इतकरि वन्दन ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट्

चाल होलीका

पूजों भावसों, श्रीपदमनाथपद सार, पूजों भावसों ॥टेक॥
गंगाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय ॥
मनवचतन त्रयधार देत ही, जनमजरामृत जाय ।
पूजों भावसों, श्रीपदमनाथपद सार, पूजों भावसों॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्युविनाशनाय जलं नि० ।

मलयागर कपूर चंदन घसि, केशररंग मिलाय ।
भवतपहरन चरनपर वारो, मिथ्यातापं मिटाय ॥पू०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं नि० ।

तंदुल उज्ज्वल गंधअनीजुत, कनकथार भर लाय ।
पुन्ज धरौं तुव चरनन आगैं, मोहि अखयपदपायं ।पू०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

पारजात मंदार कल्पतरुजनित सुमन शुचि लाय ।
समरशूल निरमूलकरनकों, तुम पद पद्म चढाय ।पू०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ।

घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचि भाय ।
क्षुधा रोगनिर्नाशन कारन; जजों हरष उर लाय ।पू०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

दीपकजोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम ।
तिमिरमोह नाशनके कारन, जजों चरन गुनधाम ।पू०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ।

कृष्णागर मलयागर चंदन चूर सुगंध बनाय ।
अगिनमाहिं जारों तुम आगें, अष्टकरम जरि जाय ।पू०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

सुरस-वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार ।
तासों पूजों जुगम चरन यह, विघन करमनिरवार ।पू०।८॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

जल फल आदिमिलाय गाय गुन, भगतभाव उमगाय ।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय ।पू०।९॥

पंचकल्याणक

छंद द्रुतविलंबित तथा सुन्दरी (मात्रा १६)

असित माघ सुछट्ट बखानिये, गरभमंगल ता दिन मानिये।
उरधग्रीवकसौं चय राजजी, जजत इन्द्र जजैं हम आजजी॥१॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ-
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

शुकलकार्तिकतेरसकौं जये, त्रिजगजीव सु आनंदकौं लये।
नगर स्वर्गसमान कुसंबिका, जजतु हैं परिसंजुत अंबिका॥२॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ-
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

शुकलतेरसकातिक भावनी, तप धरयो वनषष्टम पावनी।
करत आतमध्यान धुरंधरो, जजत हैं हम पाप सबै हरो॥३॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां निःक्रमणकल्याणकप्राप्ताय श्री
पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

शुकलपूनमचैत सुहावनी, परमकेवल सो दिन पावनी।
सुरसुरेश नरेश जजैं तहां, हम जजैं पदपंकजको इहां॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं०

असित फागुन चौथ सुजानियो, सकलकर्ममहा अरि हानियो।
गिरिसमेदथकी शिवको गये, हम जजैं पद ध्यानविषैं लये॥५॥

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्ण चतुर्थीदिने मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभ
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

जयमाला

जय पद्म जिनेशा शिवसद्मेशा, पादपद्म जजि पद्मेशा।
जय भवतमभंजन मुनिमनकंजन,—रंजनको दिवसाधेशा॥१॥

छंद रूप चौपाई।

जय जय जिन भविजनहितकारी, जय जय जिन भवसागरतारी।
जय जय समवसरन धनधारी, जय जय वीतराग हितकारी ॥
जय तुम साततत्त्वविधि भाख्यौ, जय जय नवपदार्थलखि आख्यौ।
जय षटद्रव्य पंच जुतकाया, जय सबभेदसहित दरशाया ॥३॥
जय गुनथान जीव परमानो, जय पहिले अनंत जिय जानो।
जय दूजे सासादनमाहीं, तेरहकोड़ि जीवथित आंहीं। ॥४॥
जय तीजे मिश्रित गुणथाने, जीव सु बावनकोडि प्रमाने।
जय चौथे अविरत गुन जीवा, चारअधिक शतकोड़ि सदीवा ॥५॥
जय जिय देशवरतमे शेषा, कोड़ि सातसौ हैं थिति वेशा।
जय प्रमत्त षटशून्य दोय वसु, पांच तीन नव पांच जीव लसु ॥६॥
जय जय अपरमत्तगुन कोरं, लच्छ छानवै सहस बहोर।
निन्यानवे एकशत तीना, ऐते मुनि तित रहहिं प्रवीना ॥७॥
जय जय अष्टम में दुइ धारा, आठशतक सत्तानों सारा।
उपशममे दुइसों निन्यानों, छपकमाहिं तसु दूने जानों ॥८॥
जय इतने इतने हितकारी, नवें दशे जुगश्रेणी धारी।
जय ग्यारें उपशममगगामी, दुइसै निन्यानों अघ आमी ॥९॥
जय जय छीनमोह गुनथानों, मुनि शतपांचअधिक अट्टानों।
जय जय तेरहमें अरहंता, जुग नभ पन वसु नव वसुतंता ॥१०॥
एते राजतु हैं चतुरानन, हम वंदैं पद स्तुतिकरि आनन।
हैं अजोग गुनमें जे देवा, पनमो ठानों करौं सुसेवा ॥११॥
तिन थिति अइउऋलृ लघु भाषन, करि थिति फिर शिवआनंदपावन
ए उत्कृष्ट भाष गुणथानी, तथा जघन मध्यम हैं मानी ॥

तीनों लोकसदनके वासी, निज गुनपरजभेदमय राशी ।
तथा और द्रव्यनके जेते, गुनपरजाय भेद हैं तेते ॥१३॥
तीनों काल तने जु अनंता, सो तुम जानत जुगपत संता ।
सोई दिव्यवचनके द्वारे, दे उपदेश भविक उद्धारे ॥१४॥
फेरि अचलथलवासा कीनों, गुन अनन्त निजआनंद भीनों ।
चरमदेहतें किंचित् ऊनों, नरआकृति तिति हैं नित गूनो ॥१५॥
जय जय सिद्धदेव हितकारी, बार बार यह अरज हमारी ।
मोकों दुखसागरतें काढो, "वृन्दावन" जांचतु है ठाडो ॥१६॥

छंद घत्ता ।

जय जय जिनचंदा पद्मानंदा, परमसुमतिपदमाधारी ।
जय जनहितकारी दया विचारी, जय जय जिनवर अधिकारी
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

छंद रोड़क ।

जजत पद्मपदपद्म सद्म ताके सुपद्म अत,
होत वृद्ध सुतमित्र सकल आनंदकंद शत ॥
लहत स्वर्गपदराज, तहांतें चय इत आई,
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई ॥८॥

इत्याशीर्वाद.

इति श्रीपद्मप्रभजिनपूजा समाप्त ।

पंच बालयती तीर्थङ्कर पूजा

दोहा—श्री जिन पंच अनंगजित, वासुपूज्य मल्लि नेम ॥
पारसनाथ सुवीर अति, पूजूं चित धरि प्रेम ॥

ओं ह्रीं पंच बालयति तीर्थङ्कराः अत्रावतरतावतरत संवौषट आह्वाननं । अत्र तिष्ठत-२ ठः ठ, स्थापनं । अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्, सन्निधिकरणं ॥

अथाष्टक—शुचि शीतल सुरभि सुनीर, लायो भर झारी ।
दुख जामन मरन गहीर, याको परिहारी ॥
श्री वासुपूज्य मल्लि नेम, पारस वीर अती ।
नमुं मन वच तन धरि प्रेम पांचों बालयती ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ महावीर स्वामी, श्री पंच बालयती तीर्थङ्करेभ्य नम जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चैदन केशर करपूर जल में घसि आनो ।
भव तप भंजन सुखपूर, तुमको मैं जानो ॥ श्री वासु० ॥ चन्दनं ॥
वर अक्षत विमल बनाय, सुवरण थाल भरे ।
बहु देश देश के लाय, तुमरी भेट धरे ॥ श्री वासु० ॥ अक्षत ॥
यह काम सुभट अति सूर, मनमें क्षोभ करो ।
मैं लायो सुमन हजूर, याको वेग हरो ॥ श्री वासु० ॥ पुष्पं० ॥
पट्रस पूरित नैवेद्य, रसना सुखकारी ।
द्वय करम वेदनी छेद, आनन्द हैं भारी ॥ श्री वासु० ॥ नैवेद्यं ॥
धरि दीपक जगमग ज्योति, तुम चरनन आगे ।
मम मोह तिमिर क्षय होत, आतम गुण जागे ॥ श्री वासु० ॥ दीपं ॥

ले दशविधि धूप अनूप, खेऊ, गन्ध मयी ।
दशबन्ध दहन जिन भूप, तुमहो कर्म जयी ॥ श्रीवासु० ॥ धूपं ॥
पिस्ता अरु दाख बदाम, श्रीफल लेय घने ।
तुम चरन जजूं गुण धाम द्योसुख मोक्ष तने ॥ श्रीवासु० ॥फलं॥
सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं ।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं ॥ श्रीवासु० ॥ अर्घ्यं ॥

अथ जयमाला

दोहा—बाल ब्रह्मचारी भये, पांचों श्री जिनराज ।
तिनकी अब जयमालिका कहूँ स्वपर हितकाज ॥

जय जय जय जय श्रीवासुपूज तुम सम जगमें नहीं और दूज ।
तुम महा लक्ष सुर लोक छार, जब गर्भ मात मांही पधार ॥ २ ॥
षोडश स्वपने देखे सुमात, बल अवधि जान तुम जन्म तात ।
अति हर्षधार दम्पति सुजान, बहु दान दियो जाचक जनान ॥३॥
छप्पन कुमारिका कियो आन तुम मात सेव बहु भक्ति ठान ।
छः मास अगाऊ गर्भ आय, धनिपति सुवरन नगरी रचाय ॥४॥
तुम,मात महल आगन मझार, तिहुँकाल रतन धारा अपार ।
वरषाये षट् नव मास सार, धनिजिन पुरपन नयनन निहार ॥५॥
जय मल्लिनाथ देवन सुदेव, शतइन्द्र करत तुम चरन सेव ।
तुम जन्मत ही त्रयज्ञान धार, आनन्द भयो तिहुँ जग अपार ॥६॥
तबही ले चहु विधि देव सङ्ग, सौधर्म इन्द्र आयो उमङ्ग ।
सजि गज ले तुम हरि गोद आप, बन पांडुक शिला ऊपर सुथाप ॥७
क्षीरोदधि तैं बहु देव जाय, भरि जल घट हाथों हाथ लाय ।
करि न्हवन वस्त्र भूषण सजाय, दे ताल नृत्य तांडव कराय ॥८॥

पुनि हर्ष धार हिरदै अपार, सब निर्जर रव जय जय उचार।
तिस अवसर आनन्द हे जिनेश, हम कहिवे समरथ नांहि लेश ॥९॥
जय जादोपति श्री नेमनाथ, हम नमत सदा जुग जोर हाथ।
तुम व्याह समय पशुवन पुकार, सुन तुरत छुडाये दयाधार ॥१०॥
कर कंकण अरु सिर मौर बन्द, सो तोड भये छिनमें स्वछन्द।
तबही लौकांतिक देव आय, वैराग्य वर्द्धनी थुति कराय ॥११॥
तत्क्षण शिविका लायो सुरेन्द्र, आरूढ़ भये तापर जिनेन्द्र।
सो शिविका निज कन्धन उठाय, सुरनर खग मिल तपवन ठेराय॥
कचलौच वस्त्र भूषण उतार, भये जती नगन मुद्रा सुधार।
हरि केश लेय रतनन पिटार, सो क्षीर उदधि मांहीं पधार ॥१२॥
जय पारसनाथ अनाथ नाथ, सुर असुर नमत तुम चरण माथ।
जुग नाग जरत कीनी सुरक्ष, यह बात सकल जग में प्रत्यक्ष ॥१४॥
तुम सुर धनु सम लखि जग असार, तप तपत भये तन ममत डार
शठ कमठ कियो उपसर्ग आय, तुम मन सुमेरु नहिं डगमगाय ॥१५॥
तुम शुक्ल ध्यान गहि खड्ग हाथ, अरि चार घातिया कर सुघात।
उपजायो केवल ज्ञान भानु, आयो कुवेर हरि वच प्रमाण ॥१६॥
की समोसरण रचना विचित्र, तहां खिरत भई वाणी पवित्र।
मुनि सुरनर खग तिर्यंच आय, सुन निजनिज भाषा बोध पाय ॥१७॥

निर्वाण महोत्सव कियो भूर, ले मलयागिर चन्दन कपूर ।
बहु द्रव्य सुगंधित सरस सार, तामे श्री जिनवर वपु पधार ॥२०॥
निज अगनि कुमारिन मुकुट नाय, तिहं रतननि शुचि ज्वाला उठाय ।
तिस सिर मांही दीनी लगाय सो भस्म सबन मस्तक चढ़ाय ॥२१॥
अति हर्ष थकी रचि दीपमाल, शुभ रतन मई दश दिश उजाल ।
पुनि गीत नृत्य बाजे बजाय, गुण गाय ध्याय सुरपति सिधाय ॥२२॥
सो नाथ अबै जगमें प्रत्यक्ष, नित होत दीपमाला सुलक्ष ।
हे जिन तुम गुण महिमा अपार, वसु सम्यग्ज्ञानादिक सुसार ॥२३॥
तुम ज्ञानमांहि तिहुँलोकदर्व, प्रतिबिम्बित हैं चर अचर सर्व ।
लहि आतम अनुभव परम ऋद्धि भये वीतराग जगमें प्रसिद्ध ॥२४॥
ह्वै बालयति तुम सबन एम, अचिरज शिवकांता वरी केम ।
तुम परम शांतिमुद्रा सुधार, किम अष्टकर्म रिपु को प्रहार ॥२५॥
हम करत विनती बार बार, कर जोर स्व मस्तक धार धार ।
तुम भये भवोदधि पार पार, मोको सुवेग ही तार तार ॥२६॥
अरदास दास ये पूर पूर, वसु कर्म शैल चक चूर चूर ।
दुख सहन करन अब शक्ति नांहि, गहि चरण शरण कीजे निवाह ॥२७

चौ०—पांचों बाल यति तीर्थेश, तिनकी यह जयमाला विशेष ।
मन वच काय त्रियोग सम्हार, जे गावत पावत भवपार ॥२८

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयती तीर्थङ्कर जिनेन्द्राय नम पूर्णार्घ्यं ।

दोहा—ब्रह्मचर्य सों नेह धरि, रचियो पूजन ठाठ ।
पांचों बाल यतीन को, कीजे नित प्रति पाठ ॥२६॥

❀ इत्याशीर्वाद ❀

पंच परमेष्ठी की पूजा

दोहा— मंगल मय मंगल करन, पंच परम पदसार।
अशरण को येही शरण, उत्तम लोक मंझार ॥ १ ॥
चव अरिष्ट को नष्ट कर, अनंत चतुष्टय पाय।
परमइष्ट, अरिहन्त पद, वन्दौ शीष नवाय ॥२॥
वसुविधिहरि, वसु भू बसे, वसुगुणयुत शिव ईश।
नमूं नाम वसु अंग तिन, दायक पद जगदीश ॥ ३ ॥
आप धरै आचार शुभ, पर अचरावन हार।
सो आचारज गुणनधर, नमूं शीस कर धार ॥ ४ ॥
आप अंग पूरव पढ़ैं, शिषिन पढावत सोय।
ते उवझाय सु नाय सिर, नमूं देव धी मोय ॥ ५ ॥
मोक्ष मार्ग साधन उदित, धरैं मूल गुण साध।
मैं शिव साधन साधु पद, नमूं हरन भव वाध ॥ ६ ॥
इहि विधि पंचनि प्रणमिकर, रचूं पूज सुखकार।
तातैं प्रथमहिं पढनि को, समुचय जजिहूँ मार ॥ ७ ॥पु०

अथ पंच परमेष्ठी सामान्य पूजा

अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐ ह्रीं श्री अरिहंतादि सर्व साधु पर्यन्त पंच परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ.ठः । ॐ ह्रीं श्री अरहंतादि सर्वसाधु पर्यन्त पंचपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् । सन्निधिकरणं ।

॥ अथाष्टकम्—गीता छन्द ॥

वर मिष्ट स्वच्छ सुगंध शीतल, सुर सरित जल लाइये ।
भरि कनक झारी धारि देते, जन्म मृत्यु नशाइये ॥
अरिहंत सिद्ध आचार्य, अध्यापक सुपद सब साधही ।
पूजूं सदा मन वचन तन तैं, हरो मो भव वाधही ॥

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत सिद्धाचाय उपाध्याय सर्व साधुभ्यः जन्म जरा मृत्यु विनाशाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

मलय मांहि मिलाय केशर, घसों चन्दन बावना ।
भृङ्गार भर करि चरण पूजन, भव आताप नसावना ॥अरि०॥चंदन
अक्षत अखंडित सुरभि श्वेत हि, लेत भर करि थाल ही ।
जे जजैं भविजन भाव सेती, अक्षयपद पावै सही ॥अरि०॥अक्षतं
स्वर्ण रूप्य मई मनोहर, विविध पुष्प मिलाइये ।
भरि कनक थाल सु पूजि हैं, भविस्मर बान नशाइये ॥अरि०॥पुष्पं
बहु मिष्ट मोदक सुष्ट फैनी, आदि बहु पकवान ही ।
भरि थाल प्रभु पद जजैं विधितैं, नसैं क्षुत् दुख नाश ही ।अरि०।नैवे
मणि स्वर्ण आदि उद्योत कारण, दीप बहुविधि लीजिये ।
तम मोह पटल विध्वंसने, जुग पाद पूजन कीजिये ॥अरि०॥दीपं०
कपूर अगर सुगन्ध चंदन, कनक धूपायन भरैं ।
भवि करहि पूजा भाव सेती, अष्ट कर्म सबै जरैं ॥ अरि० ॥ धूपं०

बादाम श्रीफल लौंग खारिक, दाख पुंगी आदि ही।
भरि थाल भविजन पूजि करतें, मोक्ष फल पावै सही ॥अरि०॥फल
जल गंध अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फलो गही।
करि अर्घ पूजैं पंचपद को, लहैं शिव सुख वृन्द ही ॥अरि०॥अर्घ्यं

जयमाला

दोहा—नमूं प्रथम अरिहंत सिद्ध, आचारज उवझाय।
साधु सकल विनती करूं, मन वच तन सिरनाय ॥१॥

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

चव घाति चूर अरिहंत नाम, पायो च्युत दोष न सु गुण धाम।
तिनमें षट चालजु मुख्य थाय, तिनमे दसगुण जनमत उपाय ॥२
जय केवल ज्ञान उद्योत ठान, उपजे दश गुण को कहि बखान।
चौदह गुण देवनि करत होय, तिनकी महिमा वरणे सु कोय ॥३॥
वर अष्ट प्रातिहारज संयुक्त, चामर छत्रादिक नाम युक्त।
केवल दर्शन वरज्ञान पाय, सुख वीर्य अनन्त चतुष्ट पाय ॥४॥
ये कहिवे के गुण हैं छियार, गुण अनंत लसै तिनको न पार।
तातैं करिहों कर अर्घ लेय, मोहि तारि २ अरिहंत देव ॥ ५ ॥
वसुविधिहरि वसु भू वसे सिद्ध, वसुगुण आदिक लहि अतिसिद्ध।
पूजूं मन वच तन अर्घ ल्याय, मोकूं तुम थानक में वसाय ॥६॥
वर द्वादश तप दस धर्म भेव, षट् आवश्यक पंचाचार सेव।
त्रय गुप्ति सुगुन छत्तीस पाय, सब संघ [illegible] गुरु सूरिराय ॥ ७ ॥
बहु जीवन [illegible] को मग बताय, शिव संपति दीनी सु [illegible]।
पूजूं मन वच तन अर्घ लेय, मोकूं [illegible] ॥ ८ ॥

धर ग्यारह अंगरु चवद पूर्व, पढ़ि उपाध्याय पद लयौ पूर्व।
तिनके पद पूजत अर्घ लाय, सब भ्रम नाशन निज ज्ञान पाय ॥९॥
गुण मूल अष्ट विंशति अनूप, धरि हैं सब साधु सु शिव सरुप।
व्रत पंचसमिति पणइन्द्र रोध, षट् आवस भूमि सुशयन सोध ॥१०
तजि स्नान वसन कच लौंच ठानि, लघु भोजन ठाढ़े करत आन।
दंतौन त्याग ये अष्ट बीस, धरि साध शिव-तिन नमत शीस ॥११॥
करि अष्ट द्रव्य को अर्घ लेय, सब साधुन की करि हौं जु सेव।
मैं मन वच तन तैं शीश नाय, नमि हौं मो शिव मग को बताय ॥१२
जल थल रन बन मग विकट मांहि, ये पंच परम गुरु शरण थांहि।
डायन प्रेतादि उपद्रव मांहि, इन पंच परम बिन को सहाय ॥१३॥
बहु जीव जपत नवकार येव, रिद्ध सिद्ध लहि संकट हरेव।
सो कथन पुरान पुरान मांहि, हम ताकी महिमा का कहांहि ॥१४॥

घत्ता—ये पंच अराधै भव दुख बाधे, शिव संपति सहजै वरई।
मैं मन वच गाऊं शीश नवाऊं मो अविचल थानहि धरई ॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठी जिनेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं।

सोरठा—विघन विनाशनहार, मंगलकारी लोकमें।
सो तुमको भी सार, पंच सकल मंगल करै ॥

इत्याशीर्वाद.।

श्रीपार्श्वनाथ पूजा।

गीता छन्द।

वर स्वर्ग आनतको विहाय, सुमात वामा सुत भये।
अश्वसेनके सुत पार्श्व जिनवर, चरन जिनके सुर नये॥
नवहाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसैं।
थापूं तुम्हें जिन आय तिष्ठो, करम मेरे सब नसैं॥१॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अथाष्टक—नाराच छन्द

क्षीरसोमके समान अंबुसार लाइये,
हेमपात्र धारकैं सु आपको चढ़ाइये।
पार्श्वनाथदेव सेव आपकी करूं सदा,
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

चंदनादि केशरादि स्वच्छ गन्ध लीजिये।
आप चर्न चर्च मोहताप को हनीजिये॥पार्श्व०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं०।

फेन चंदके समान अक्षतान लाइकैं।
चर्ण के समीप सार पुञ्जको रचाइकैं॥पार्श्व०॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं० ।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइकैं ।
धार चर्ण के समीप कामको नसाइकैं ।।पार्श्व०।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं० ।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने ।
आप चर्ण चर्चते क्षुधादि रोगको हनै ।।पार्श्व०।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं० ।

लाय रत्नदीपको सनेहपूरके भरूं ।
वातिका कपूर वारि मोह ध्वांतकूं हरूं ।।पार्श्व०।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं० ।

धूपगन्ध लेयकैं सु अग्निसंग जारिये ।
तास धूप के सुसंग अष्ट कर्म वारिये ।।पार्श्व०।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं० ।

खारिकादि चिरभटादि रत्नथाल में भरूं ।
हर्षधारिकैं जजूं सुमोक्ष सुक्खको वरूं ।।पार्श्व०।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं० ।

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चरु लीजिये ।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीजिये ।।पार्श्व०।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं०

पंच कल्याणक।

शुभआनत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये।
वैशाखतनी दुतिकारी, हम पूजैं विघ्न निवारी ॥१॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं०।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशि पौष विख्याता।
श्यामा तन अद्भुत राजै, रवि कोटिक तेज सु लाजै ॥२॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अ०

कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावन भाई।
अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ॥३॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंडलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अ०

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवनको सुख दीना ॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थीदिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं०।

सित सातैं सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष कल्याना ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं०।

जयमाला।

पारसनाथ जिनेन्द्रतने वच, पौनभखी जरतें सुन पाये।
कर्यो सरधान लह्यो पद आन भयो पद्मावति शेष कहाये॥

नाम प्रताप टरै संताप सु भव्यन को शिवशरम दिखाये ।
हे विश्वसेनके नंद भले, गुणगावत हैं तुमरे हरखाये ॥ १ ॥

दोहा—केकी-कंठ समान छबि, वपु उतंग नव हाथ ।
लक्षण उरग निहारपग, बंदों पारसनाथ ॥ २ ॥

पद्धरि छन्द ।

रची नगरी छहमास अगार, बने चहुंगोपुर शोभ अपार ।
सुकोटतनी रचना छवि देत कगूरनपैं लहकै बहुकेत ॥ ३ ॥
बनारस की रचना जु अपार, करी बहुभांति धनेश तैयार ।
तहाँ विश्वसेन नरेंद्र उदार, करै सुख वाम सु दे पटनार ॥ ४ ॥
तज्यो तुम आनत नाम विमान, भये तिनके वर नंदन आन ।
तबै सुरइन्द्र नियोगन आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सु जाय ॥५॥
पिता घर सौंपि गये निज धाम, कुवेर करै वसु जाम सु काम ।
बढै जिन दोज मयंक समान, रमै बहु बालक निर्जर आन ॥६॥
भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत्त महासुखकार ।
पिता जब आनकरी अरदास, करौ तुम ब्याह वरै मम आस ॥७॥
करी तब नाहिं रहे जगचन्द, किये तुमकाम कषाय जु मंद ।
चढे गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सु तरंग ॥ ८ ॥
लख्यो इक रंक करैं तप घोर, चहुंदिशि अगनि वलै अति जोर ।
कही जिननाथ अरे सुन भ्रात, करै बहु जीवन की मत घात ॥९॥
भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव ।
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मऋषीसुर आय ॥१०॥
तबही सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिवका निज कंध मनोग ।
कियो वन मांहि निवास जिनंद, वरे व्रत चारित आनंद कंद ॥११॥

गहे तहं अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पयदान महा-सुखकार, भई पनवृष्टि तहां तिहिं बार ॥१२॥
गये तब काननमाहिं दयाल, धर्यो तुम योग सबहिं अघटाल।
तबै वह धूम सुकेत अयान, भयो कमठाचरको सुर आन ॥ १३ ॥
करै नभगौन लखे तुम धीर, जु पूरव वैर विचार गहीर।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर ॥१४॥
रह्यो दसहूं दिशि मे तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सुरुण्डन के बिन मुंड दिखाय, पडै जल मूसलधार अथाय ॥१५॥
तबै पदमावति कंथ धनिंद, चले जग आय तहां जिनचंद।
भग्यो तब रंग सु देखत हाल, लह्यो त्रय केवल ज्ञान विशाल ॥१६॥
दियो उपदेश महा हितकार, सुभव्यन बोधि समेद पधार।
सुवर्णभद्र जहँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिव नारि लही वसुरिद्ध ॥१ ॥
जजूं तुम चरन दुहूँ कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर।
कहै 'बखतार रत्न' बनाय, जिनेश हमे भवपार लगाय ॥ १८ ॥

घत्ता।

जय पारस देवं सुरकृत सेवं वंदत चरण सुनागपति।
करुणा के धारी परउपकारी, शिवसुखकारी कर्महती ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल।

जो पूजैं मनलाय भव्य पारस प्रभु नितही,
ताके दुःख सब जांय भीत व्यापै नहिं कितही।
सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे,
अनुक्रमसों शिव लहै 'रतन' इमि कहै पुकारे। २०॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलि)

अतिशय क्षेत्र श्रीपद्मपुरा मे विराजित

श्री पद्म प्रभु पूजा

श्रीधर नन्दन पद्म प्रभ, वीतराग जिननाथ ।
विघन हरण मंगल करन, नमों जोरि जुग हाथ ॥
जन्म महोत्सव के लिए, मिलकर सब सुर राज ।
आये कौशाम्बी नगर, पद पूजा के काज ॥
पद्मपुरी मे पद्म प्रभ, प्रगटे प्रतिमा रूप ।
परम दिगम्बर शांतिमय, छबि साकार अनूप ॥
हम सब मिल करके यहां, प्रभु पूजा के काज ॥
आह्वानन करते सुखद, कृपा करो महाराज ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट ।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ । स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

[अष्टक]

क्षीरोदधि उज्ज्वल नीर, प्रासुक- गन्ध भरा ।
कंचन झारी मे लेय, दीनों धार धरा ॥
बाडा के पद्म जिनेश, मंगल रूप सही ।
काटो सब क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि० ।

चन्दन केशर करपूर, मिश्रित गन्ध धरों ।
शीतलता के हित देव, भव आताप हरो ॥बाड़ा के०॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनं नि० ।

ले तंदुल अमल अखंड, थाली पूर्ण भरो।
अक्षय पद पावन हेतु, हे प्रभु पाप हरो ।।बाडा के०।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ।

ले कमल केतकी वेल, पुष्प धरूं आगे।
प्रभु सुनिये हमरी टेर, काम कला भागे ।। बाडा के०।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि० ।

नैवेद्य तुरत बनवाय, सुन्दर थाल साज।
मम क्षुधा रोग नश जाय, गाऊं वाद्य बजा ।।बाडा के०।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

हो जगमग २ ज्योति, सुन्दर अनियारी।
ले दीपक श्री जिनचन्द, मोह नशे भारी ।। बाडा के० ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि० ।

ले अगर कपूर सुगंध, चन्दन गन्ध महा।
खेवत हों प्रभु ढिग आज, आठों कर्म दहा ।। बाडा के० ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ।

श्रीफल बादाम सुलेय, केला आदि धरे।
फल पाऊं शिव पद नाथ, अरपूं मोद भरे ।। बाडा के० ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला।
मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊं सिद्ध शिला ।। बाडा के० ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि० ।

अर्घ्य चरणों का

चरण कमल श्री पद्म के, वन्दों मन वच काय ।

अर्घ्य चढाऊं भाव से, कर्म नष्ट हो जाय ॥ बाडा के० ॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्र के चरणों मे अर्घ्यं नि ।

भूमि मे विराजमान का अर्घ्य —

धरती मे श्री पद्म की पद्मासन आकार ।

परम दिगम्बर शान्तिमय, प्रतिमा भव्य अपार ॥

सौम्य शक्ति अति कान्तिमय, निर्विकार साकार ।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूजों विविध प्रकार ॥बाडा०॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय भूमि में स्थित समय अर्घ्यं नि० ।

[पंच कल्याणक]

[हर एक दोहा के बाद नीचे लिखी आचरी पढ़ना चाहिये]

श्री पदम प्रभ जिनराज जी, मोहे राखो हो शरना ॥

दोहा—माघ कृष्ण छट में 'प्रभो, आये गर्भ मझार ।

मात सुसीमा का जनम, किया सफल करतार ॥श्री पदम०

ॐ ह्रीं माघ कृष्णा षष्ठी दिने गर्भ मगल प्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक सुद तेरस तिथी, प्रभो लिया अवतार ।

देवों ने पूजा करी, हुआ मंगलाचार ॥ श्री पदम० ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्ममगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी, तृणवत बंधन तोड ।

तप धारो भगवान ने, मोह कर्म को मोड़ ॥ श्री पद्म० ॥

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा, उपज्यो केवलज्ञान ।
भवसागर से पार हो, दिया भव्य जन ज्ञान ॥श्री पद्म०॥

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन बदी सुचौथ को, मोक्ष गये भगवान ।
इन्द्र आय पूजा करी, मैं पूजों धर ध्यान ॥ श्री पद्म० ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुण कृष्णा चतुर्थी दिने मोक्षमंगलप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

दोहा —चौवीसों अतिशय सहित, बाड़ा के भगवान ।
जयमाला श्री पद्म की, गाऊं सुखद महान ॥

पद्धरी छन्द

जय पद्मनाथ परमात्म देव । जिनकी करते सुर चरण सेव ॥
जय पदम २ प्रभु तन रसाल । जय २ करते मुनिमन विशाल ॥
कोशाम्बी से तुम जन्म लीन । बाडा में बहु अतिशय करीन ॥
इक जाट पुत्र ने जमीं खोद । पाया तुमको होकर समोद ॥
सुनकर हर्षित हो भविक वृन्द । आकर पूजा की दुख निकन्द ॥
करते दुखियों का दुःख दूर । हो नष्ट प्रेत बाधा जरूर ॥
डाकिन शाकिन सब होय चूर्ण । अन्धे हो जाते नेत्र पूर्ण ॥

श्रीपाल सेठ अंजन सुचोर। तारे तुमने उनको विभोर॥
अरु नकुल सर्प सीता समेत। तारे तुमने निज भक्ति हेत॥
हे संकट मोचन भक्त पाल। हमको भी तारो गुण विशाल॥
विनती करता हूँ बार बार। होवे मेरा दुख क्षार क्षार॥
मीना गूजर सब जाट जैन। आकर पूजैं कर तृप्त नैन॥
मन वच तन से पूजे जो कोय। पावे वे नर शिवसुख जु सोय॥
ऐसी महिमा तेरी दयाल। अब हम पर भी होवो कृपाल॥७॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा विधि जानूं नहीं, नहिं जानुं आह्वान।
भूल चूक सब माफ कर, दया करो भगवान॥

इत्याशीर्वादः।

चांदनगांव महावीर स्वामी पूजा

(स्व० श्री पूरणमलजी शमशाबाद कृत)

छन्द

श्री वीर सन्मति गांव चांदन मे प्रकट भये आय कर।
जिनको वचन मन कायसे मैं पूजहूँ सिरनाय कर॥
हुये दयामय नार नर लखि, शान्ति रूपी वेष को।
तुम ज्ञान रूपी भानु से कीना सुशोभित देश को॥
सुर इन्द्र विद्याधर मुनि, नरपति नवावें शीश को।
हम नमत हैं नित चावसों महावीर प्रभु जगदीश को॥

ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र

तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री चांदनगांव महावीर स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ॥

अथाष्टक

क्षीरोदधि से भरि नीर, कंचन के कलशा।
तुम चरणनि देत चढ़ाय, आवागमन नशा॥
चांदनपुर के महावीर, तेरी छवि प्यारी।
प्रभु भव आताप निवार तुम पद बलिहारी॥ १॥
ॐ ह्रीं श्री चांदनगाव महावीर स्वामिने नमः जलं॥
मलयागिर और कपूर, केशर ले हरषों।
प्रभु भव आताप मिटाय, तुम चरणनि परसों॥ चांदन०॥चंदनं
तंदुल उज्ज्वल अति धोय, थारी में लाऊं।
तुम सन्मुख पुञ्ज चढाय, अक्षय पद पाऊं॥ चांदन०॥ अक्षतं
बेला केतकी गुलाब, चंपा कमल लऊं।
दं काम बाण करि नाश, तुमरे चरण दऊं॥चांदन०॥नैवेद्यम्॥
फेनी गुंजा पकवान, मोदक ले लीजे।
करि क्षुधा रोग निरवार, तुम सन्मुख कीजे॥चांदन०॥ धूपं॥
घृत मे कर्पूर मिलाय, दीपक मे जारों।
करि मोह तिमिर को दूर, तुम सन्मुख वारों॥चांदन०॥दीपं॥
दश विधि ले धूप बनाय, तामे गन्ध मिला।
तुम सन्मुख खेऊं आय, आठों कर्म जला॥चांदन०॥ धूपं॥
पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफल लौंग सजा।
श्री वर्द्धमान पद राज, पाऊँ मोक्ष पदा॥ चांदन०॥ फलं॥

जल गन्ध सु अक्षत पुष्प, चरुवर जोर करों ।
ले दीप धूप फल मेलि आगे अर्घ करों ॥ चांदन० ॥ अर्घ्यं ॥

चरणों का अर्घ

जहां काम धेनु नित आय, दुग्ध जु बरसावै ।
तुम चरननि दरशन होत, आकुलता जावै ॥
जहां छतरी बनी विशाल, अतिशय बहु भारी ।
हम पूजत मन वच काय, तजि संशय सारी ॥ चांदन० ॥
ओं ह्रीं टोंक में स्थापित श्री महावीर चरणेभ्य: नम: अर्घ्यं०

टीले में विराजमान का अर्घ

टीले के अन्दर आप सोहैं पद्मासन,
जहां चतुरनिकाई देव, आवें जिन शासन ।
नित पूजन करत तुम्हार कर मे ले झारी,
हम हूं वसुद्रव्य बनाय, पूजें भरि थारी ॥चांदन०॥
ॐ ह्री चांदनपुर महावीर जिनेन्द्राय टीले मे विराजमान समय का अर्घ्यं० ।

पंचकल्याणक

कुण्डलपुर नगर मझार त्रिशला उर आये ।
सुदि छठि असाढ सुर आइ, रतनजु वरसाये । चांदन०
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अषाढ सुदि छठ गर्भमंगलप्राप्ताय०
जनमत अनहद भई घोर, सब जग सुख छाई ।
तेरस शुक्ला की चैत्र सुरगिरि ले जाई ॥ चांदन०

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय चैत्र सुदि तेरस जन्म मंगलप्राप्ताय०

कृष्णा मंगसिर दश जानि, लौकान्तिक आये।

करि केश लोंच तत्काल, झट बन को धाये ॥चांदन०॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मंगसिर बुदि दशमी तपमंगलप्राप्ताय०

बैशाख सुदी दश माहि घाती क्षय करना।

पायो तुम केवल ज्ञान, इन्द्रन की रचना ॥चांदन०॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय वैसाखसुदी दशमी केवलज्ञानप्राप्ताय अर्घ्यं

कार्तिक जु अमावस कृष्ण, पावापुर ठाही।

भयो तीन लोक में हर्ष पहुँचे शिव माहीं ॥चांदन०॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनाय कार्तिक बदी अमावस निर्वाण प्राप्ताय अर्घ्यं

जयमाला

मंगलमय तुम हो सदा, श्री सन्मति सुखदाय।

चांदनपुर महावीर की, कहूँ आरती गाय॥

जय जय चांदनपुर महावीर, तुम भक्त जनों की हरत पीर।

जड़ चेतन जग में लखत आप, दई द्वादशांग वानी अलाप ॥१॥

अब पंचम काल मंझार आय, चांदनपुर अतिशय दई दिखाय।

टीले के अन्दर बैठ वीर, नित हरा गाय का आप क्षीर ॥ २ ॥

ग्वाला को फिर आगाह कीन, जब दर्शन अपना आप दीन।

मूरत देखी अति ही अनूप, है नग्न दिगम्बर शान्ति रूप ॥४॥

तहां श्रावक जन बहु गये आय, कीन्हे दर्शन मन वचन काय।

है चिन्ह शेर का ठीक जान, निश्चय है ये श्री वर्द्धमान ॥५॥

सब देशन के श्रावक जु आय, जिन भवन अनूपम दियो बनाय।

फिर शुद्ध दई वेदी कराय, तुरतहि गजरथ सु लियो सजाय ॥५॥
ये देख ग्वाल मनमें अधीर, मम गृह को त्यागो नहीं वीर।
तेरे दर्शन बिन तजूं प्राण, सुन मेरी हे कृपा निधान॥ ६॥
कीने रथ में प्रभु विराजमान, रथ हुआ अचल गिरि के समान।
तब तरह तरह के किये जोर, बहुतक रथ गाडी दिये तोड़॥ ७॥
निशि मांहि स्वप्न सचिवहिं दिखात, रथचले ग्वाल का लगत हाथ।
भोरहि झट चरण दियो बनाय, संतोष दियो ग्वालहिं कराय॥८॥
करि जय जय प्रभु की करि टेर, रथ चल्यो फेर लागि न देर।
बहु नृत्य करत बाजे बजाइ, स्थापन कीने तहं भवन जाइ॥९॥
इक दिन मंत्री को लगा दोष, धरि तोप कही नृप खाई रोष।
तुमको जब ध्याया वहां वीर, गोला से झट बच गया वजीर॥१०॥
मंत्री नृप चांदन गांव आय, दर्शन करि पूजा की बनाय।
करि तीन शिखर मंदिर रचाय, कंचन कलशा दीने धराय॥११॥
यह हुक्म कियो जयपुर नरेश, सालाना मेला हो हमेश।
अब जुडन लगे बहु नर औ नार, तिथि चैत्र सुदी पूनों मंझार॥१२
मीना गूजर आवें विचित्र, सब वर्ण जुडे करि मन पवित्र॥
बहु निरत करत गावे सिहाय, कोई कोई दीपक रह्या चढ़ाय॥१३॥
केई जय २ शब्द करे गम्भीर, जय जय जय हे श्री महावीर।
जैनी जन पूजा रचत आन, केई छत्र चमर के करत दान॥१४॥
जिसकी जो मन इच्छा करंत, मन वांछित फल पावैं तुरंत।
जो करे वंदना एक बार, सुख पुत्र संपदा हो अपार॥१५॥
जो तुम चरणों में रक्खें प्रीत, ताको जग में को सके जीत।

है शुद्ध यहां का पवन नीर, जहां अति विचित्र सरिता गंभीर ॥१६॥
पूरनमल पूजा रची सार, हो भूल लेउ सज्जन सुधार।
मेरा है शमशाबाद ग्राम, त्रिकाल करूं प्रभु को प्रणाम ॥१७॥
श्री वर्धमान तुम गुणनिधान उपमा न बनी तुम चरनन की।
है चाह यही नित बनी रहे अभिलाष तुम्हारे दरशन की॥

दोहा—अष्ट कर्म के दहन को पूजा रची विशाल।
पढ़े सुने जो भाव से छूटे जग जंजाल ॥अर्घ्यं॥
संवत् जिन चौबीस सौ, है बासठ की साल।
एकादश कार्तिक बदी, पूजा रची सम्हाल॥

॥ इति आशीर्वादः ॥

रक्षाबंधन पूजा

(श्री विष्णुकुमार पूजा)

अडिल्ल छन्द

विष्णुकुमार महामुनि की ऋद्धि भई। नाम विक्रिया तास सकल आनन्द ठई॥ सो मुनि आये हथनापुर के बीच मे। मुनि बचाये रक्षाकर बन बीचमे॥१॥ तहां भयो आनन्द सर्व जीवन घनो। जिन चिन्तामणि रत्न एक पायो मनो॥ सब पुर जै जै कार शब्द उचरत भये। मुनिको देय आहार आप करते भये॥३॥

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ प्रतिस्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टक-चाल-सोलह कारण पूजा की ।

गंगाजल सम उज्ज्वल नीर, पूजों विष्णुकुमार सुधीर ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान ।
दयानिध होय जय जगवन्धु दयानिध होय ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार मुनिभ्य· नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं

मलयागिर चदन शुभसार, पूजों श्रीगुरुवर निर्धार ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान ॥ दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमारमुनिभ्य· नमः भव आतापविनाशनाय च० ।

श्वेत अखंडित अक्षत लाय, पूजों श्रीमुनिवर के पाय ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान । दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्य नम अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं ।

कमल केतकी पुष्प चढ़ाय, मेटो कामबाण दुखदाय ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ।
सप्त सैकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान । दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्य· नमः कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं ।

लाड्डू फेनी घेवर लाय, सब मोदक मुनि चरण चढ़ाय ।
दयानिध होय, जय जगवन्धु दयानिध होय ॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान । दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्य नमः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं ।

घृत कपूर का दीपक जोय, मोहतिमिर सब जावै खोय।
दयानिध होय, जय जगबन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णुभगवान। दया० ॥
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमार मुनिभ्यः नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं।
अगर कपूर सुधूप बनाय, जारे अष्ट कर्म दुखदाय।
दयानिध होय, जय जगबन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करि विष्णुभगवान। दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्य· नमः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं।
लौंग लायची श्रीफल सार, पूजों श्रीमुनि सुख दातार।
दयानिध होय, जय जगबन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान। दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्य' नम. मोक्षफलप्राप्तये फलं।
जलफल आठों द्रव्य संजोय, श्रीमुनिवर पद पूजों दोय।
दयानिध होय, जय जयबन्धु दयानिध होय॥
सप्त सैंकड़ा मुनिवर जान, रक्षा करी विष्णु भगवान। दया० ॥
ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार मुनिभ्य. नमः अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं।

अथ जयमाला

दोहा श्रावण सुदी सु पूर्णिमा, मुनि रक्षा दिन जान।
रक्षक विष्णुकुमार मुनि, तिन जयमाल बखान॥

चाल—छन्द भुजङ्गप्रयात

श्री विष्णु देवा करूं चरण सेवा।
हरो जनकी बाधा सुनो टेर देवा॥

गजपुर पधारे महा सुक्खकारी।

धरो रूप वामन सु मनमे विचारी ॥२॥

गये पास वलि के हुवा वो प्रसन्ना।

जो मांगो सो पावो दिया ये वचन्ना ॥

मुनि तीन डग मांगि धरनी सु तापै।

दई ताने ततच्छिन सु नहिं ढील थापै ॥३॥

कर विक्रिया सु मुनि काया वढाई।

जगह सारी लेली सु डग दो के मांही ॥

धरी तीसरी डग वली पीठ मांही।

सु मांगी छमा तव वली ने वनाई ॥४॥

जलकी सुवृष्टि करी सुक्खकारी।

सरव अग्नि छण मे भई भस्म सारी ॥

टरे सवे उपसर्ग श्री विष्णुजी से।

भई जै जैकार सरव नभ्र ही से ॥५॥

चौपाई।

फिर राजा के हुक्म प्रमान, रच्छा वन्धन बंधी सुजान।
मुनिवर घर घर कियो विहार, श्रावक जन तिन दियो अहार।
जाघर मुनि नहिं आये कोय, निज दरवाजे चित्र सुलोय।
स्थापन कर तिन दियो अहार फिर सव भोजन कियो सम्हार ॥
तवसे नाम सलूना सार, जैन धर्म का है त्यौंहार ॥
शुद्ध क्रिया कर मानो जीव, जासों धर्म वढै सु अतीव ॥
धर्म्म पदारथ जगमें सार, धर्म्म विना झूंठो संसार।

सावन सुदि पूनम जब होय; यह दो पूजन कीजै लोय ॥
सब भाइनको दो समझाय, रक्षाबन्धन कथा सुनाय ।
मुनिको निज घर करो अकार, मुनि समान तिन देउ अहार ॥
सबके रक्षा बन्धन बांध, जैन मुनिन की रक्षा जान ।
इस विधि से मानो त्योहार, नाम सलूना है संसार ॥

घत्ता—मुनि दीनदयाला, सब दुख टाला, आनन्द माला सुखकारी
'रघु सुत' नित वंदे, आनन्द कंदै, सुक्ख करन्दे हितकारी ॥
इति श्री विष्णुकुमार मुनिभ्य' नम- महा अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा—विष्णुकुमार मुनिके चरण, जो पूजे धर प्रीत ।
'रघु सुत' पावै स्वर्गपद, लहैं पुन्य नवनीत ॥
इत्याशीर्वाद ।

श्रीवर्द्धमानजिन पूजा

मत्तगयंद ।

श्रीमतवीर हरें भवपीर, भरें सुखसीर अनाकुलताई,
केहरिअंक अरीकरदङ्क, नये हरिपंकतिमौलि सुआई ।
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्तिसमेत हिये हरपाई,
हे करुणाधनधारक देव, इहां अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ: ठ: ।
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट्

छंद अष्टपदी

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचनभृङ्ग भरों,
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करो।
श्रीवीर महा अतिवीर सन्मतिनायक हो,
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं०॥ ॥

मलयागिरचंदन सार, केशरसंग घसों।
प्रभु भव आताप, निवार पूजत हिय हुलसो ॥श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदन० ॥२॥

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुञ्ज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी ॥श्री०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्० ॥३॥

सुरतरुके सुमन समेत, सुमन सुमन प्यारे।
सो मनमथभंजनहेत, पूजों पद थारे ॥श्री०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरि ॥श्री०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

तमखंडित मंडितनेह, दीपक जोवत हों।
तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं०

हरिचन्दन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा।
तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ॥श्री०॥७॥
ॐ ह्रीं महावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि०
ऋतुफल कल वर्जित लाय, कंचनथार भरा।
शिव फलहित हे जिनराय, तुमढिग भेंट धरा ॥श्री०॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति।
जलफल वसु सजि हिमथार, तनमनमोद धरों।
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों ॥श्री०॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि०।

पंचकल्याणक

मोहि राखो हो शरना, श्री वर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो०
गरभ साढ़सित छट्ट लियो थिति त्रिशला उर अघहरना।
सुर सुरपति तित सेव करौ नित, मैं पूजों भवतरना ।मोहि०॥
ॐ ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घ्यं।
जनम चैतसित तेरसके दिन, कुण्डलपुर कनवरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजों भवहरना ।मोहि०।२॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं।
मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना।
नृपकुमार घर पारन कीनो, मैं पूजों तुम चरना ।मोहि०।३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीषकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्री महावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुक्लदशैं वैशाखदिवस अरि, घाति चतुक क्षयकरना ।
केवल लहि भवि भवसरतारे, जजौं चरन सुख भरना ।मोहि०

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणप्राप्ताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं परना ।
गनफनिवृन्द जजैं तित बहु विधि, मैं पूजौं भवहरना ।मोहि०

ॐ ह्रीं कातिककृष्णामावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहा-वीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला ।

छंद हरिगीता २८ मात्रा ।

गनधर असनिधर, चक्रधर, हलधर गदाधर वरवदा,
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा ।
दुखहरन आनंदभरन तारन, तरन चरन रसाल है,
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भालकी जयमाल है ॥१॥

घत्तानंद ।

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन चंदवरं ।
भवतापनिकंदन तनकनमंदन, रहितसपंदन-नयनधरं ॥२॥

छंद तोटक ।

जय केवलभानु कलासदनं, भविकोकविकाशनकंजवनं ।
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञानदृगांवर चूरकरं ॥१॥

गर्भादिकमंगलमंडित हो, दुखदारिको नित खंडित हो।
जगमाहिं तुम्हीं सतपंडित हो, तुम ही भवभावविहंडित हो ॥२॥
हरिवं सरोजनको रवि हो, बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो।
लहि केवल धर्मप्रकाश कियौ, अबलौं सोई मारग राजति-यौं ॥
पुनि आप तनै गुनमाहिं सही, सुर मग्न रहें जितने सबही।
तिनकी वनिता गुन गावत हैं, लय माननिसौं मनभावत हैं ॥
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्तिविषै पग येम धरी।
झननं झननं झननं झनन, सुर लेत तहां तननं तननं ॥५॥
घननं घननं घनघंट बजै, द्रमदं द्रमदं मिरदंग सजै।
गगनांगनगर्भता सुगता, ततता ततता अतता वितता ॥६॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है, सुरताल रसालजु छाजत है।
सननं सननं सननं नभमें, इकरूप अनेक जु धारि भमें ॥७॥
कइ नारि सु वीन बजावति हैं, तुमरो जस उज्ज्वल गावति हैं।
करतालविषैं करताल धरैं, सुरताल विशाल जुनाद करैं ॥८॥
इन आदि अनेक उछाहभरी, सुर भक्ति करे प्रभुजी तुमरी।
तुमही जगजीवनिके पितु हो, तुमही विनकारनतैं हितु हो ॥
तुमही सब विघ्नविनाशन हो, तुमही निज आनंदभासन हो।
तुमही चितचिंतितदायक हो, जगमाहिं तुम्हीं सब लायक हो ॥
तुमरे पनमंगलमाहिं सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सब ही।
हमको तुमरी शरनागत है, तुमरे गुनमें मन पागत है ॥११॥
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जबलौं वसु कर्म नहीं नसिये।
तबलौं तुम ध्यान हिये वरतो, तबलौं श्रुतचिंतन चित्त रतो ॥

तबलों व्रत चारित चाहतु हों, तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों।
तबलों सतसंगति नित्त रहो, तबलों मन संजम चित्त गहो॥
जबलों नहिं नाश करो अरिकों, शिवनारि वरों समता धरिको।
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हम जाचतु हैं इतनी सुनजी॥

घत्तानंद।

श्रीवीरजिनेशा नमितसुरेशा, नागनरेशा भगतिभरा।
'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, वांछित पावै शर्मवरा॥१५॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

श्रीसनमतिके जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीति।
वृन्दावन सो चतुरनर, लहै मुक्तिनवनीत॥१६॥
इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।
इति श्रीवर्द्धमानजिनपूजा समाप्त।

समुच्चय अर्घ

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी, तुममें जितने गुन हैं तितनी।
कहि कौन सकै मुखसों सब ही, तिहिं पूजत हौं गहि अर्घ यही॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्य चतुर्विंशतिजिनेभ्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवित्त

ऋषभदेवकों आदि अन्त श्रीवर्धमान जिनवर सुखकार,
तिनके चरनकमलको पूजैं, जो प्राणी गुनमाल उच्चार।

ताके पुत्र मित्र धन जोबन, सुखसमाजगुन मिलै अपार,
सुरपदभोगभोगि चक्री ह्वै, अनुक्रम लहै मोक्षपद सार ॥२॥

इत्याशीर्वादः ।

महा अर्घ ।

प्रभुजी अष्ट द्रव्यजु ल्यायो भावसों,
प्रभू थांका हरष ? गुण गांऊं महाराज ।
यो मन हरख्यो प्रभू थांकी पूजाजी के कारणे ।
प्रभूजी थांकी तो पूजा भवि जीव जो करै,
ताका अशुभ कर्म कटिजाय महाराज ।यो मन०॥ १ ॥
प्रभूजी इन्द्र धरणेंद्रजी सब मिलि गाय,
प्रभु का गुणांको पार न पायो महाराज ।यो मन०॥२॥
प्रभूजी थे छोजी अनन्ताजी गुणवान,
थांने तो सुमरयां संकट परिहरे महाराज ।यो मन०॥३॥
प्रभूजी थे छोजी साहिब तीनों लोकका ।
जिनराज मैं छूं निपट अज्ञानी महाराज ।यो मन०॥४॥
प्रभूजी थांका तो रूपको निरखन कारणे ।
सुरपति रचिया छै नयन हजार महाराज ।यो मन०॥५॥
प्रभूजी नरक निगोद मे भव भव मैं रुल्यो ।
जिनराज सहिया छै दुःख अपार महाराज ।यो मन०॥६॥
प्रभूजी अब तो शरणोजी थाको मैं लियो ।
किस विध कर पार लगावो महाराज ।यो मन०॥७॥

प्रभूजी म्हारो तो मनड़ो थामे घुल रह्यो ।

ज्यों चकरी बिच रेशमकी डोरी महाराज ।।यो मन०।।८।।

प्रभूजी तीन लोक मे हैं जिन बिम्ब ।

कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय पूजस्यां महाराज ।यो मन०। ९।।

प्रभूजी जल चदन अक्षत पुष्प नैवेद ।

दीप धूप फल अर्घ चढाऊं महाराज ।

जिनचैत्यालय महाराज, सब चैत्यालय जिनराज ।यो मन०।।१०।।

प्रभूजी अष्ट द्रव्य जु लायो बनाय ।

पूजा रचाऊं श्रीभगवान की महाराज । यो मन० ॥ ११ ॥

अरिहंता छियाला सिद्धट्ठा सूर छत्तीसा ।

उवज्झाया पणवीसा साहूणं होंति अडवीसा ।।

(निम्नलिखित अर्घ बोलते समय जलधारा छोडते रहना चाहिए)

ॐ ह्रीं श्री अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु पञ्चपरमेष्ठिभ्यो नम, दर्शन विशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तम क्षमादि-दशलक्षणधर्मेभ्यो नम., सम्यक्दर्शन-सम्यक्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नम., भूत भविष्यत वर्तमानकालचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नम., सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अतिशयक्षेत्रेभ्यो नम. अद्य संवत् मध्ये मासे पक्षे तिथौ समये पूजायां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये जलाद्यर्घ्यं महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भाव पूजा वन्दनास्तवसमेतं कायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(यहा कायोत्सर्गपूर्वक ९ बार णमोकार मंत्रका जाप्य करना चाहिए।)

कई महानुभाव उक्त महा अर्घ के स्थान पर पचपरमेष्ठी जयमाला बोलते हैं वह निम्न प्रकार है। दोनों में कोई एक बोलना ही पर्याप्त है।

अथ पञ्चपरमेष्ठिजयमाला प्राकृत

मणुय-णाइन्द-सुरधरियछत्तत्तया। पचकल्लाण-सुक्खावली पत्तया॥ दसणं णाणझाणं अणंतंवलं। ते जिणा दितु अम्हं वरं मगलं॥ १॥ जेहिं झाणग्गिवाणेहि अइथट्टयं। जम्मजरमरणणयरत्तयं दट्ठयं॥ जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं। ते महं दितु सिद्धा वरं णाणयं॥ २॥ पचहाचार-पंचग्गिसंसाहया। वारसंगाइ सुयजलहि अवगाहया॥ मोक्खलच्छी महति मह ते मया। सूरिणो दितु मोक्ख गया संगया॥ ३॥ घोरसंसार-भीमाडवी-काणणे। तिक्ख-वियराल-णह-पाव पंचाणणे॥ णट्ठ मग्गाण-जीवाण पहदेसया। वंदिमो ते उवज्झाय अम्हे सया॥ ४॥ उग्गतवयरण करणेहिं झीणं गया। धम्मवरझाणसुक्के झाणं गया। णिब्भरं तवसिरीये समालिंगया। साहओ ते महामोक्ख पहमग्गया॥ ५॥ एणथोतेण जो पंचगुरु वंदए। गुरुयसंसारघणवेल्लिसो छिंदए, लहिय सो सिद्धसुक्खाइ वर माणणं कुणई कम्मिधणं पुञ्जपज्जालणं।

अरुहासिद्धाइरिया, उवझाथा साधुपञ्चपरमेट्ठी।
एयाण णमुक्कारो, भवे भवे मम सुह दितु॥ १।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-पंचपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छामि भंते पंचगुरुभत्ति-काओसग्गोकओ। तस्सा लोचेओ अट्ठ-महापाडिहेरसंजुत्ताणं अरहंताणं। अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढ-लोयमिच्छथम्मि पयट्ठियाणं सिद्धाणं। अट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं आइरियाणं। आयारादिसुदणाणोवदेसयाण उवज्झायाणं। तिरयण-गुणपालणरयाणं सव्वासाहूणं। णिच्चकालं अच्चेमि पूजेमि वंदामि णमस्सामि। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वेहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं॥

इत्याशीर्वाद (पुष्प क्षेपण करना)

शांतिपाठ भाषा

शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये।

चौपाई १६ मात्रा

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै॥१॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थङ्कर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांति विधायक॥२॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥३॥
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगतपूज्य पूजौं शिरनाई।
परमशांति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघको॥४॥

वसन्ततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।

सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप ।
मेरे लिए करहिं शांति सदा अनूप ॥५॥

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों औ यतीनायकों को ।
राजाप्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजै सुखी हे जिन शांति को दे ॥६॥

स्रग्धरा छन्द

होवै सारी प्रजाको सुख बलयुतहो धर्मधारी नरेशा ।
होवे वर्षा समै पै तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा ॥
होवै चौरी न जारी सुसमय वर्तै हो न दुष्काल भारी ।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको सदा जो सौख्यकारी ॥७॥

दोहा—घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शांति करो सब जगतमे, वृषभादिक जिनराज ॥

अथेष्ट प्रार्थना

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका ।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूं सभीका ॥
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं ।
तोलौं सेऊ चरण जिनके, मोक्ष जोलौं न पाऊं ॥

आर्य्या

तव पद मेरे हियमे, मम हिय तेरे पुनीत चरणों मे ।
तबलो लीन रहौं प्रभु, जबलौं पाया न मुक्तिपद मैंने ॥ १० ॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाउ भवदुखसे।
हेगजबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी ॥१२॥

(परिपुष्पाजलि क्षेपण)

यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।

भाषा स्तुति

तुम तरणतारण भवनिवारण, भविकमन आनन्दनो।
श्री नाभिनन्दन जगतवंदन, आदिनाथ निरंजनो ॥ १ ॥
तुम आदिनाथ अनादि सेऊं, सेय पदपूजा करूं।
कैलाश गिरिपर ऋषभ जिनवर, पदकमल हिरदै धरूं ॥ २ ॥
तुम अजितनाथ अजीत जीते, अष्टकर्म महाबली।
यह विरद सुनकर शरण आयो, कृपा कीज्यो नाथजी ॥ ३ ॥
तुम चन्द्रवदन सु चन्द्रलछन चन्द्रपुरि परमेश्वरो।
महासेननन्दन, जगतवंदन चंद्रनाथ जिनेश्वरो ॥ ४ ॥
तुम शांति पांचकल्याण पूजों, शुद्धमनवचकाय जू।
दुर्भिक्ष चोरी पापनाशन, विघन जाय पलाय जू ॥ ५ ॥
तुम बालब्रह्म विवेकसागर, भव्यकमल विकाशनो।
श्रीनेमिनाथ पवित्र दिनकर, पापतिमिर विनाशनो ॥ ६ ॥
जिन तजो राजुल राजकन्या कामसेन्या वश करी।
चारित्र रथ चढ़ि भये दुलह, जाय शिवरमणी वरी ॥ ७ ॥

कंदर्प दर्प सुसर्पलच्छन, कमठ शठ निर्मद कियो।
अश्वसेननंदन जगतवंदन, सकलसंघ मंगल कियो ॥ ८ ॥

जिनधरी बालकपणे दीक्षा, कमठ मान विदारकै।
श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रके पद, मैं नमों शिरधारकैं ॥ ९ ॥

तुम कर्मघाता मोक्षदाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थनन्दन जगतवंदन महावीर जिनेश्वरो ॥ १० ॥

छत्र तीन सोहै सुरनर मोहै, वीनती अब धारिये।
करजोड़ि सेवक बीनवै, प्रभु आवागमन निवारिये ॥ ११ ॥

अब होउ भव भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहों।
करजोड यो वरदान मांगूं, मोक्षफल जावत लहों ॥ १२ ॥

जो एक मांही एक राजै, एक माहि अनेकनो।
इक अनेककी नहीं संख्या, नमूं सिद्ध निरंजनो ॥ १३ ॥

ॐ चौपाई ॐ

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, वहुविधि भक्ति करौं मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊ तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ॥ १४ ॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
वार वार मैं विनती करूं, तुम सेयां भवसागर तरूं ॥ १५ ॥
नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव ॥ १६ ॥
जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय।
जिन पूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावैं निर्वाण ॥ १७ ॥
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश ॥ १८ ॥

दोहा—सुख देना दुख मेटना यही तुम्हारी बान।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान॥ १६ ॥
पूजन करते देवकी, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावैं मोक्ष निदान॥
जैसी महिमा तुमविषै, और धरै नहीं कोय।
जो सूरज मे ज्योति है, नहिं तारागण सोय॥ २० ॥
नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर परकाशतैं, अंधकार विनशाय॥ २१ ॥
बहुत प्रशसा क्या करूं, मैं प्रभु बहुत अजान।
पूजाविधि जानूं नहीं, शरण राखि भगवान॥ २२ ॥
इस अपार संसार मे, शरण नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तुम पद भक्त को, भक्ति सहाई होय॥ २४ ॥

इति भाषास्तुति।

विसर्जन

दोहा—बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तें परमगुरु, सो सब पूरन होय॥ १ ॥
पूजनविधि जानौ नहीं, नहिं जानौ आह्वान।
और विसर्जन हूं नहीं, क्षमा करो भगवान॥ २ ॥
मंत्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥ ३ ॥
आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान।
ते सब जावहु कृपाकर, अपने अपने स्थान॥ ४ ॥

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेना

आशिका जिनराज का, लीजै शीश चढ़ाय।
स्वर्गों में संदेह नहीं, नरकों में नहीं जाय॥

इति पूजाविधिः

शांतिपाठ संस्कृत

दोधकवृत्तं।

शांतिजिनं शशिनिर्म्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रं।
अष्टशतार्च्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रं॥१॥
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्रनरेन्द्रगणैश्च।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि॥२॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मंडलतेजः॥३॥
तं जगदर्च्चितशांतिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं पठते परमां च॥४॥

येऽभ्यर्चिता मुकुटकुण्डलहाररत्नैः,
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः।
ते मे जिना प्रवरवंशजगत्प्रदीपा-
तीर्थंकराः सततशान्तिकरा भवन्तु॥५॥

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः॥

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशं ।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥७॥

प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वंतु जगतः शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥८॥

अथेष्टप्रार्थना ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्य्यैः,
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनं ।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे,
सम्पद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥६॥

आर्य्यावृत्तं ।

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनं ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥१०॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेव य मज्झवि दुक्खक्खयं दिंतु ॥११॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य ।
मम होउ जगतबंधव तव जिणवर चरणसरणेण ॥ १२ ॥
त्रिभुवनगुरो ! जिनेश्वर ! परमानंदैककारण ! कुरुष्व ।
मयि किंकरेऽत्र करुणां यथा तथा जायते मुक्तिः ॥१३॥
निर्विण्णोहं नितरामर्हन् ! बहुदुःखया भवस्थित्या ।
अपुनर्भवाय भवहर ! कुरु करुणामत्र मयि दीने ॥ १४ ॥

उद्धर मां पतितमतो विषमाद् भवकूपत: कृपां कृत्वा ।
अर्हन्नलमुद्धरणे त्वमसीति पुनः पुनर्वच्मि ॥ १५ ॥
त्वं कारुणिक: स्वामी त्वमेव शरणं जिनेश ! तेनाहं ।
मोहरिपुदलितमानं फूत्करणं तव पुर: कुर्वे ॥ १६ ॥
ग्रामपतेरपि करुणा, परेण केनाप्युपद्रुते पुंसि ।
जगतां प्रभो ! न किं तव, जिन मयि खलु कर्मभि: प्रहते ॥१७॥
अपहर मम जन्म दयां कृत्वेत्येकवचसि वक्तव्ये ।
तेनातिदग्ध इति मे देव ! बभूव प्रलापित्वं ॥ १८ ॥
तव जिनवर ! चरणाब्जयुगं करुणामृतशीतलं यावत् ।
संसारतापतप्त: करोमि हृदि तावदेव सुखी ॥ १ ॥
जगदेकशरण ! भगवन् नौमि श्रीपद्मनंदितगुणौघ ।
किं बहुना कुरु करुणामत्र जने शरणमापन्ने ॥ २० ॥
(परिपुष्पाजलिं क्षिपेत्)

अथ विसर्जनं ।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ॥ १ ॥
आह्वाननं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ ३ ॥
आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमं ।
ते मयाभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यांतु यथास्थिति ॥४॥
॥ इति नित्य पूजा समाप्त ॥

निर्वाणकाण्ड (गाथा)

अट्ठावयम्मि उसहो चम्पाए वासुपुज्जजिणाहो। उज्जते णेमि जिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो ॥१॥ वीसं तु जिणवरिंदा अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा। सम्मेद गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥२॥ वरदत्तो य वरंगो सायरदत्तो य तारवरणयरे। आहुट्ठय-कोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥३॥ णेमिसामि-पज्जुण्णो सबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो। बाहत्तरिकोड़ीओ उज्जन्ते सत्तसया सिद्धा। ॥४॥ रामसुवा विण्णि जणा लाडणरिंदाण पंचकोडीओ। पावागिर-वर सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥५॥ पंडुसुआ तिण्णिजणा दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ। सत्तञ्जयगिरि सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥६॥ संते जे बलभद्दा जदुवणरिंदाण अट्ठकोडिओ। गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥७॥ रामहणू सुग्गीओ गवयगवाक्खो य णीलमहणीलो। णवणवदीकोडिओ तुङ्गीगिरिणिव्वुदे वंदे ॥८॥णंगाणंगकुमारा कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया। सुवण्णगिरिवर सिहरे णिव्वाणगया णमो तेसि ॥९॥ दहमुहरायस्स सुवा कोडीपञ्चद्धमुणिवरा सहिया। रेवाउहयतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१०॥ रेवाणइए तीरे पश्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे। दो चक्की दह कप्पे आहुट्ठयकोडिणिव्वुदे वंदे ॥११॥ वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मिचूलगिरिसिहरे। इंदजीदकुम्भयणो णिव्वाणगया णमो तेसिं ।१२। पावागिरिवरसिहरे सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो। चलणाणईतडग्गे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१३॥फलहोडीवरगामे पश्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे। गुरुदत्ताइमुणिंदा णिव्वाणगया

णमो तेसिं ॥१४॥ णायकुमारमुणिंदो वालमहावालि चेव अज्झेया। अट्ठावयगिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१५॥ अच्चलपुरवरणयरे ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे। आहुट्ठयकोडीओ णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१६॥ वंसत्थलवरणियरे पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे। कुजदेसभूसणमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१७॥ जसरहरायस्स सुआ पचसयाइं कलिंगदेसम्मि। कोडिसिलाकोडिमुणी णिव्वाणगया णमो तेसिं ॥१८॥ पासस्स समवसरणे सहिया वरदत्तमुणिवरा पंच। रिस्सिंदे गिरिसिहरे णिव्वाणगया णमो तेसिं।१९।

[अतिशयक्षेत्रकाण्डम्]

पासं तह अहिणंदण णायद्दहि मंगलाउरे वंदे। अस्सारम्भे पट्टणि मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि ॥१॥ वाहुवलि तह वंदमि पोयणपुरहत्थिणापुरे वंदे। शांति कुंथुव अरिहो वाणारसिए सुपासपासं च ॥२॥ महुराए अहिछित्ते वीरं पासं तहेव वंदामि। जंवुमुणिंदो वंदे णिव्वुइपत्तोवि जंवुवणगहणे ॥३॥ पंचकल्याणठाणइं जाणवि संजायमज्झलोयम्मि। मणवयकायसुद्धी सव्वं सिरसा णमस्सामि ॥४॥ अग्गलदेवं वंदमि वरणयरे णिवडकुंडली वंदे। पासं सिवपुरि वंदमि होलागिरिसंखदेवम्मि ॥५॥ गोमटदेवं वंदमि पंचसयं धणुहदेहउच्चंतं। देवा कुणंति वुट्ठी केसरिकुसुमाण तस्स उवरिम्मि ॥६॥ णिव्वाणठाण जाणिवि अइसयठाणाणि अइसए सहिया। संजादमिच्चलोए सव्वे सिरसा णमस्सामि ॥७॥ जो जण पढई तियालं णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए। भुंजदि णरसुर सुक्खं पच्छा सो लहई णिव्वाणं ॥८॥ इति

॥ समाप्त ॥